सुविचार

दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है, केवल उतना ही याद रखती है जितने से उसका स्वार्थ सधता है, बाकी को फेंक कर आगे बढ़ जाती है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी

Daily

THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi • Tuesday, 07 November 2023 • Year : 01 • Issue : 289 • Ranchi Edition • Page : 12 • Price : 3 • www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

मैं शाहरुख की बहुत बड़ी फैन हूं

12

SHARE

सेंसेक्स	:	64,958.69
निफ्टी	:	19,411.75

SARAFA

सोना	:	5,795
चांदी	:	78.02

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में दस लाख का गबन, एफआईआर

RANCHI : झारखंड राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में ऑडिट के दौरान दस लाख रुपये गबन का मामला सोमवार को प्रकाश में आया है। इस संबंध में रांची कार्यालय के निरीक्षक दीनदयाल शर्मा ने सुखदेवनगर थाना में लिखित शिकायत दर्ज करायी है। मामले में विभूति कुमार राय को आरोपित बनाया गया है। विभूति राय जमशेदपुर शाखा में प्रबंधक के तौर पर पदस्थापित हैं। यह राशि का गबन चार बार में हुआ हैं। जानकारी के अनुसार तीन अलग-अलग तारीख में पैसों की निकासी की गई है। पहली बार में पांच लाख रुपये की निकासी 19 अप्रैल 2014 को हुई थी। दूसरी राशि दो लाख रुपये 29 अप्रैल 2014 को और तीसरी राशि तीन लाख 28 अप्रैल 2014 को निकाली गई है। सुखदेवनगर थाना की पुलिस ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

छह पीएलएफआई उग्रवादी हथियार के साथ गिरफ्तार

KHUNTI : खूंटी पुलिस ने प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के 6 सदस्यों को हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। वे सभी हथियार से लैस होकर किसी अप्रिय घटना को अंजाम देने और क्षेत्र में अपना दबदबा बनाने के लिए रनिया के खखसी टोली होते हुए बनई सदान टोली तरफ आ रहे थे। गिरफ्तार उग्रवादियों के पास से 315 बोर का एक देसी राइफल, 315 बोर का दो जिंदा कारतूस, 5 ।56` की 35 जिंदा गोली, पीएलएफआई संगठन का 17 प्रचार, पीएलएफआई के चार चंदा रसीद, नगद 10500, चार मोबाइल, दो मोटरसाइकिल और राइफल में मैगजीन रखने वाला एक पाउच बरामद किया है।

गहलोत का स्वभाव पानी जैसा : खड़गे

JODHPUR : कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि प्रदेश की सरकार ने पांच साल में बहुत काम किए है। हर तरह से मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का स्वभाव पानी जैसा है। पानी में जैसा रंग मिलाओ वैसा हो जाता है। गहलोत ने राजस्थान को चहुंमुखी विकास की तरफ से ले जाने का काम किया है। वे आपके जोधपुर के हैं और जोधपुर के विकास में इनका बहुत योगदान है।

दिल्ली-एनसीआर में भूकंप के तेज झटके

NEW DELHI : दिल्ली-एनसीआर में सोमवार को शाम 4 बजकर 16 मिनट पर फिर एक बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। इसका केंद्र नेपाल में था। रिक्टर स्केल पर तीव्रता 5.6 आंकी गई। इसकी वजह से उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भी झटके महसूस किए गए। 4 नवंबर को भी रात 11:32 बजे नेपाल में 6.4 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें 157 लोगों की मौत हुई थी।

नगाड़ा बजाकर अबुआ वीर दिशोम योजना का सीएम ने किया आगाज

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि झारखंड देश के अन्य राज्यों से बिल्कुल अलग है। झारखंड की संस्कृति, सभ्यता और शिष्टाचार की अलग पहचान है। यहां के आदिवासी समुदाय के लोग काफी सहनशील और सरल हैं। राज्य में वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अंतर्गत जो कार्य बहुत पहले होना चाहिए था कहीं न कहीं उस कार्य की शुरूआत आज हमारी सरकार 'अबुआ बीर अबुआ दिशोम अभियान' के रूप में कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वन अधिकार अधिनियम के लागू हुए लगभग 17 से 18 वर्ष होने जा रहे हैं, परंतु झारखंड में इस अधिनियम की गंभीरता को दृष्टिगत नहीं रखा गया बल्कि पूरी तरह नजरअंदाज किया गया था।

मुख्यमंत्री सोमवार को झारखंड मंत्रालय स्थित सभागार में अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा आयोजित वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अंतर्गत 'अबुआ बीर अबुआ दिशोम अभियान' के शुभारम्भ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री सोरेन ने कहा कि कई चुनौतियों के बाद आज हमारी सरकार वन अधिकार अधिनियम को एक मुहिम के तौर पर शुरू कर रही है। इस मुहिम के तहत राज्य के वन क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासी एवं मूलवासी समुदायों के बीच बड़ी संख्या में वनपट्टा का वितरण करने का लक्ष्य रखा गया है।

हेमंत के बोल

- झारखंड की संस्कृति, सभ्यता और शिष्टाचार की है अलग पहचान
- कई चुनौतियों के बाद वन अधिकार अधिनियम एक मुहिम के तौर पर किया शुरू
- आदिवासी एवं मूलवासी समुदायों के बीच बड़ी संख्या में वनपट्टा का किया जाएगा वितरण

झारखंड में 80 प्रतिशत लोग खेती-बाड़ी पर निर्भर

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में 30 प्रतिशत वन क्षेत्र हैं। जंगल-झाड़ मिलाकर देखें तो यह 50 प्रतिशत के करीब है। यहां के 80 प्रतिशत लोग खेती-बाड़ीपर ही निर्भर हैं। मात्र 20 प्रतिशत लोग जो बाजार और शहरों में है, बाकी सभी लोग खेती कार्य से ही जीवनयापन करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि दूसरे राज्यों को देखें जहां आदिवासियों की बहुलता कम है लेकिन वहां पर अधिकार के तहत वन पट्टों का वितरण निमित बेहतर कार्य हुआ है। मुझे लगता है कि कोई भी कार्य आप सभी अधिकारी ने अगर आज ठान लिया तो वह पूर्ण नहीं होगा ऐसा हो ही नहीं सकता है। झारखंड अलग हुए इतने वर्ष बाद भी वन अधिकार अधिनियम के प्रावधानों की गंभीरता पर हम लोगों ने ध्यान नहीं दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर हम आज इस मुहिम पर ध्यान नहीं दिए होते तो कुछ वर्षों बाद फॉरेस्ट राइट एक्ट के विषय में चर्चा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि इतने गंभीर विषय को पूर्ण रूपेण ठंढे बस्ते पर डालने का प्रयास किया गया था।

पंजाब में आप विधायक जसवंत सिंह गिरफ्तार

PUJNAB : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक प्रोफेसर जसवंत सिंह गज्जनमाजरा को गिरफ्तार कर लिया है। जिस समय ईडी ने उन्हें अरेस्ट किया, तब वे संगरूर में कार्यकाताओं के साथ बैठक कर रहे थे। वे संगरूर जिले की अमरगढ़ सीट से विधायक हैं। सोमवार को शाम करीब 5.30 बजे ईडी की टीम विधायक का मेडिकल करवाने के लिए सिविल अस्पताल पहुंच गई थी। उनकी गिरफ्तारी 40 करोड़ रुपए के पुराने लेन-देन से जुड़े केस में हुई है। इसी मामले में ईडी ने पिछले साल उनके घर, ऑफिस और अन्य संपत्तियों की जांच की थी। गिरफ्तारी के बाद उन्हें भारी सुरक्षा के बीच एऊके जालंधर ऑफिस लाया गया। यहीं पर ईडी के अधिकारी उनसे पूछताछ कर रहे हैं। उधर, विधायक की गिरफ्तारी की खबर फैलते ही जालंधर में ईडी ऑफिस के बाहर आप कार्यकताओं की भीड़ जुट गई थी।

मिजोरम व छत्तीसगढ़ में आज होगा मतदान

दोनों राज्यों के 60 सीटों पर वोटिंग, 3 दिसंबर को मतगणना

विधानसभा चुनाव

AGENCY NEW DELHI : मिजोरम विधानसभा की सभी 40 सीटों और छत्तीसगढ़ विधानसभा के पहले चरण की 20 सीटों पर मंगलवार को मतदान होगा। चुनाव आयोग ने मतदान की सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। मालूम हो कि पांच राज्यों में चार चरणों में मतदान कराया जा रहा है, जिनके नतीजे 3 दिसंबर को आएंगे। मिजोरम में चुनाव के लिए 1276 पोलिंग मतदान केंद्र बनाए गए हैं। 1531 कंट्रोल यूनिट 1531 बैलट यूनिट और 1659 वीवीपैट मशीन लगाई गई है। यहां सुबह 7 बजे से शाम 4.00 बजे तक वोट डाले जाएंगे। वहीं छत्तीसगढ़ में चुनाव आयोग ने पहले चरण के लिए 5304 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। 6504 सेंट्रल यूनिट, 6965 वीवीपैट और 6504 बैलट यूनिट लगाए गए हैं। छत्तीसगढ़ की 20 विधानसभा सीटों के लिए 223 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं वहीं मिजोरम विधानसभा क्षेत्र में 174 उम्मीदवार मैदान में है।

म्यांमा और बांग्लादेश सीमा सील

मतदान से पहले म्यांमा से लगती 510 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा और बांग्लादेश से लगती 318 किलोमीटर लंबी सीमा को सील कर दिया गया है। इसके अलावा असम के तीन जिलों, मणिपुर के दो और त्रिपुरा के एक जिले से लगीं अंतर-राज्यीय सीमाएं भी बंद कर दी गई हैं। शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित करने के लिए कम से कम 3,000 पुलिस कर्मियों और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के 5,400 कर्मियों को तैनात किया गया है। छत्तीसगढ़ में सुचारू चुनाव के लिए 21,206 मतदान कर्मी और 4204 अतिरिक्त कर्मी तैनात किए गए हैं। दुर्गम एवं संवेदनशील मतदान केंद्रों पर 156 मतदान दलों को हेलीकॉप्टर के माध्यम से मतदान केंद्रों तक पहुंचाया गया है। शेष 5148 मतदान दल बस के माध्यम से आज मतदान केंद्र पहुंच चुके हैं।

मिजोरम में चुनाव के लिए

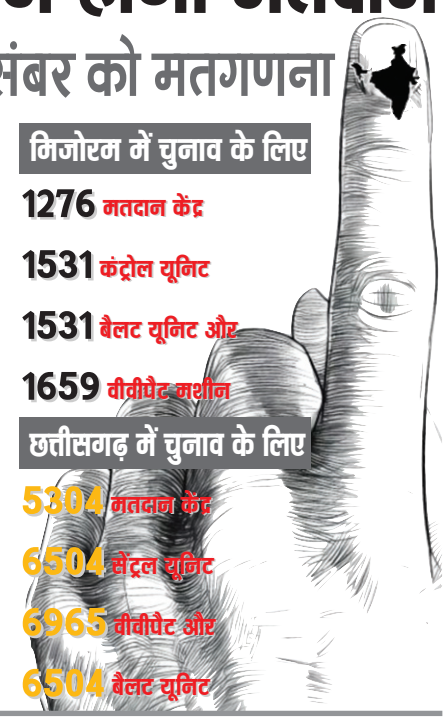

- 1276 मतदान केंद्र
- 1531 कंट्रोल यूनिट
- 1531 बैलट यूनिट और
- 1659 वीवीपैट मशीन

छत्तीसगढ़ में चुनाव के लिए

- 5304 मतदान केंद्र
- 6504 सेंट्रल यूनिट
- 6965 वीवीपैट और
- 6504 बैलट यूनिट

होटवार जेल के सुपरीटेंडेंट, जेलर व बड़ा बाबू को ED ने भेजा समन

पूछताछ के लिए बुलाया, तीनों से अलग-अलग दिन करेगी सवाल

CRIME REPORTER RANCHI : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अफसरों को झूठे मुकदमे में फंसाने की साजिश रचने के आरोप में ईडी ने झारखंड की राजधानी रांची के होटवार जेल (बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार) के अधीक्षक, जेलर और बड़ा बाबू को ईडी की ओर से समन भेजा गया है। इन्हें पूछताछ के लिए जोनल ऑफिस में हाजिर होने को कहा गया है। होटवार जेल के अधीक्षक को 9 नवंबर को पूछताछ के लिए बुलाया गया है। जेलर को 8 नवंबर को ईडी ऑफिस में हाजिर होने को कहा गया है, जबकि बड़ा बाबू को 7 नवंबर को पूछताछ के लिए ईडी ने बुलाया है। ईडी के अफसर के खिलाफ जेल से साजिश रचने की भनक लगते ही पिछले दिनों रांची के होटवार जेल में छापेमारी की थी।

- ईडी के अफसरों को झूठे मुकदमे में फंसाने की साजिश रचने का मामला
- जेल अधीक्षक को 09, जेलर को 08 व बड़ा बाबू से 07 नवंबर को होगी पूछताछ
- सीसीटीवी फुटेज नष्ट करने के मिले सबूत

ईडी ने 3 नवंबर को जेल में की थी छापेमारी

03 नवंबर को ईडी ने प्रेम प्रकाश समेत उससे संबंधित लोगों के ठिकानों पर जेल में छापेमारी की थी। छापेमारी के दौरान प्रेम प्रकाश के अलावा जेल अधिकारियों से संबंधित सीसीटीवी फुटेज ईडी ने जब्त की थी। इसके बाद ईडी ने जेल अधिकारियों को समन भेजा है, ताकि इनसे पूछताछ की जा सके। ईडी की छापेमारी में यह सबूत मिले हैं कि जेल में लगे सीसीटीवी फुटेज को नष्ट किया जा रहा है। इसमें जेल प्रशासन अपने तकनीकी रूप से दक्ष कर्मियों की मदद ले रहा है। ईडी को सूचना है कि जेल प्रशासन इस कोशिश में है कि प्रेम प्रकाश और मनी लांड्रिंग केस में बंद अन्य आरोपितों को जेल में जो सुविधाएं दी जा रहीं हैं, वह ईडी को पता न लग जाए। इसी उद्देश्य से सीसीटीवी फुटेज नष्ट किया जा रहा था।

प्रेम प्रकाश जेल में चला रहा सिंडिकेट

ईडी को यह भी सूचना है कि प्रेम प्रकाश बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार में अपना सिंडिकेट चला रहा है। ईडी को नुकसान पहुंचाने के लिए क्या करना है, क्या नहीं करना है, इसपर योजना बना रहा है। इसके लिए किसे कितने पैसे कहां पहुंचाया जाना है, प्रेम प्रकाश इसकी भी योजना बना रहा है। प्रेम प्रकाश ईडी के विरुद्ध पूरा साजिश रच रहा है और जेल के बाहर के अपने सहयोगियों को दिशा-निर्देश भी दे रहा है। वह ईडी के गवाहों को प्रभावित करने के लिए भी कोशिश में जुटा है। वह गवाहों को यह भी समझा रहा है कि ईडी के अधिकारियों के विरुद्ध एसटी/एससी अधिनियम में केस दर्ज कराकर उन्हें फंसाए। इससे ईडी का केस कमजोर होगा।

पीपी और अमित को दूसरे राज्य की जेल में शिफ्ट करने की तैयारी

अवैध खनन और जमीन घोटाला मामले में रांची के होटवार जेल में बंद प्रेम प्रकाश और उसके सहयोगी अमित अग्रवाल को झारखंड से बाहर शिफ्ट करने की तैयारी चल रही है। ईडी ने इनकी संदिग्ध गतिविधियों को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय को इन्हें दूसरे जेल में शिफ्ट करने के लिए लिखा है। वहीं जेल में छापेमारी के दौरान मिले साक्ष्य को अब जांच एजेंसी पीएमएलए कोर्ट में पेश करेगी। ताकि इस साक्ष्यों के आधार पर इन दोनों को राज्य से बाहर भेजा जा सके। कोर्ट की अनुमति मिलते ही इन्हें दूसरे राज्य की जेल में भेज दिया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक प्रेम प्रकाश और अमित अग्रवाल को गुजरात, असम या महाराष्ट्र की जेल में भेजा जा सकता है।

क्रिमिनल लॉ की जगह तीनों नए बिल को गृह मंत्रालय की संसदीय समिति से मंजूरी

विपक्ष ने समिट किया असहमति पत्र, फैसले के लिए तीन महीने का मांगा समय

AGENCY NEW DELHI : भारतीय दंड संहिता (आईपीसी), दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) और एविडेंस एक्ट की जगह लेने वाले तीन विधेयकों को गृह मंत्रालय की संसदीय कमेटी में एक्सेप्ट कर लिए हैं। इसके साथ ही विपक्षी सदस्यों ने भी अपनी असहमति वाले नोट भी समिट कर दिए हैं। 27 अक्टूबर को हुई बैठक में कमेटी ने ड्राफ्ट रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया था। कुछ विपक्षी सदस्यों ने ड्राफ्ट पढ़ने के लिए और तीन महीने का समय मांगा। कमेटी ने उनकी मांग मान ली थी।

3 विधेयकों से क्या बदलाव होगा

इन विधेयकों से कई धाराएं और प्रावधान अब बदल जाएंगे। आईपीसी में 511 धाराएं हैं, अब 356 बचेंगी। 175 धाराएं बदलेंगी। 8 नई जोड़ी जाएंगी, 22 धाराएं खत्म होंगी। इसी तरह सीआरपीसी में 533 धाराएं बचेंगी। 160 धाराएं बदलेंगी, 9 नई जुड़ेंगी, 9 खत्म होंगी। पूछताछ से ट्रायल तक वीडियो कॉन्फ्रेंस से करने का प्रावधान होगा, जो पहले नहीं था। सबसे बड़ा बदलाव यह है कि अब ट्रायल कोर्ट को हर फैसला अधिकतम 3 साल में देना होगा। देश में 5 करोड़ केस पेंडिंग हैं। इनमें से 4.44 करोड़ केस ट्रायल कोर्ट में हैं। इसी तरह जिला अदालतों में जजों के 25,042 पदों में से 5,850 पद खाली हैं। तीनों बिल जांच के लिए संसदीय कमेटी के पास भेजे गए हैं। इसके बाद ये लोकसभा और राज्यसभा में पास किए जाएंगे।

पीएफआई को झटका बैन को चुनौती देने वाली याचिका खारिज

NEW DELHI : यूएपीए के तहत प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) को सोमवार को सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। शीर्ष न्यायालय ने पीएफआई की याचिका सुनने से इनकार कर दिया है। पीएफआई ने याचिका में बैन को चुनौती देने का काम किया था। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका को सुनने से इनकार करते हुए कहा कि यह मामला पहले हाई कोर्ट में जाना चाहिए था। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र द्वारा पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) पर लगाए गए प्रतिबंध की पुष्टि करने संबंधी गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) न्यायाधिकरण के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी है।

गवर्नर को जनता नहीं चुनती : SC

राज्यपालों को यह समझना चाहिए कि वो चुनी हुई अथॉरिटीज नहीं : सीजेआई

AGENCY NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को इस बात पर नाराजगी जताई कि राज्य सरकारें विधानसभा से पारित बिलों को राज्यपाल से पास कराने के लिए बार-बार सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाती हैं। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा- राज्यपालों को यह समझना चाहिए कि वो चुनी हुई अथॉरिटीज नहीं हैं। राज्य सरकारों के कोर्ट जाने के बाद ही गवर्नर बिल पर कार्रवाई क्यों करते हैं? इसे रोकना होगा। सीजेआई की अगुवाई वाली बेंच पंजाब सरकार की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें गवर्नर बनवारी लाल पुरोहित पर आरोप है कि वे विधानसभा से पारित 7 बिलों को 6 महीने से अटका कर बैठे हैं और उन्हें पास नहीं कर रहे। इससे पहले मुख्यमंत्री भगवंत मान की अगुवाई वाली पंजाब सरकार ने याचिका में मांग की थी कि विधानसभा में पारित बिलों को मंजूरी देने के लिए सुप्रीम कोर्ट गवर्नर को निर्देश दें। सरकार ने यह भी कहा कि इस तरह की संवैधानिक निष्क्रियता की वजह से प्रशासन का कामकाज ठप हो गया है। इससे पहले सीएम भगवंत मान सार्वजनिक रूप से कहते रहे हैं कि गवर्नर इलेक्टेड नहीं बल्कि सिलेक्टिड पर्सन हैं। पंजाब की जनता ने सरकार चलाने के लिए उन्हें चुना है, राज्यपाल को नहीं।

भारत की 'रॉकेट फोर्स' में होंगी 1500 किलोमीटर दूरी तक की बैलिस्टिक मिसाइलें

सेना की ROCKET FORCE होगी और शक्तिशाली

AGENCY NEW DELHI : चीन को सटीक जवाब देने के लिए भारत भी अपनी रॉकेट फोर्स बना रहा है। भारत अपनी रॉकेट फोर्स में 1,500 किलोमीटर तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को शामिल करने पर विचार कर रहा है। सेनाएं पारंपरिक उपयोग के लिए सामरिक बल कमान में बैलिस्टिक मिसाइलों के मौजूदा बेड़े से चयन कर सकती हैं। रॉकेट फोर्स बनाने का उद्देश्य भारत की मध्यम दूरी की मारक क्षमता को मजबूत करना है, जो पहले से ही पड़ोसी देशों पाकिस्तान और चीन के पास है। पूर्वी लद्दाख सीमा पर तनाव कम करने के लिए चल रहे सैन्य और कूटनीतिक प्रयासों के बीच चीन ने एलएसी के पास बड़ी संख्या में रॉकेट फोर्स तैनात की है। चीन को पहले से ही अपनी रॉकेट फोर्स पर सबसे ज्यादा भरोसा रहा है। पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने यह रॉकेट फोर्स 2016 में अलग से बनाई थी, क्योंकि चीन के पास दुनिया में सबसे बड़ा रॉकेट का भंडार है। चीन की रॉकेट फोर्स को जवाब देने के लिए भारत ने बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक में अहम भूमिका निभाने वाली स्पेशल फोर्सेज को लद्दाख सीमा पर तैनात कर रखा है। देश के अलग-अलग स्थानों से पैरा स्पेशल फोर्स की यूनिट को लद्दाख में ले जाया गया है। इसके साथ ही चीन को सटीक जवाब देने के लिए भारत ने भी अलग से रॉकेट फोर्स बनाने का फैसला लिया है, क्योंकि भारत के पास भी दुनिया की बेहतरीन मिसाइलों का भंडार है। रॉकेट फोर्स बनाने की योजना से स्पष्ट संकेत है कि भारत सीमित युद्ध के दौरान बड़े पैमाने पर सतह से सतह मिसाइल का उपयोग करेगा। इसीलिए भारत ने अपने मिसाइल विकास और उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र की बदौलत रॉकेट फोर्स गठित करने की परिकल्पना की है।

रक्षा मंत्रालय ने से मिसाइलों के अधिग्रहण को मंजूरी

भारतीय रक्षा बल इस रॉकेट फोर्स में लगभग 1,500 किलोमीटर की दूरी तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को शामिल करने पर विचार कर रहे हैं। हाल ही में रक्षा मंत्रालय ने प्रलय बैलिस्टिक मिसाइलों के अधिग्रहण की मंजूरी दी है। रॉकेट फोर्स बनाने का उद्देश्य भारत की मध्यम दूरी की मारक क्षमता को मजबूत करना है, जो पहले से ही पड़ोसी देशों पाकिस्तान और चीन के पास है। अधिकारियों के अनुसार प्रलय मिसाइलें वर्तमान में बड़े पैमाने पर उत्पादित की जा रही हैं, जल्द ही परिचालन सेवा के लिए तैयार होने की उम्मीद है। मिसाइल मार्गदर्शन प्रणाली में अत्याधुनिक नेविगेशन और एकीकृत एवियोनिक्स शामिल हैं। प्रलय एक अर्ध-बैलिस्टिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है। इस उन्नत मिसाइल को इंटरसेप्टर मिसाइलों का मुकाबला करने के लिए विकसित किया गया है। इसमें हवा में एक निश्चित दूरी तय करने के बाद अपना रास्ता बदलने की क्षमता है।

ओवरब्रिज से रेलवे ट्रैक पर गिरी स्लीपर बस, 4 की मौत

DAUSA : कलेक्ट्रेट के पास से गुजर रहे रेलवे ओवरब्रिज पर बीती रात सवारियों से भरी बस ओवरब्रिज की रेलिंग तोड़ते हुए रेलवे ट्रैक के पास जा गिरी। हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 29 घायल हो गए। हादसे में गंभीर रूप से घायल 7 यात्रियों को जयपुर के सवाई मानसिंह हॉस्पिटल रेफर किया गया है। हादसे के बाद दिल्ली-जयपुर रेल मार्ग करीब ढाई घंटे तक बंद रहा। जानकारी के अनुसार प्राइवेट बस हरिद्वार से उदयपुर जा रही थी। रात करीब दो बजे ओवरब्रिज पर पहुंचते ही ड्राइवर को झपकी आ गई और बस रेलिंग तोड़ते हुए 30 फीट नीचे रेलवे ट्रैक के पास गिर गई। हादसे के बाद मौके पर अफरातफरी मच गई। कलेक्टर कमर चौधरी और एएसपी बजरंग सिंह शेखावत मौके पर पहुंचे।

सरकार ने लॉन्च किया भारत आटा, 27.50 रुपये KG बिकेगा

मोबाइल वैन में 10 व 30 किलो का पैक मिलेगा

AGENCY NEW DELHI : केंद्र सरकार देशभर में 27.50 प्रति किलो की कीमत पर 'भारत आटा' उपलब्ध कराएगी। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने सोमवार, 6 नवंबर को दिल्ली में आटे के वितरण वाहनों (मोबाइल वैन) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसे 10 ङ्क और 30 ङ्क के पैक में उपलब्ध कराया जाएगा। देशभर में 2 हजार आउटलेट पर यह आटा मिलेगा। इसे नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (नेफेड), नेशनल कोऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एनसीसीएफ), सफल, मदर डेयरी, और अन्य सहकारी संस्थानों के जरिए बेचा जाएगा। भारत आटे की कीमत 27.50 प्रति किलो तय की गई है। सरकार इससे पहले 25 रुपए किलो पर प्याज और 60 रुपए किलो पर भारत दाल (चने की दाल) बेच रही है। भारत आटे की कीमत 27.50 प्रति किलो तय की गई है। सरकार इससे पहले 25 रुपए किलो पर प्याज और 60 रुपए किलो पर भारत दाल (चने की दाल) बेच रही है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने इस दौरान बताया कि इसके लिए ढ़ाई लाख मीट्रिक टन गेहूं का एलॉकेशन विभिन्न सरकारी एजेंसियों को किया गया है। उपभोक्ता मामलों के विभाग के अनुसार, अभी देश में आटे की औसत कीमत 35 रुपए किलो है।

BRIEF NEWS

ट्रेन से कटकर हुई युवक की मौत

DUMKA :जरमुंडी थाना क्षेत्र के दुमका जसीडीह रेल खंड पर सोमवार की दोपहर ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत हो गई। युवक का सर धड़ से अलग क्षत-विक्षत हालत में पटरी पर पड़ा मिला। उधर घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के लोगों की भीड़ घटनास्थल पर जमा हो गई। युवक की पहचान बासुकीनाथ निवासी दिलीप कुमार राव (45) के रूप में हुई, जो बासुकीनाथ में स्टैंड किरानी का काम करता था। इसी दरमियान घटना की जानकारी मिलते ही जरमुंडी पुलिस मौके पर पहुंच शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

निरंतर अभ्यास ही जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की कुंजी : कमांडेंट

KHUNTI : नेताजी सुभाषचंद्र बोस आवासीय विद्यालय स्थित तीरंदाजी का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अनाथ, दिव्यांग और शिल्प कला में अभ्यासरत बच्चों से मिलने आइआरबी की कमांडेंट इमेल्डा एक्का सोमवार को तीरंदाजी केंद्र पहुंची और उनकी हौसला आफजाई की। भारतीय पुलिस सेवा की अधिकारी ने अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों और अनुभवों को बच्चों के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि अनुशासन और निरंतर अभ्यास जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की कुंजी है। बच्चों के साथ उन्होने भी टारगेट पर निशाना साधकर बच्चों को खेल के प्रति प्रेरित किया। तीरंदाजी प्रशिक्षक दानीश अंसारी और आशीष कुमार ने खेल की गतिविधियों और खिलाडियों का अतिथि से परिचय कराया। सम्मान स्वरूप बच्चों द्वारा बनाई गई सोहराई पेंटिंग भेंट की।

डोरंडा में इसी महीने होगा टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

RANCHI : स्वास्थ्य को खेल से जोड़ो, खेल को रोजगार से जोड़ो अभियान के तहत बीते रविवार की रात रक्तदान संगठन लहू बोलेगा संस्था के द्वारा रहमानिया मोसाफिर खाना, अंजुमन प्लाजा, मेन रोड़, रांची में बैठक हुई। बैठक में राजधानी रांची में खेल को बढ़ावा देने, स्वास्थ्य को ठीक रखने और खेल को रोजगार से जोड़ने के मुद्दें पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में तय हुआ कि सामाजिक/व्यापारिक संगठनो एवं खेल प्रेमियों का एक मैत्री टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट सर्वप्रथम डोरंडा, रांची में आयोजित किया जाएगा। राजधानी रांची और आसपास के जिलों के सीनियर क्रिकेट स्टार और खेल प्रेमियों को जोड़कर 07 नवंबर को रांची में बड़ी बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक में जावेद खान, छोटा रुस्तम, मो बेलाल, फिरोज जिलानी, औरंगजेब खान, नदीम खान, साजिद उमर, नेहाल अहमद, मो फहीम, शाहनवाज अब्बास, एम.अंसारी एवं असगर खान शामिल थे।

पीएम के खूंटी आगमन को लेकर भाजपा के दस जिलों के पदाधिकारियों की बैठक

मोदी के आने के बाद हर क्षेत्र में देश बढ़ा आगे : कर्मवीर सिंह

PHOTON NEWS KHUNTI : भाजपा के संगठन मंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि सौ वर्ष में एक बार परिवर्तन होता है। स्वामी विवेकानंद आये, सुभाष चन्द्र बोस आये। उसी तरह प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी भी सौ वर्ष में आये हैं। उनके आने से देश हर क्षेत्र में आगे बढ़ा है। पूरे विश्व में भारत का सम्मान और कद बढ़ा है। जब भी विश्व में संकट आया है, उसके निवारण के लिए सबकी नजरें भारत की ओर ही रही हैं। संगठन मंत्री सोमवार को जिला भाजपा कार्यालय में दक्षिणी छोटानागपुर और कोल्हान प्रमुडल के दस जिलों के संगठन पदाधिकारियों की बैठक को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। बैठक में 15 नवंबर जनजातीय गौरव दिवस को

कार्यक्रम में जुटे भाजपा कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

प्रधानमंत्री के खूंटी आगमन को लेकर तैयारियों की समीक्षा की गई।

बताया गया कि भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर 15 नवंबर को खूंटी में प्रधानमंत्री विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। बैठक में इसकी कार्य योजना तैयार की गई। मुख्य अतिथि ने कहा कि जो भी कार्यकर्ता यहां उपस्थित है, वें असामान्य हैं, सामान्य नहीं है। अपनी क्षमता से अधिक संगठन के लिए इन्होंने काम किया है। आनेवाले 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस है। इस मौके पर देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री का आगमन खूंटी में होना झारखंड के लिए गर्व की बात है। सभी कार्यकर्ता तन-मन से इस सभा को कैसे सफल बनाएं, यह सुनिश्चित करें। मन की बात कार्यक्रम आगामी 26 नवंबर को होना है उसकी भी तैयारी करनी है।

ऐतिहासिक होगी खूंटी में मोदी की सभा : विधायक

खूंटी विधायक सह प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि प्रथम बार कोई प्रधानमंत्री पहली बार बिरसा मुंडा की जन्मभूमि उलिहातु में आ रहा है। यह खूंटी के लिए सौभाग्य की बात है। प्रधानमंत्री अपने व्यस्त कार्यक्रमों में समय निकाल कर भगवान बिरसा मुंडा के धरती पर आ रहे हैं। विधायक ने कहा कि हमारे लिए सम्मान की बात है कि प्रधानमंत्री चौथी बार भगवान बिरसा मुंडा की धरती खूंटी आ रहे हैं। प्रदेश ने मुझ पर भरोसा किया है जनसभा में अधिक से अधिक लोगों को लाने का। विधायक ने कहा कि मैं प्रदेश को आश्वस्त करता हूं कि आज तक कार्यक्रम में जितनी भीड़ होती है, इस बार एतिहासिक भीड़ होगी। कार्यकताओं और मोदी जी को चाहने वालों का जनसैलाब उमड़ कर आयेगा। मंच संचालन सांसद सह प्रदेश महामंत्री आदित्य साहू ने किया। स्वागत भाषण खूंटी जिला अध्यक्ष और धन्यवाद ज्ञापन सिमडेगा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण बड़ाइक ने किया।

बैठक में प्रदेश महामंत्री डॉ प्रदीप वर्मा, बालमुकुंद सहाय ,प्रदेश मंत्री सह हटिया विधायक नवीन जायसवाल, रांची विधायक सीपी सिंह, तोरपा विधायक कोचे मुंडा, कांके विधायक समरी लाल, प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, प्रदेश एसटी मोर्चा अध्यक्ष शिव शंकर उरांव, किसान मोर्चा अध्यक्ष पवन साहू, महिला मोर्चा अध्यक्ष आरती कुजूर, प्रदेश मीडिया की सरोज सिंह, प्रदेश मंत्री सुबोध सिंह गुड्डू, प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल नाथ शाहदेव, प्रदेश कोषाध्यक्ष दीपक बंका, योगेन्द्र नायक, सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बीसीसीएल के सीएमडी से मिले राज्यसभा सांसद खीरू महतो

PHOTON NEWS DHANBAD : राज्यसभा सांसद सह जदयू के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष व कोयला खान मंत्रालय के स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य खीरू महतो सोमवार को असंगठित मजदूरों की समस्याओं को लेकर बीसीसीएल धनबाद के मुख्य प्रबंध निदेशक सह अध्यक्ष समीरन दत्ता से मिले। इसके बाद खीरू महतो ने कहा कि जदयू पार्टी धनबाद में विस्थापितों की समस्याओं को लेकर संघर्षरत है। बीसीसीएल को विस्थापन, नियोजन एवं असंगठित मजदूरों की समस्याओं का समाधान करना ही होगा। बीसीसीएल में संचालित आउटसोर्सिंग कंपनियों में 75 प्रतिशत स्थानीय बेरोजगारों को नियोजन देना होगा। अगर बीसीसीएल विस्थापन, नियोजन एवं असंगठित मजदूरों की समस्याओं का समाधान नहीं करती है तो जदयू पार्टी बीसीसीएल कंपनी के विरुद्ध आंदोलन करने के लिए बाध्य होगी।

जदयू प्रदेश महासचिव सह यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह ने कहा कि विस्थापन, नियोजन एवं असंगठित मजदूरों का विषय जो गोविन्दपुर क्षेत्र एवं ब्लॉक 2 से संबंधित है, जिसमें सोनारडीह, कोरिडीह, सिदपोकी गांव के विस्थापितों का विषय, एवं बेनिडीह मेन साइडिंग के सेलपिकिंग मजदूरों को एचपीसी का वेतन भुगतान हो इस पर सार्थक चर्चा हुई है और समीरन दत्ता ने खीरू महतो को असंगठित मजदूरों की समस्या को प्राथमिकता के तौर पर हल करने का सकारात्मक आश्वासन दिया।

धनबाद पुलिस ने दो बाइक चोर को किया गिरफ्तार, सात बाइक बरामद

PHOTON NEWS DHANBAD : धनबाद पुलिस ने बाइक चोरी करने वाले दो अपराधियों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर चोरी की सात मोटरसाइकिल बरामद की है। इस संबंध में डीएसपी हेडक्वार्टर 1 अमर कुमार पांडेय ने बताया कि बीती रात लगभग 11:30 बजे वरीय पदाधिकारियों के निर्देशानुसार उनके नेतृत्व में मैथन ओपी के सहायक अवर निरीक्षक मनोज कुमार ओझा द्वारा एंटी क्राइम चेकिंग चलाया जा रहा था। इस दौरान एक बिना नंबर प्लेट पर मोटरसाइकिल सवार संदीप कुमार को जांच के लिए रुकवाया गया। इस दौरान संदीप पुलिस को देखकर वह भागने लगा। पुलिस टीम ने पीछा कर उसको पकड़ लिया। पूछताछ में उसने अपना

गिरफ्तार बाइक चोर व जानकारी देती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

नाम प्रदीप नाग उर्फ सुदीप और निरसा का रहने वाला बताया। साथ में यह भी बताया कि उसने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर धनबाद के विभिन्न क्षेत्रों से मोटरसाइकिल की चोरी कर बेच दिया है। पुलिस ने प्रदीप की निशानदेही पर उसके अन्य सहयोगी शेख अफाजुद्दीन उर्फ हाफिज को गिरफ्तार किया। पूछताछ में हाफिज में अपना अपराध स्वीकार करते हुए बताया कि उसने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर धनबाद के अलग-अलग क्षेत्र से मोटरसाइकिल चोरी कर उसे मोडिफाइड करके कोयला चोरी करने वाले अपराधियों तथा अन्य व्यक्तियों को बेचा है।

चतरा में 30 क्विंटल डोडा के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

PHOTON NEWS CHATRA : पुलिस ने 30 क्विंटल प्रतिबंधित डोडा के खेप के साथ राजस्थान के तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। साथ ही तस्करी में प्रयुक्त 16 चक्का ट्रक, पांच स्मार्टफोन और दस हजार रुपये नकद बरामद किया है।

एसपी राकेश रंजन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर डीएसपी मुख्यालय के नेतृत्व में गठित वशिष्टनगर जोरी थाना पुलिस की टीम को सफलता मिली। डीएसपी मुख्यालय केदारनाथ राम ने सोमवार को बताया कि चतरा-डोभी मुख्य मार्ग पर स्थित घंघरी

मीडिया को जानकारी देते डीएसपी केदारनाथ राम। ● फोटोन न्यूज

इलाके से तस्करों को डोडा की खेप के साथ पकड़ा गया है। उन्होंने बताया कि राजस्थान नंबर का 16 चक्का ट्रक में जिले के कुंदा थाना क्षेत्र के गेन्द्रा जंगल से डोडा लादकर तस्कर तस्करी के उद्देश्य से राजस्थान ले जा रहे थे। इसी दौरान एनएच 22 से तस्करों के ट्रक को जब्त किया गया है।

डीएसपी ने बताया कि गिरफ्तार सभी तीनों तस्कर राजस्थान के फलोदी, जोधपुर और बाड़मेर जिले के रहने वाले हैं और लंबे समय से इस गैरकानूनी धंधे में संलिप्त हैं। बरामद डोडा की कीमत करीब 15 लाख रुपये आंकी गई है। गिरफ्तार तस्करों को पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। वहीं गिरोह में शामिल अन्य तस्करों की गिरफ्तारी को लेकर पुलिस अभियान चलाने में जुटी है।

पांच दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन

इको क्लब को 2-0 से हरा कर दुबलिया की टीम बनी चैंपियन

विजेता टीम को पुरस्कार देते अतिथि। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : सरना समिति सोसो उलातु पंचायत द्वारा आयोजित पांच दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला रविवार को खेला गया। टूर्नामेंट में कुल 16 टीम भाग लिए जिसमें फाइनल मुकाबला इको क्लब चारी हुजीर बनाम हेमन्त ब्रदर्स दुबलिया के बीच खेला गया। बेहद ही रोमांचक मैच में दुबलिया की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए इको क्लब चारी हुजीर को 2-0 से हरा कर चैंपियन बना। जूनियर मुन्ना को शानदार खेल के लिए मेन ऑफ द सीरीज के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वहीं विजेता को नगद 50 हजार रुपयेऔर उपविजेता को 30 हजार रुपये से सम्मानित किया गया। तृतीय पुरस्कार लालगंज एवं चतुर्थ पुरस्कार रोल की टीम को दी गई।

फाइनल मैच में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में काके प्रखंड प्रमुख सोमनाथ मुंडा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में स्थानीय मुखिया सुनीता देवी एवं पंचायत समिति सदस्य दिव्या खलखो ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उद्घाटन किया और विजेता टीमों को पुस्कार वितरण किया। मैके पर आयोजन समिति के खेल प्रभारी दिलीप उरांव, रतन उरांव, राजू उरांव, बंधन मुंडा, सुभाष बेक,आकाश उरांव, संदीप राम का टूर्नामेंट में योगदान रहा।

डायलिसिस बंद होने से परेशान मरीजों ने किया हंगामा, सीएस ने फर्जी बिल का लगाया आरोप

PHOTON NEWS GIRIDIH : गिरिडीह सदर अस्पताल में राज्य सरकार और प्राइवेट एजेंसी द्वारा संचालित डायलिसिस सेवा को बंद कर दिए जाने से मरीजों ने हंगामा करना शुरू कर दिया और कोर्ट रोड को जाम कर बीच सड़क पर बैठ गए। परेशान मरीजों को हंगामा करते देख उनका सहयोग करने से कुछ नेता भी पहुंच गए। जानकारी मिली तो सदर एसडीएम विषालदीप खलको, सीओ और नगर थाना की पुलिस भी सदर अस्पताल के समीप पहुंच कर पूरे मामले की जानकारी ली। इस दौरान जिले के दूर दराज इलाके से आए कुछ मरीजों ने कहा एक दो मरीजों की हालात सबसे खराब था और जब वो आए, तो डायलिसिस सेवा का संचालन करने वाली एजेंसी स्काई संजीवनी के चार टेक्नीशियन ने कहा की डायलिसिस नही होगा। क्योंकि सेवा बंद करने निर्देश रांची से आया है। इसके बाद परेशान मरीज और उनके परिजन भड़क उठे। और सड़क जाम कर वही बैठ गए। लेकिन मरीजों को नहीं बताया गया की सेवा क्यों बंद किया गया। इस दौरान जब

हंगामा के दौरान लोगों की जुटी भीड़। ● फोटोन न्यूज

एसडीएम, सीओ और नगर थाना पुलिस के साथ सिविल सर्जन डॉ शिव प्रसाद मिश्रा मरीजों से बातचीत करने पहुंचे, तो परेशान मरीजों ने अपने अपने समस्याओं को बताया। इसके बाद एसडीएम हरकत में आए और डायलिसिस सेवा का संचालन करने वाले एजेंसी के टेक्नीशियन को जब डांटा और केस दर्ज कर जेल भेजने की बात कही। तो टेक्नीशियन ने काम करना शुरू किया। इधर जानकारी मिलने पर सिविल सर्जन ने एसडीएम को बताया की बकाया भुगतान नहीं होने का हवाला देकर एजेंसी ने सेवा को ठप किया। सिविल सर्जन का कहना था की न तो एजेंसी के कोई इंचार्ज ही रहते है और न कोई और। और बिल भी हमेशा गलत बनाकर देते है।

सिविल सर्जन ने बताया की मार्च से जुलाई का बिल पिछले अक्टूबर माह में दिया गया है। अब जब तक बिल का जांच नही किया जायेगा, तो भुगतान संभव नहीं है। एजेंसी को हर माह बिल देने के बाद भुगतान संभव है। क्योंकि कई बार एजेंसी ने फाल्स बिल दिया है और भुगतान लेने का प्रयास किया है। और इस बार एजेंसी ने मार्च से जुलाई का 12 लाख का बिल थमा दिया। अब जब तक बिल का जांच नही होगा, तब तक उसे भुगतान संभव नहीं है। वैसे एजेंसी स्काई संजीवनी के खिलाफ राज्य सरकार को लेटर लिखा जाएगा।

साधु के वेश में लोगों का चूना लगाने वाले तीन ठग गिरफ्तार

PHOTON NEWS GUMLA : साधु के वेश में लोगों को चुना लगाने वाले तीन ठग को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इनमें अरूण योगी (25), मो.फारूक (36) और सफरूद्दीन (42) शामिल हैं। तीनों टिकिरया थाना देहात कोतवाली जिला गोंडा (यूपी) के रहने वाले हैं। ये लोग झारखंड आकर विभिन्न गांवों में घुम-घुम कर लोगों को अपनी ठगी का शिकार बना रहे थे।

बताया जाता है कि ये लोग जिले के पुसो थाना क्षेत्र के कुलकुपी महुआटोली गांव पहुंच गये, जहां इनका भंडाफोड़ हो गया। जानकारी के अनुसार तीनों ठग गांव में चोठी देवी (35) के घर पहुंचे। इनमें से एक व्यक्ति ने चोठी देवी से कहा कि वह उसके पति का भाई सुकरमान उरांव है। जबकि सुकरमान उरांव विगत 12 वर्ष से लापता है। ये लोग घर के सभी सदस्यों का नाम-पता बताने लगे। इससे चौठी देवी को विश्वास हो गया कि कि सचमुच वह उसके पति का भाई सुकरमान उरांव है। तब सभी घरवाले उसे घर में रहने के लिए बोलें तब उक्त ठग ने बोला कि हम सन्यास जीवन से जुड़ गयें हैं। इसलिए हम घर में नहीं रह

जानकारी देती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

सकतें। घर में रहने का एकमात्र उपाय है कि हमको संन्यास जीवन तथा योगी जीवन से छुटकारा पाना होगा। इसके लिए हमें करीब 10 हजार साधुओं को भंडारा कराना होगा। इसमें करीब तीन लाख का खर्च आएगा। यदि तुम लोग पैसे का जुगाड़ कर दोगे तो हम भंडारा करा कर संन्यास जीवन छोड़ देंगे। घर के सारे लोग ठग के झांसे में आ गए और पैसा देने के लिए राजी हो गयें। सभी लोगों ने मिलकर तत्काल 10 हजार रू. और कुछ कपड़े उन साधुओं को दे दिया।

बाकी पैसे का इंतजाम करने के लिए चौठी देवी ने तीन दिन का समय मांगा। उन साधुओं ने कहा कि ठीक है,तीन दिन बाद हम फिर आएंगे। इसी दौरान चौठी देवी ने इस बात का जिक्र गांव के वार्ड सदस्य व अन्य लोगों से किया।

धनबाद और रांची से खुलने वाली ट्रेनों की बोगी बढ़ाने की नहीं हुई घोषणा

राजधानी एक्सप्रेस सहित सभी एक्सप्रेस व मेल ट्रेनों में आरक्षित सीटें फुल, लोगों की बढ़ी मुश्किलें

PHOTON NEWS KODERMA : दीपावल और छठ पूजा को लेकर वीवीआईपी ट्रेन राजधानी एक्सप्रेस समेत तमाम एक्सप्रेस व मेल ट्रेनों में आरक्षित सीटें फुल हो चुकी हैं। दिल्ली से कोडरमा हजारीबाग रोड पारसनाथ गुमो और धनबाद होकर पश्चिम बंगाल और उडीसा जाने वाली ट्रेनों में लंबी वेटिंग चल रही है। ऐसे में लोगों को त्योहार पर परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कोडरमा स्टेशन से लोग उतरकर हजारीबाग प्रमंडलीय मुख्याालय हजारीबाग बरही बडकाकाना गिरिडीह तथा बिहार के नवादा जाते हैं। ऐसे दिवाली और छठ बाद झारखण्ड से वापस लौटने के लिए ट्रेन में टिकट मिलना असंभव हो जाता है। इस

। ● फोटोन न्यूज

बार दिवाली 12 नवंबर को व छठ पूजा 17 नवंबर से शुरू होगी। ऐसे में आठ नवंबर के बाद की तारीखों के लिए अभी से दिल्ली-मुंबई से आने वाली ट्रेनों में वेटिंग चल रही है। कोडरमा धनबाद और गिरिडीह अगर आप दिवाली और छठ पर्व के लिए झारखण्ड आने का प्लान बना रहे हैं तो यह खबर आपके लिए है। झारखण्डवासियों को यह बात जानकर झटका लगेगा कि ज्यादातर ट्रेनों में सीटें फुल हैं। वहीं काफी ट्रेनों में लंबी वेटिंग चल रही है।

पुरूषोत्तम ट्रेन में नो रूम : दीपावली और छठ पूजा पर ट्रेनों में सीट नहीं मिल रही हैं। दिल्ली से कोडरमा को आने वाली नई दिल्ली से कोडरमा होकर पुरी जाने वाली पुरुषोत्तम एक्सप्रेस में भी 10 नवंबर एसी और स्लीपर क्लास में नो रूम है। इसके अलावा, 15 नवंबर तक 150 से 200 सौ से अधिक वेटिंग है। इसी प्रकार, झारखंड एक्सप्रेस से भी कोडरमा झारखण्ड आना मुश्किल है। 10 नवंबर नो रूम और 12 नवंबर तक लंबी वेटिंग है। जोधपुर से हावड़ा जाने वाली जोधपुर -हावड़ा एक्सप्रेस में भी लंबी वेटिंग चल रही है। इसी प्रकार लंबी दूरी की दर्जनों ट्रेनों में हाल काफी खराब है। धनबाद और रांची से खुलने वाली ट्रेनों में अभी तक बोगी बढाने की घोषणा नहीं हुई है।

पूजा स्पेशल ट्रेनों पर टिकी है उम्मीदें

भुवनेश्वर राजधानी, रांची राजधानी एक्सप्रेस में एसी व स्लीपर में लंबी वेटिंग है। ऐसे में पर्व में घर आने वालों की अब तत्काल और पूजा स्पेशल ट्रेनों पर उम्मीदें टिकी हुई हैं। दीपावली-छठ के समय में बिहार-झारखंड आने वाली ट्रेनों की बुकिंग शुरू होते ही लोग सीटें आरक्षित करा लेते हैं। हालांकि, इनमें से बहुत सारे लोग अपरिहार्य कारणों से पर्व के समय घर न आने की स्थिति में बाद में टिकट रद्द करा देते हैं। इस कारण भी बुकिंग अधिक होती है और वेटिंग टिकट भी सामान्य की तुलना में अधिक कंफर्म होती है। इस उम्मीद में भी लोग ट्रेनों के एसी व स्लीपर कोच के लिए अधिक वेटिंग ले लेते हैं।

फेसबुक पर आत्महत्या का स्टेटस डालकर प्रेमी जोड़े ने किया सुसाइड

PHOTON NEWS PALAMU : पलामु जिले के पड़वा थाना क्षेत्र के अमानत नदी स्थित रेलवे पोल संख्या 294/9 व 294/11 के बीच रेलवे लाइन के बीच से युवक-युवती का शव सोमवार सुबह मिला। शव क्षत विक्षत था। रेल लाइन मैन ने बताया कि घटना की जानकारी रेल ड्राइवर ने कजरी स्टेशन को दी थी। स्टेशन स्टाफ ने स्टेशन स्थित आरपीएफ को बताया। आरपीएफ ने लाइन मैन की मदद से शव को ट्रैक से हटाया। कई घंटे बाद युवक-युवती के शव की पहचान हो पाई।

हालांकि बाद में युवक की पहचान चैनपुर थाना क्षेत्र के चेड़ाबार निवासी गुड्डू सिंह (21) के रूप में हुई है, जबकि युवती पूजा कुमारी (20)बतायी गई है। युवती का घर लिदकी पतरिया है। युवती बचपन से ही अपने नाना के घर चेड़ाबार में रह रही थी और इण्टर की छात्रा थी। गुड्डू और पूजा

के बीच प्रेम प्रसंग था। दोनों शादी करना चाहते थे, लेकिन लड़की पक्ष इसके लिए तैयार नहीं था।

गुड्डू की मां कुंती देवी के अनुसार सोमवार सुबह करीब पांच बजे जब प्रत्येक दिन की तरह गुड्डू को जगाने गई तो वह कमरे में नहीं मिला। उसकी खोजबीन की जा रही थी। कुछ पता नहीं चल रहा था। हर जगह तलाशने के बाद इसी बीच कजरी रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे ट्रैक पर युवक-युवती का शव मिलने की जानकारी हुई। वह संबंधित जगह पर जाने के लिए निकल रही थी। इसी बीच दोबारा सूचना मिली कि युवक का शव गुड्डू का है। इसके बाद उसकी मां रोने बिलखने लगी और किसी तरह एमएमसीएच पहुंची और शव की पहचान की। गुड्डू दो भाई दो बहनों में सबसे बड़ा था। उसके पिता मजदूरी करते हैं और घटना के समय घर से बाहर थे।

आत्महत्या से पहले गुड्डू सिंह ने पूजा के साथ फोटो लगाकर अपने फेसबुक पर आत्महत्या से संबंधित स्टेटस अपलोड किया था। इसमें उसने बताया था कि बरवाडीह आत्महत्या के लिए जा रहे हैं, उसे कोई नहीं खोजेगा, लेकिन उनका शव उसके घर से पांच किलोमीटर दूर कजरी रेलवे स्टेशन से पहले मिला।

इधर, युवती के दादा गोवर्धन सिंह ने बताया कि पूजा अपने मामा के घर चेड़ाबार में थी। सुबह पांच बजे से उसका कुछ अता-पता नहीं चल रहा था। उसकी मां आशा देवी को दिन में 2.30 बजे सूचना मिली कि पूजा ने

सिल्ली के पूर्व विधायक अमित महतो को SC से जमानत,जून में किया था SURRENDER

सेशन कोर्ट से मिली सजा को हाईकोर्ट में दी थी चुनौती, फिर पहुंचे सुप्रीम कोर्ट

सोनाहातू सीओ से मारपीट को मामला

फाइल फोटो।

SPECIAL REPORTER RANCHI : सोनाहातू सीओ के साथ मारपीट मामले में सिल्ली के पूर्व विधायक और खातियानी झारखंडी पार्टी प्रमुख अमित महतो को जमानत मिल गई है। उन्हें सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली है। सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के बाद न्यायाधीश जस्टिस आर एस बोपन्ना और जस्टिस नरसिम्हन की बेंच ने जमानत दी है। पूर्व विधायक अमित महतो की ओर से सुप्रीम कोर्ट में वरीय अधिवक्ता संजीव कुमार ने बहस की। दरअसल जिस मामले में अमित महतो को जमानत दी गई है, वह 28 जून 2006 का है। तब अमित महतो सिल्ली विधानसभा के विधायक थे। उन्होंने सोनहातू के तत्कालीन अंचल अधिकारी आलोक कुमार के साथ मारपीट की थी। इस मामले में सोनहातू थाने में मामला दर्ज किया गया था। यह मामला केस संख्या 42/2006 के तहत दर्ज किया गया था। इस मामले में सेशन कोर्ट ने सुनवाई करते हुए आईपीसी की धारा 506 के तहत अधिकतम दो साल की सजा पूर्व विधायक को सुनाई थी। सेशन कोर्ट से दो साल की सजा मिलने के बाद उन्होंने फैसले को चुनौती देते हुए झारखंड हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। जहां हाई कोर्ट ने सिविल कोर्ट की सजा को कम करते हुए उसे एक साल कर दिया लेकिन हाई कोर्ट के जजमेंट से भी संतुष्ट नहीं होने के बाद अमित महतो के वकील ने सजा को और भी कम करवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। नियम के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करने के तुरंत बाद भी याचिकाकर्ता को हाई कोर्ट का सम्मान करते हुए सरेंडर करना पड़ता है। इसी नियमावली के तहत 27 जून 2023 को विधायक अमित महतो ने सरेंडर किया था। वहीं 3 अगस्त 2022 को विधानसभा सत्र के दौरान उनके और उनके सहयोगियों के द्वारा विधानसभा घेराव किया गया था। इस मामले में सरकार की ओर से धुर्वा थाना में केस संख्या 208/22 के तहत केस दर्ज किया गया था। इस मामले में सिविल कोर्ट के न्यायाधीश एसएन शहजाद की अदालत ने आईपीसी की धारा 341, धारा 283, धारा 353 और धारा 506 के तहत दर्ज मामले की सुनवाई करते हुए 18 अगस्त को दोनों पक्षों की दलील को गौर से सुना गया और फैसला सुरक्षित रख लिया। इसके बाद 19 अगस्त को ऑर्डर दिया। जिसमें सभी मामलों में पूर्व विधायक को जमानत दे दी गई।

2008 में नियुक्त कर्मचारियों को दिया जाए पुरानी पेंशन योजना का लाभ

हाईकोर्ट का आदेश

RANCHI : झारखंड हाईकोर्ट ने एक मामले की सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया है कि जिस कर्मचारी की नियुक्ति वर्ष 2004 से पहले हुई है, उसे पुरानी पेंशन योजना का लाभ दिया जाए। दरअसल कोडरमा सिविल कोर्ट में वाहन चालक के पद पर तैनात विनोद टोप्पो समेत आठ अन्य कर्मचारियों ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। याचिका में उन्होंने वर्ष 2021 में कार्मिक विभाग के उस नोटिफिकेशन को चुनौती दी थी, जिसमें यह कहा गया था कि उन्हें पुरानी पेंशन योजना से वंचित रखा जाएगा। लेकिन सुनवाई के दौरान प्रार्थियों के अधिवक्ता सुभाशीष रसिक सोरेन के साथ शोभा लकड़ा ने अदालत को बताया कि वाहन चालकों के पद पर नियुक्ति के लिए वर्ष 2001 में विज्ञापन जारी किया गया था। नियुक्ति प्रक्रिया पूरी होने के बाद वर्ष 2004 में वाहन चालक नियुक्ति परीक्षा का रिजल्ट वर्ष 2004 में जारी किया गया। लेकिन उन्हें 2008 में नियुक्ति दी गई थी। इस मामले की सुनवाई हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस डॉ एस एन पाठक की अदालत में हुई। राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता चैताली चटर्जी ने पक्ष रखा।

महेश अग्रवाल, अमित अग्रवाल और अजय सिंह के टेरर फंडिंग मामले में 28 नवंबर को अगली सुनवाई

RANCHI : चतरा के टंडवा स्थित मगध व आम्रपाली कोल परियोजना से जुड़े टेरर फंडिंग मामले में आरोपी आधुनिक पावर कंपनी की तत्कालीन एमडी महेश अग्रवाल,अमित अग्रवाल उर्फ सोनू अग्रवाल और अजय कुमार सिंह की चार्जफ्रेम एवं डिस्चार्ज पिटीशन पर झारखंड हाईकोर्ट में आंशिक सुनवाई सोमवार को हुई। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई 28 नवंबर निर्धारित की है। पिछली सुनवाई के दौरान एनआईए की ओर से बहस पूरी हो गई थी। महेश अग्रवाल की ओर से एनआईए के जवाब पर अपना प्रतिउत्तर दिया गया था। अब अमित अग्रवाल उर्फ सोनू अग्रवाल और अजय कुमार सिंह की ओर से पक्ष रखा जाना है। प्रार्थी की ओर से हाईकोर्ट के अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा और अधिवक्ता ऋषभ कुमार ने पैरवी की। दरअसल, रांची की एनआईए कोर्ट ने टेरर फंडिंग मामले में महेश अग्रवाल और अमित अग्रवाल उर्फ सोनू अग्रवाल और अजय कुमार सिंह की डिस्चार्ज पिटीशन को खारिज कर दिया था। साथ ही कोर्ट ने उन पर चार्जफ्रेम कर दिया है, जिसे उन्होंने हाईकोर्ट में चुनौती दी है। बता दें कि टेरर फंडिंग से जुड़े केस में रांची की एनआइए की विशेष अदालत में सुनवाई चल रही है। एनआइए ने टंडवा थाना में दर्ज प्राथमिकी को फरवरी 2018 को टेकओवर किया था। अनुसंधान के बाद एनआइए ने मामले में 17 आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था।

BRIEF NEWS

युवक के साथ मारपीट व छिनतई, एफआईआर

RANCHI : रातू थाना क्षेत्र के परहेपाट में सोमवार को एक बाइक सवार युवक के साथ मारपीट और छिनतई का मामला प्रकाश में आया है। जानकारी के अनुसार मुरचू जा रहे हुरहुरी के बाइक सवार युवक तनवीर हसन को ओवरटेक कर रोकने के बाद तीन लोगों ने मारपीट की। इसके बाद आरोप लगाया गया है कि हथियार का भय दिखाकर बाइक (जेएच 01डीडी 7712), गले से सोने का चेन और पॉकेट से 50 हजार नकद मारपीट कर छीन लिया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुये आरोपितों के घर से बाइक बरामद कर लिया है। मामले को लेकर पीड़ित की ओर से रातू थाने में चांद अंसारी, महफुज अंसारी और जाबिर अंसारी के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

पाकुड़ जा रही बस पलटी एक की मौत, दस घायल

RANCHI : ओरमांझी थाना क्षेत्र के ब्लॉक चौक से आगे पुल के समीप रांची से पाकुड जा रही पप्पू ट्रैवल्स नामक बस अनियंत्रित होकर ओरमांझी में पलट गई। घटना रविवार देर रात की है। मिली जानकारी के अनुसार इस घटना में एक यात्री की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 10 से अधिक यात्री घायल हुए हैं। घटना की सूचना मिलते ही ओरमांझी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की सहयोग से घायल यात्रियों को एम्बुलेंस से बस से निकालकर अस्पताल भेजा। राहत बचाव का कार्य जारी है। थाना प्रभारी ने बताया कि घायलों को अस्पताल भेजा गया है। एक की मौत हुई है। लगभग 10 लोग घायल हैं।

झारखंड राज्य कारा अस्पताल पारा चिकित्सा संवर्ग नियुक्ति नियमावली लागू

RANCHI : झारखंड राज्य कारा अस्पताल पारा चिकित्सा संवर्ग नियुक्ति प्रोन्नति एवं सेवा शर्त संशोधित नियमावली 2023 लागू हो गयी है। इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी गयी है। इसके अनुसार झारखंड के शैक्षणिक संस्थान से ही मैट्रिक इंटर पास होने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया है। वहीं, इस संवर्ग में शैक्षणिक योग्यता आइएससी, 10 प्लस टू रखी गयी है। इसके साथ ही एक्स-रे टेक्नेशियन का डिप्लोमा कोर्स उर्तीण होना व कम्प्यूटर का ज्ञान होना अनिवार्य किया गया है। फार्मासिस्ट, मिश्रक के पद के लिए भी शैक्षणिक योग्यता वही रखी गयी है और संबंधित विषय में डिप्लोमा करना अनिवार्य होगा। पुरूष व महिला नर्स के लिए शैक्षणिक योग्यता 10वीं पास 45 प्रतिशत के न्यूनतम अंक के साथ रखा गया है। परिधापक के लिए 10वीं पास के साथ एक वर्ष का प्रशिक्षण कोर्स, नर्सिंग अर्दली के लिए 10वीं पास योग्यता रखी गयी है।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

सदर अस्पताल में डेडिकेटेड कैंसर वार्ड शुरू, बड़ी आंत के मरीजों की होगी सर्जरी

PHOTON NEWS RANCHI : सदर अस्पताल में हर दिन मरीजों के लिए नई सुविधाएं शुरू हो रही हैं। ये राज्य का एक मात्र जिला अस्पताल बन गया है, जिसकी पहचान सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के रुप में हो रहा है। यहां अब बड़ी आंत के कैंसर की सर्जरी की जाएगी। आंकोलॉजी सर्जरी विभाग के डॉ प्रकाश भगत ने बताया कि सदर अस्पताल में आंकोलॉजी सर्जरी की शुरूआत एक महीने पहले की गई है। ओपीडी में मरीज पहुंच भी रहे हैं। सदर के डेडिकेटेड कैंसर वार्ड में 14 बेड की व्यवस्था है, जहां मरीज भी भर्ती हो रहे हैं। इनमें से एक महिला ओवेरियन ट्यूमर, बड़ी आंत के कैंसर की मरीज भी भर्ती है। सदर अस्पताल में इस मरीज के आंत में कैंसर की पहचान हुई थी, जिन्हें सर्जरी की जरूरत है। डॉ प्रकाश भगत ने बताया कि इसकी सूचना परिजनों को दे दी गई है। सदर अस्पताल प्रबंधन अपने स्तर से तैयारी कर चुकी है, परिजनों के हामी भरते ही ऑपरेशन कर दिया जाएगा। बता दें कि यह ऑपरेशन आयुष्मान भारत योजना के तहत किया जाएगा। इसकी शुरूआत होने से रांची सहित राज्यभर के मरीजों को फायदा होगा।

सदर में फिलहाल छह मरीज हर दिन ले रहे हैं कीमो

सदर अस्पताल में कीमो की भी शुरूआत कर दी गई है। हर दिन 5 से 6 छह मरीजों को कीमो की सुविधा दी जा रही है। वहीं ओपीडी में सात से आठ मरीज हर दिन पहुंच रहे हैं। मेडिकल आंकोलॉजी के चिकित्सक डॉ गुंजेश ने बताया कि तीन मरीजों को भर्ती कर कीमो दिया जा रहा है। उनमें से दो ब्लड कैंसर के और एक आंत के कैंसर के मरीज हैं। आंत के कैंसर से पीड़ित महिला को भी फिलहाल सर्जरी से पहले कीमो दिया जा रहा है। बता दें कि सदर अस्पताल में कीमो लेने वाले मरीजों को भी निशुल्क सेवा दी जा रही है।

महेंद्र सिंह धोनी से घर व पैसा दिलाने के नाम पर बच्चे का किया था अपहरण, आठ गिरफ्तार

रांची पुलिस की एसआईटी ने चतरा से डेढ़ साल के बच्चे को किया सकुशल बरामद

CRIME REPORTER RANCHI : भारतीय टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी से आवास और पैसा दिलाने का प्रलोभन देकर एक महिला के डेढ़ साल के बच्चे का अपहरण करने वाले आठ आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों में मधुकम शास्त्री चौक निवासी विनय वर्मा, सिमडेगा के टीटांगर निवासी सलुजा बेगम, रामगढ़ के बंगालीटोला निवासी कृष्णा मिश्रा उर्फ अशोक मिस्त्री, रांची के चान्हो निवासी गीता मुंडा, साजिद अंसारी, चतरा के ईटखोरी निवासी महेन्द्र साव, कुंती देवी और सरिता देवी शामिल है। इनके पास से अपहृत बच्चे को सकुशल बरामद किया गया है। साथ ही घटना में इस्तेमाल किया गया बाइक बरामद किया गया है। बच्चे को ईटखोरी कुंती देवी और महेन्द्र साव के पास से बरामद किया।

पुलिस की गिरफ्त में सभी आरोपी।

एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने अरगोड़ा थाने में प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि 22 अक्टूबर को जगरनाथपुर के लीची बगान निवासी मधु देवी पति प्रजा कुजूर जो भीख मांग कर गुजारा करती है। वह अपने डेढ़ वर्ष के बच्चे रूद्र राज के साथ हिनू के पास में थी। इसी कम में एक काले एवं लाल रंग के बाइक पर एक अज्ञात महिला और पुरूष पहुंचे। दोनों ने मधु देवी को बताया कि धोनी की ओर से हरमू में पैसा और एक घर दिया जा रहा है, चलो तुमको दिलवायेंगे। दोनों के बहकावे में आकर वह डेढ़ वर्षीय पुत्र के साथ अज्ञात पुरुष के साथ बाईक पर सवार होकर हरमू बिजली ऑफिस के पास आ गयी। वहां पर उसे अपने बातों में फंसाकर उक्त व्यक्ति एवं महिला उसके बच्चे का अपहरण कर लिया। इस संबंध में मधु देवी के बयान पर मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए डीएसपी हटिया के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन किया गया। एसआईटी की ओर से त्वरित कार्रवाई करते हुए घटना में शामिल सभी को गिरफ्तार कर लिया।

महिला का आरोप, घुमाने के बहाने मंदिर ले जाकर की शादी, जबरन बनाया शारीरिक संबंध, मामला दर्ज

CRIME REPORTER RANCHI : एक महिला ने युवक पर घुमाने के बहाने मंदिर ले जाकर शादी करने व जबरन शारीरिक संबंध बनाने का आरोप लगाया है। इसको लेकर पीड़िता ने लोअर बाजार थाना में आरोपी विक्की आर्या नामक के युवक के खिलाफ दुष्कर्म की प्राथमिकी दर्ज करायी है। पीड़िता ने दर्ज प्राथमिकी में बताया है कि पिछले साल दिसंबर में अपराधियों ने हरमू इलाके में उसे गोली मारी थी। इसलिए वह अपने पिता के साथ उनके घर में रह रही है। वह कुछ महीनों से तनाव में थी। उस दौरान पीड़िता के पिता के घर में विक्की आर्या अक्सर आया करता था। वह उसके परिवार के एक किसी सदस्य का दोस्त है। उसने पीड़िता को कहा कि वह उसके साथ घूमने फिरने के लिए बाहर चले। इससे उसका तानव दूर होगा। 23 अक्टूबर को विक्की आर्या पीड़िता को लेकर देउड़ी मंदिर ले गया। वहां पूजा करने के दौरान विक्की ने पीड़िता की मांग में सिंदूर लगा दिया। विक्की ने उससे कहा कि वह उसके साथ जीवन भर रहना चाहता है। पीड़िता के अनुसार, 24 अक्टूबर को विक्की उसको थड़पखना स्थित एक घर में ले गया। रात दो बजे विक्की ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाया। पीड़िता इसका विरोध करती रही कि गोली लगने के कारण उसके पंजरे में काफी दर्द रहता है। इसके बाद भी विक्की ने कहा कि तुमसे मैंने शादी की है। अगर तुम्हारी तबीयत बिगड़ती है, तो वह मेरी जिम्मेवारी होगी। यह कहकर वह उसके साथ शारीरिक संबंध बनाता रहा। इसी दौरान पीड़िता की तबीयत बिगड़ गयी और अपने घर चली गयी। पीड़िता के अनुसार, विक्की आर्या ने उससे कहा है कि अब वह अपने घर वालों की पसंद से शादी करने जा रहा है। उसने उसको चरित्रहीन भी बताकर उसके साथ नहीं रहने की बात कर रहा है। जिसके बाद पीड़िता ने विक्की के खिलाफ दुष्कर्म की प्राथमिकी दर्ज करायी। पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन कर रही है।

रांची समेत पूरे राज्य में गिरने लगा पारा बढ़ेगी कनकनी, बारिश की भी संभावना

PHOTON NEWS RANCHI : रांची समेत पूरे झारखंड में पारा गिरने लगा है। सुबह और शाम को ठंड महसूस होने लगी है अभी पारा और गिरेगा और ठंड बढ़ेगी। आसमान में घिरे बादल छटने लगे हैं। सोमवार को तापमान में और गिरावट आयेगी। मौसम में बदलाव का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि 31 अक्टूबर को न्यूनतम तापमान 20-21 के आसपास था जो सोमवार को 18 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार को तापमान में दो डिग्री की गिरावट आ सकती है। पिछले साल की तुलना में तापमान ज्यादा गिरा है। इसी समय पिछली बार यानि नवंबर के महीने में तापमान 17 से 18 डिग्री के आसपास था जो इस वक्त 16 डिग्री के आसपास दर्ज किया जा रहा है। अधिकतम तापमान भी बढ़ा है। इसमें भी एक से दो डिग्री की बढ़त दर्ज की जा रही है। मौसम विभाग ने राज्य के कई हिस्सों में हल्की बारिश की भी संभावना जाहिर की है। रांची समेत राज्य के कई हिस्से में बादल नजर आ रहे हैं। पश्चिमोत्तर भाग में एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस 7 नवंबर के आसपास दस्तक दे रहा है जिससे मौसम का मिजाज फिर बदल सकता है। झारखंड के कुछ हिस्सों में इसका प्रभाव पड़ने की संभावना है। त्योहारी मौसम में राज्य में ठंड बढ़ेगा। कनकनी बढ़ेगी दिवाली और छठ में तापमान में अच्छी गिरावट आयेगी। पश्चिमी विक्षोभ देश के पश्चिमोत्तर भाग में दस्तक दे सकता है। इसका झारखंड पर कितना असर पड़ेगा यह अबतक साफ नही है।

24 घंटे, सातों दिन होगा इलाज, कृषि मंत्री ने कहा- जल्द होगी वेटनरी यूनिवर्सिटी की स्थापना

झारखंड में पशुओं के लिए खुला पहला अस्पताल

PHOTON NEWS RANCHI : राज्य में पशुओं के इलाज के लिए अस्पताल खोला गया है। इसके साथ ही वेटरिनरी यूनिवर्सिटी की स्थापना हेतु पहल की जा रही है। हेसाग स्थित पशुपालन भवन में आदर्श हॉस्पिटल एवं वीडियो कॉल बेस्ड टेलीमेडिसीन सेंटर के उद्घाटन किया गया। कृषि मंत्री ने कहा, हम लोगों ने बजट उपबध भी कर लिया है। कृषि मंत्री ने कहा, सरकार सरकार में सिस्टम से लेकर रिस्पॉन्स तक सब कुछ बदल रहा है। विभाग को हमने संवारने का काम किया है। राज्य में ऐसे पशु चिकित्सालय की सख्त जरूरत महसूस की जा रही थी और इसका शुभारंभ कर दिया गया है। उन्होंने राज्य भर से आए पशु चिकित्सकों और पशु पालक व पशु सखियों को संबोधित करते हुए कहा कि केरल के दौरे के बाद हमें ये महसूस हुआ कि कृषि पशुपालन के क्षेत्र में हम काफी पीछे हैं। सवाल तो यह भी है कि आखिर कब तक हम केरल का उदाहरण देते रहेंगे। हमें भी अपने राज्य में समृद्ध किसानों, समृद्ध पशुपालकों की परिकल्पना को साकार करने के काम तो करना ही होगा।

अस्पताल के उद्घाटन समारोह में कृषि मंत्री बादल व अन्य।

पशुपालकों की समस्या का रखा जाएगा ध्यान

कृषि मंत्री ने कहा, हमारे यहां प्रतिभाएं हैं, न्यूनतम संसाधनों में बेहतर काम करने वाले पशु चिकित्सक हैं, जो उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं, ये हमारे लिए बड़ी बात है। राज्य के सभी प्रखंडों और 23 जिलों में अस्पतालों का कायाकल्प हो इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं, इसके लिए बजट को मल्टीपल किया जा रहा है। चिकित्सक पशुपालकों को पशुओं की बीमारी को लेकर मेंटली काउंसलिंग कर सकते हैं, इससे उनका मर्ज आधा हो जायेगा। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का मिजाज बदल रहा है इसलिए पशुपालन क्षेत्र कृषि का वैकल्पिक व्यवसाय बन सकता है।

10 हजार नारियल से बन रहा मां काली का पूजा पंडाल

RANCHI : रांची में काली पूजा की तैयारियां जोर-जोर से चल रही है। लालपुर के सर्कुलर रोड में देबुका नर्सिंग होम के पास कॉसमोस यूथ क्लब 10 हजार नारियल से पूजा पंडाल बन रहा है। इस वर्ष और भी भव्य पंडाल का निर्माण किया जा रहा है। क्लब के संस्थापक सदस्य देवाशीष राय ने सोमवार को बताया कि इस बार अमेरिकन आदिवासी संस्कृति की थीम पर पंडाल बनाया जा रहा है। इसमें अमेरिका आदिवासियों की संस्कृति और मनाए जाने वाले उत्सव को दशार्या जाएगा। यह पंडाल पूरी तरह से ईको फ्रेंडली होगा। 10 हजार नारियल और 50 लालटेन, बांस और लकड़ी से पंडाल बनाया जा रहा है।

22 नवंबर को मनाया जायेगा विस का 23वां स्थापना दिवस

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड विधानसभा का 23वां स्थापना दिवस 22 नवंबर को मनाया जाएगा। इस बार भी विधानसभा के 81 में से किसी एक विधायक को सर्वश्रेष्ठ विधायक चुना जाएगा। 17 नवंबर को विधानसभा की चयन समिति की बैठक में सर्वश्रेष्ठ विधायक के नाम पर चर्चा होगी और सबकी सहमति के बाद नाम की घोषणा होगी। इसके अलावा विधानसभा के उत्कृष्ट कर्मियों का भी चयन किया जाएगा। स्थापना दिवस के दिन उत्कृष्ट विधायक और कर्मियों को सम्मानित किया जाएगा। इस बार भी झारखंड विधानसभा स्थापना दिवस समारोह को भव्य तरीके से आयोजित करने की तैयारी कर रहा है। विधानसभा स्थापना दिवस समारोह को लेकर विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात कर उन्हें कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर चुके हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी समेत सत्ता पक्ष और विपक्ष के कई विधायक शामिल होंगे। मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन होगा। पिछली बार की तरह इस बार भी देश के किसी नामी हस्ती को बुलाया जा सकता है।

BRIEF NEWS

युवक पर गोलीबारी मामले में एक आरोपी गिरफ्तार, पिस्तौल जब्त

ROURKELA : बिसरा में मो. राजा पर फायरिंग मामले में एक आरोपित गिरफ्तार हुआ है। वहीं एक पिस्तौल जब्त की गई। जिसका इस्तेमाल कथित तौर पर गोलीबारी में किया गया था। पुलिस ने बताया कि गोलीबारी की वजह अचानक उकसावे की कार्रवाई है। अधिक जानकारी के लिए आरोपी से पूछताछ की जा रही है। गौरतलब है कि मो. इरफान राजा 2 दिन पहले बिसरा में गोली लगने से घायल हो गए थे और अब जेपी अस्पताल में इलाजरत हैं।

नेशनल योगा चैंपियनशिप आयोजित

ROURKELA : ओम योगा सेंटर एवं गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा राउरकेला की ओर से राउरकेला फ्रैंडशिप कप-23 नेशनल योगासन चैंपियनशिप आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि राज्य सरकार के श्रम एवं ईएसआइ मंत्री शारदा प्रसाद नायक थे। इसमें सम्मानित अतिथि यूनिटेक ग्रुप के चेयरमैन नरेश आर्या को मंत्री शारदा नायक के द्वारा सम्मानित किया गया। एसटीपीआइ राउरकेला के डिप्टी डायरेक्टर व प्रभारी अधिकारी ईशू अग्रवाल समेत अन्य अतिथि मौजूद थे। समारोह में महिला वर्ग की चैंपियन को बिमला देवी थेबड़िया मेमोरियल चैंपियंस पुरस्कार प्रदान किया गया। अंत में विजेताओं को सम्मानित किया गया।

एसएसपी ने किया चैंबर में ट्रेड फेयर का उद्घाटन

JAMSHEDPUR : सिंहभूम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के तत्वावधान में आयोजनत दो दिवसीय दीपावली ट्रेड फेयर का उद्घाटन सोमवार को एसएसपी किशोर कौशल में फीता काट कर किया। इस संबंध में चैंबर अध्यक्ष विजय आनंद मूनका ने बताया कि इसबार का दीपावली ट्रेड फेयर बड़े रूप में चैंबर भवन में आयोजित किया गया है। ट्रेड फेयर का उद्देश्य स्थानीय कारीगरों, महिला उद्यमिता एवं स्थानीय व्यवसाय को बढ़ावा देना है।

उत्कर्ष 2023 कार्यक्रम का आयोजन 26 नवंबर को

JAMSHEDPUR : केबुल मुखी बस्ती गोलमुरी के मुखी समाज की एक बैठक स्थानीय सामुदायिक विकास भवन में सचिव गुरुचरण मुखी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में विभिन्न सामाजिक विषय पर चर्चा हुई। बैठक में इस वर्ष भी भगवान बिरसा मुंडा जयंती एवं झारखण्ड स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 26 नवंबर रविवार को गोलमुरी उत्कल समाज हॉल में उत्कर्ष 2023 का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। इसके तहत समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बच्चों के लिए चित्रांकन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले इच्छुक प्रतिभागी निबंधन करा सकते हैं। संचालन कार्तिक मुखी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन रुपेश मुखी ने किया।

बाल सुधार गृह से तीन किशोर फरार

मानगो पुलिस ने चोरी के आरोप में पकड़ा था तीनों को

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के घाघीडीह स्थित बाल सुधार गृह से तीन किशोर फरार हो गए। घटना रविवार देर शाम की है। तीन किशोर के फरार होने की सूचना पर जेल प्रबंधन के बीच हड़कंप मच गया। इसकी सूचना परसुडीह पुलिस को दी गई। मामले में परसुडीह थाना में प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई है। तीनों किशोर को मानगो पुलिस ने चोरी के आरोप में पकड़ा था।

इसके बाद सभी को बाल सुधार गृह में रखा गया था। बताया जाता है कि जेल में रंगाई-पोताई का काम चल रहा है। इसी को लेकर जेल में बांस बल्ली का इस्तेमाल हो रहा है। रविवार को काम नहीं हुआ था। इसी का फायदा उठाकर तीनों किशोर बांस के सहारे सुधार गृह से फरार हो गए।

एचडीएफसी के रिलेशनशिप मैनेजर ने फांसी लगा की आत्महत्या

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के उलीडीह थाना क्षेत्र निवासी 27 वर्षीय सिद्धार्थ राज ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना रविवार रात 10.30 बजे की है। सूचना मिलने पर परिजन उसे फंदे से उतारकर टीएमएच ले गए। वहां जांच के बाद डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस संबंध में सिद्धार्थ के पिता अशोक कुमार के बयान पर अस्वाभाविक मौत का मामला दर्ज किया गया है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि सिद्धार्थ एचडीएफसी बैंक के साकची ब्रांच में रिलेशनशिप मैनेजर के पद पर कार्यरत थे, वे दो साल से रिंकू सिंह के घर में किराए पर रहते थे। रविवार की रात उसने खुद को फांसी लगा ली। सूचना मिलने पर उसे फंदे से उतारकर टीएमएच ले गए।

परसुडीह मत्स्य विभाग कार्यालय परिसर में मिला सड़ा-गला शव

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के परसुडीह थाना अंतर्गत मतस्त विभाग कार्यालय के पीछे झाड़ियों से एक युवक का सड़ाझगला शव बरामद किया गया है. शव काफी गया है जिससे उसकी पहचान मुश्किल है. पुलिस ने शव को जब्त कर उसे पोस्टमार्टम हाउस के शव गृह में रखवा दिया है.

जांच करते पुलिस अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

मृतक ने हाथ में एक कड़ा पहना हुआ है. इधर, शव मिलने मत्स्य विभाग में सुरक्षा की पोल खुल गई है. इससे साफ पता चलता है कि कार्यालय बंद होने के बाद वहां किसी तरह की सुरक्षा के इंतजाम नहीं है. पुलिस ने मृतक की पहचान के लिए आसझपास के लापता लोगों की जांच शुरू कर दी है. इसके अलावा अन्य थानों से भी संपर्क किया जा रहा है. संभावना जताई जा रही है कि युवक की हत्या कर शव को वहां फेका गया है. फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है.

पीजे शिशु मंदिर में बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग का आयोजन

बालकों का व्यक्तित्व विकास जरुरी : अरविंद

PHOTON NEWS CHAIBASA : पद्मावती जैन सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में सोमवार को बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग का आयोजन किया गया। इसमें कक्षा षष्ठ से दशम तक के भैया शामिल हुए। प्रभारी प्रधानाचार्य अरविंद कुमार पांडेय ने बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग की उपयोगिता एवं उसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज बालकों का व्यक्तित्व विकास जरुरी है। इसी के लिए समय-समय पर बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग लगाया जाता है। इसके लिए उनको अध्ययन के साथ विभिन्न प्रकार

की शैक्षणिक गतिविधियों में शामिल किया जाता है। वहीं विद्यालय के अध्यक्ष रामध्यान मिश्र ने बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग को शैक्षणिक गतिविधियों का एक आवश्यक अंग माना।

उन्होंने कहा कि आज बालकों को ज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में दक्ष होना है। बालक पढ़-लिखकर ही महान बनेंगे ऐसी बात नहीं। विभिन्न प्रकार के कलाओं को सीख कर भी बालक महान बनते हैं। कबीर दास बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे फिर भी वे बहुत बड़े संत कवि हुए। यह उनके अधिक पढ़े-लिखे होने का परिणाम नहीं है। इस अवसर पर बालकों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता, कबाड़ से जुगाड, प्रश्नमंच एवं निबंध प्रतियोगिता हुई। जिसमें कबाड़ से जुगाड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कक्षा सप्तम के भैया समीर बिरूवा व कृष्णा कुदादा, कक्षा षष्ठ के प्रदीप व अमृत को द्वितीय स्थान एवं कक्षा षष्ठ के भैया युवराज व शाहील को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है। इस बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग में कुल 186 भैया शामिल होकर प्रशिक्षक व आचार्यों के मार्गदर्शन से लाभान्वित हुए। कार्यक्रम का संचालन संजय कुमार व धन्यवाद ज्ञापन नरेश राम ने किया। शांति मंत्र के उपरांत बालक व्यक्तित्व विकास वर्ग का समापन हुआ। इस वर्ग को सफल बनाने में सुरेश आचार्य,अनिल आचार्य, कक्षा दशम के भैया टीकाराम नायक, रोहन महतो एवं उमेश बारिक आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

आग में झुलसने से पति-पत्नी घायल राउरकेला सरकारी अस्पताल रेफर

PHOTON NEWS ROURKELA : बणई थाना क्षेत्र के एक घर में रहस्यमय ढंग से आग लगने से पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गये। दोनों घायल को बणई अस्पताल लाया गया। उनकी हालत गंभीर होने के कारण उन्हें राउरकेला सरकारी अस्पताल स्थानांतरित कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक, शिवाजी लकड़ा और उनकी पत्नी अनिता लकड़ा बणई कॉलेज के पीछे किराए के मकान में रहते थे। शिवाजी ओडिशा माइनिंग कॉर्पोरेशन में काम करते हैं। अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि दोनों

अस्पताल में भर्ती पती-पत्नी। ● फोटोन न्यूज

किस परिस्थिति में आग में झुलसे। पहले अनीता आग की चपेट में आई, उन्हें बचाने के प्रयास में उनके पति शिवा भी झुलस गये। बणई पुलिस घटना की जांच कर रही है।

स्कूटर में टंगा रुपयों से भरा बैग ले उड़े चोर

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के मानगो थाना अंतर्गत मानगो चौक के पास स्कूटर में टंगे रुपयों से भरा बैग चोर ले उड़े। घटना रविवार रात की है। इस संबंध में पीड़ित मानगो गुणमय कॉलोनी निवासी बैजनाथ अग्रवाल ने मानगो थाना में अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। बैजनाथ मानगो बाजार में आटा चक्की का व्यापार करते है।बैजनाथ ने पुलिस को बताया कि वे रविवार तार दुकान से 2।13 लाख रुपये एक बैग में लेकर घर की ओर निकले थे। मानगो चौक के पास अपनी स्कूटर को सड़क पर खड़ी कर दवाई लेने के लिए

दवा दुकान में गए। वापस लौटे तो पाया कि स्कूटर में टंगा झोला गायब है। आस-पास के लोगों ने बताया कि एक युवक ने उनका बैग चोरी कर लिया है। इधर, शिकायत के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। पुलिस आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच कर रही है।

सिख नौजवान सभा के मानगो यूनियन में फेरबदल जगदीप सिंह प्रधान एवं सुखवंत सिंह बने महासचिव

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : सिख नौजवान सभा मानगो यूनिट में भारी फेरबदल करते हुए जहां सुखवंत सिंह सुक्खू को सिख नौजवान सभा मानगो यूनिट का महासचिव बनाया गया जबकि जगजीत सिंह विंकल को कोषाध्यक्ष और हरप्रीत सिंह अमन को सचिव बनाया गया। इस संबंध में मानगो सिख नौजवान सभा के प्रधान जगदीप सिंह गोल्डी ने बताया कि सभा की एक बैठक सोमवार को रखी गयी थी जिसमे नगरकीर्तन की सेवा को लेकर काफी विचार विमर्श हुआ साथ ही सभा में फेरबदल को लेकर भी चर्चा हुई। जगदीप ने बताया कि प्रचारक हरविंदर सिंह जमशेदपुरी को मुख्य सलाहकार बनाया गया है।

नयी कमिटी में गुरबचन सिंह-चेयरमैन, जगदीप सिंह-प्रधान, महासचिव-सुखवंत सिंह

चुनाव के बाद सिख नौजवान सभा यूनिट के लोग। ● फोटोन न्यूज

सुक्खू, साहेबपाल सिंह एवं गुरपाल सिंह-मीत प्रधान, हरप्रीत सिंह अमन-सचिव, जगजीत सिंह विंकल-कोषाध्यक्ष, अमरिंदर सिंह रोशा-ऑडिटर, हरविंदर सिंह जमशेदपुरी-मुख्य सलाहकार, मनप्रीत सिंह मन्नी एवं प्रभजोत सिंह-सीनियर मीत प्रधान, हरपाल सिंह संधू, गुरविंदर सिंह, शेरा सिंह धामी, रविंदर सिंह प्रिंस, हीरा सिंह, बलविंदर सिंह बब्बू, रवि सिंह, गुरमीत सिंह, मनप्रीत सिंह- सलाहकार नियुक्त किये गए है।

वंचित व जरूरतमंदों को जागरूक कर रहा डालसा

JAMSHEDPUR : झालसा के निदेर्शानुसार अमृत महोत्सव के अवसर पर 100 दिनों तक चलने वाले जागरूकता अभियान एवं लीगल सर्विस वीक के तहत आयुटरिच प्रोग्राम सोमवार को एग्रिको, सीतारामडेरा, बिरसा नगर के मोची बस्ती आदि जगहों में किया गया। इस दौरान मोबाइल वैन के माध्यम से डालसा पीएलवी नागेन्द्र कुमार, सदानंद महतो, आशीष प्रजापति, जोबा रानी बास्के, सुनीता कुमारी एवं सीमा कुमारी ने लोगों को विधिक जानकारी दी। उन्हें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। साथ ही साफ सफाई एवं स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखने की नसीहत दी गयी, ताकि डेंगू व मलेरिया जैसे रोगों से बचा जा सके।

नदी में डूबे लापता नाबालिग का नहीं मिला सुराग, चार नाबालिग बचाए गए

नदी में नाबालिग को ढूंढते । ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : कोयल नदी के हमीरपुर घाट पर डूबे लापता नाबालिग का सुराग अब तक नहीं मिला है। रेस्क्यू टीम और फायर टीम बचाव कार्य में जुटी हुई है। डूब रहे चार अन्य नाबालिगों को स्थानीय लोगों ने बचा लिया। वे फिलहाल ठीक है। राउरकेला प्लांटसाइट थाना अंतर्गत गोपबंधुपाली के पांच नाबालिग नहाने के लिए सेक्टर नंबर 19 स्थित हमीरपुर के कोइल नदी घाट पर गये थे। नहाने के दौरान पांचों लोग पानी में डूब गये। चीख-पुकार सुनकर स्थानीय लोगों ने 4 नाबालिगों को पानी से बचा लिया, जबकि एक नाबालिग पानी की धार में बह गया। लापता नाबालिग अभी तक नहीं मिला है, लापता नाबालिग का परिवार नदी किनारे ही इंतजार कर रहा है। परिवार वालों का रो-रोकर बुरा हाल है।

37वें राष्ट्रीय खेल में मणिपुर को हराकर महिला फुटबॉल का चैंपियन बना ओडिशा

PHOTON NEWS ROURKELA : ओडिशा ने रविवार को गोवा के भास्को के तिलक मैदान में मणिपुर को टाईब्रेकर में 4-2 से हराकर 37वीं राष्ट्रीय खेल महिला फुटबॉल प्रतियोगिता का चैंपियन बन गया। निर्धारित अवधि की समाप्ति पर दोनों टीमें 1-1 से बराबरी पर थीं जिसके बाद टाईब्रेकर का सहारा लिया गया। ओडिशा ने पेनाल्टी में 4-2 से जीत दर्ज की। यह दूसरी बार है जब ओडिशा ने राष्ट्रीय खेलों में महिला फुटबॉल का स्वर्ण पदक जीता है।

पहला हाफ गोल रहित रहने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्टार प्यारी जाक्सा ने 51वें मिनट में ओडिशा

चैपियन बनी ओडिशा की टीम। ● फोटोन न्यूज

को बढ़त दिला दी। हालाँकि, मणिपुर ने 79वें मिनट में नोंगमेइकापम सिबानी देवी के माध्यम से बराबरी हासिल कर ली। टाईब्रेकर में, प्यारी जाक्सा, ग्रेस लालरामपारी हौहनार, बान्या कबिराज और एस लिंडा कॉम ने पहले चार पेनल्टी में गोल किए। मणिपुर ने वांगखेम लिनथोइनगांबी देवी और फानजौबाम निर्मला देवी के माध्यम से लक्ष्य हासिल किया। कांस्य पदक मैच में, हरियाणा ने 36वें मिनट में तन्नू के महत्वपूर्ण गोल की मदद से बंगाल को 1-0 से हरा दिया।

डूबने से हुई सुष्मिता मिंज की संदिग्ध मौत, विसरा जांच रिपोर्ट में हुई पुष्टि

PHOTON NEWS ROURKELA : लोकप्रिय सहायक जिलाधिकारी सुष्मिता मिंज की संदेहास्पद मौत के मामले में जांच अधिकारी डीएसपी वनिता माझी ने सोमवार को अहम जानकारी दी है। उन्होंने कहा, सुष्मिता मिंज की विसरा जांच रिपोर्ट आ गयी है। विसरा रिपोर्ट की जांच एचआरपीसी कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बताया गया है कि सुष्मिता मिंज की मौत डूबने से हुई है। सुष्मिता के मोबाइल से डेटा रिकवरी के लिए इसे एसएफएसआई को भेजा गया है। परिवार की शिकायत के मुताबिक 20 से ज्यादा लोगों से पूछताछ की जा चुकी है। इसमें एचआरपीसी ने सुंदरगढ़ के जिलाधिकारी और राउरकेला के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट से भी

पूछताछ की है।

गौरतलब है कि मामला डीएसपी वनिता माझी द्वारा देखे जाने के बाद सबसे पहले गुर्डिया बीडीओ और सीडीपीओ से पूछताछ की गई थी। बाद में सुष्मिता के पति, पुरुष मित्र, सेंसरी पार्क के तीन सुरक्षा गार्ड और राधिका रीजेंसी होटल के कर्मचारियों से पूछताछ की गई है।

महिला कॉलेज के बीएड विभाग में नव नामांकित छात्राओं के लिए फ्रेशर्स दिवस का आयोजन

बीएड की छात्रा सुमन हेरेंज चुनी गई मिस फ्रेशर्स

PHOTON NEWS CHAIBASA : महिला कॉलेज के बीएड बहुउद्देशीय भवन में सोमवार को बीएड द्वितीय सेमेस्टर की छात्राओं द्वारा सत्र 2023-25 की नव नामांकित छात्राओं के लिए फ्रेशर्स दिवस का आयोजन किया गया। महिला कॉलेज की प्राचार्या डॉ प्रीतिबाला सिन्हा के आदेशानुसार समारोह की शुरूआत बीएड विभाग के विभागाध्यक्ष एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर बीएड विभाग के विभागाध्यक्ष मो

फ्रेशर्स दिवस पर उपस्थित सुमन हेरेंज व कॉलेज के शिक्षक-शिक्षिकाएं। ● फोटोन न्यूज

मोबारक करीम हाशमी ने नव नामांकित सभी छात्राओं का स्वागत किया तथा कहा कि इस तरह के आयोजन से सीनियर तथा जूनियर छात्राओं में आपसी संबंध मजबूत होता है। जूनियर छात्राओं के प्रतिभा का परिचय भी मिलता है।

फ्रेशर्स डे के अवसर पर सीनियर छात्राओं द्वारा नृत्य संगीत तथा एकांकी का आयोजन कर विभाग के शैक्षिक गतिविधियों एवं अनुशासन का परिचय जूनियर को कराया गया। साथ ही जूनियर छात्राओं के बीच में कई गतिविधियाँ करवाई गई। इसके आधार पर सबसे सफलतम छात्रा सुमन हेरेंज को मिस फ्रेशर्स के रूप में चुना गया तथा उन्हें मिस फ्रेशर्स का ताज एवं उपहार देकर प्रोत्साहित किया गया।

इस समारोह में बीएड विभाग के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं डॉ राजीव लोचन नामता, डॉ ओनिमा मानकी, डॉ पुष्पा कुमारी, प्रो बबीता कुमारी, प्रो शीला समद, डॉ अर्पित सुमन टोप्पो, प्रो सुजाता किस्पोट्टा, प्रो प्रीति देवगम, प्रो मदन मोहन मिश्रा, प्रो सितेंद्र रंजन सिंह, प्रो धनंजय कुमार तथा हिंदी के विभाग अध्यक्ष डॉ सुचिता बाड़ा एवं बीएड सेमेस्टर चतुर्थ, सेमेस्टर द्वितीय एवं प्रथम सेमेस्टर की सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

आमो ओडिशा नवीन ओडिशा कार्यक्रम का उद्घाटन कल

बैठक में उपस्थित विधायक शारदा नायक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक बुधवार को होने वाले आमो ओडिशा नवीन ओडिशा कार्यक्रम में विडियो कान्फ्रेस द्वारा भाग लेकर कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इसको लेकर एक बैठक की गई। बैठक में श्रम मंत्री व राउरकेला विधायक सारदा नायक एवं बिरमित्रपुर विधानसभा क्षेत्र के सह-पर्यवेक्षक मनोज सेनापति, जिला अध्यक्ष हालु मुंडारी, राज्य संयुक्त सचिव और एसडीसी, सुंदरगढ़ सदस्य हिमांशु पांडा, बिश्रा, नुआगांव, कुमारमुंडा ब्लॉक के सभी जिला परिषद सदस्य, सरपंच, समिति और बीजू जनता पार्टी के सभी पार्टी के वरिष्ठ, युवा छात्र और महिलाएं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मोबाइल पर मैच देखने के दौरान बाइक ने मारी टक्कर, एक की मौत

SUNDARGARH : लहुणीपाड़ा पुलिस स्टेशन के अंतर्गत गमलेई गांव में तीन दोस्त सड़क के किनारे बैठकर मोबाइल फोन पर क्रिकेट देख रहे थे। तभी अचानक एक बाइक तेज रफ्तार से आई और खेल देख रहे लड़के को टक्कर मार दी। इससे तीन दोस्तों में से एक युवक की मौत हो गई, जबकि बाइक सवार समेत तीन लोग घायल हो गए। घायलों में से एक की हालत गंभीर होने के कारण उसे राउरकेला भेज दिया गया है। भारत और दक्षिण अफ्रीका का मैच चल रहा था तो उत्साहित बच्चे सड़क किनारे बैठकर अपने मोबाइल फोन पर मैच देख रहे थे। इस दौरान ही घटना हुई है।

मंत्री अशोक चौधरी ने भाजपाइयों को बताया महिषासुर, अमित शाह के लिए कह दी यह बात

पटना। बिहार सरकार के भवन निर्माण मंत्री डॉ. अशोक चौधरी ने हाजीपुर में एक विवादित बयान दिया है। उन्होंने भाजपाइयों की तुलना महिषासुर से की। उन्होंने कहा- "दुर्गा मैया से हम आग्रह करते हैं कि हे दुर्गा मइया, आपने जैसे महिषासुर का वध किया था, ठीक उसी तरह भाजपा वालों का भी कल्याण कीजिए।" इतना ही नहीं, उन्होंने मुजफ्फरपुर में रविवार को हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लेकर भी अपनी भड़ास निकाली। कहा- "बिहार में भाजपा काफी कमजोर स्थिति में है, इसलिए अमित शाह यहां बार बार आ रहे हैं। वैसे भी कमजोर खिलाड़ी को ज्यादा प्रैक्टिस करनी पड़ती है।" अमित शाह के मुजफ्फरपुर के दौरे पर भी अशोक चौधरी बौखलाए नजर आये। उन्होंने कहा कि बिहार में भाजपा बहुत कमजोर है। बिहार में भाजपा का अस्तित्व समाप्त हो गया है। इसलिए उनको बहुत बार आना पड़ेगा। एक दो बार पांच बार सात बार नहीं बल्कि नहीं पचासों सौ बार आना पड़ेगा तब जाकर एक दो सीट हाथ लगेगा। अब उन्हें मेहनत लगातार करना पड़ेगा। जब खिलाड़ी कमजोर हो जाता है तब प्रेक्टिस ज्यादा करना पड़ता है,

मैदान में जाना न पड़ेगाअमित शाह को बिहार में लगातार मेहनत करना पड़ेगा।इसलिए अमित शाह आ रहे हैं। अमित शाह जान रहे हैं कि वह बिहार में कमजोर हैं। कमजोर विद्यार्थी को मैदान में ज्यादा प्रैक्टिस करना पड़ता है इसलिए अमित शाह बाकी राज्यों को छोड़कर बिहार ज्यादा आ रहे हैं। मुजफ्फरपुर पहुंचे गृह मंत्री अमित शाह आज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और लालू प्रसाद पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि मैं पलटू बाबू को कहना चाहता हूं कि आपने जनाद्रोह किया। लेकिन, मोदी जी की सरकार ने देश से आतंकवाद को उखाड़ने का काम किया है। राजद और जदयू जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने धारा 370 हटाने पर कश्मीर में खून की नदियां बहने की भी बात कही थी। लालू जी खून की नदियां तो छोड़ो, आपसे अबतक एक कंकड़ तक नहीं चला। अमित शाह ने बिहार में कराये गये जाति जनगणना रिपोर्ट पर भी जमकर बोला। उन्होंने कहा कि यह सर्वे छलावा है। यादव और मुस्लिमों की आबादी को बढ़ाकर दिखाया गया, जबकि अति पिछड़े समाज की संख्या को काफी कम दिखाया है। नीतीश कुमार और लालू प्रसाद ने मिलकर अति पिछड़े समाज को धोखा दिया है।

गेमिंग ऐप के लिए रची खुद के अपहरण की साजिश

नालंदा । एक युवक (21) ने गेमिंग ऐप के लिए खुद के अपहरण की साजिश रची। फिरौती के लिए घर वालों को फोन करने लगा। उसने घरवालों को फोन कर कहा- तुम्हारे बेटे को हमने किडनैप कर लिया है। बेटा चाहिए तो एक लाख रुपए तैयार रखना। परिवार ने पुलिस में शिकायत की। जिसके बाद पुलिस ने 24 घंटे में ही मामले को सुलझा लिया। पुलिस जिस युवक को किडनैपर समझकर पकड़ रही थी, वो वहीं लड़का था, जिसकी किडनैपिंग की शिकायत की गई थी। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि युवक एक गेमिंग ऐप बनाना चाह रहा था। इसके लिए करीब 70 हजार रुपए का खर्च था। इस गेमिंग ऐप के जरिए वो आगे लाखों रुपए कमाना चाहता था। इसी 70हजार के लिए ही उसने अपने अपहरण की प्लानिंग की थी। नरेंद्र कुमार चौधरी ने लहेरी थाने में 3 नवंबर को एक लिखित आवेदन दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि उनके बेटे सिक्कू कुमार (21) का अज्ञात अपराधियों ने अपहरण कर लिया है। 2 नवंबर को उनका बेटा घर से निकला था, जो घर नहीं लौटा। 3 नवंबर की सुबह करीब 11:30 बजे अज्ञात अपराधियों ने फोनकर बताया कि उनके बेटे का उन लोगों ने अपहरण कर लिया है। फिरौती के रूप में उनसे 1 लाख रुपए की मांग की गई। पैसा कब और कहां पहुंचना है। इसके लिए अपहरणकताओं ने 4 नवंबर को फोन कर जानकारी देने की बात कही, तब तक पैसे की व्यवस्था कर लेने की सलाह दी है। सीडीआर/टावर लोकेशन के आधार पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। 4 नवंबर को सुबह 6:30 बजे नरेंद्र कुमार चौधरी को अपराधियों ने फोनकर फिरौती की राशि नवादा जिले के रजौली घाटी में पहुंचने को कहा। अपराधियों ने पैसा लेकर अकेले बस से आने और बस नंबर को व्हाट्सएप करने को कहा। नरेंद्र कुमार चौधरी ने फोन पर मिले सूचना की जानकारी लहेरी थाने को दी। इसके बाद वरीय पदाधिकारी के द्वारा टीम का गठन किया गया।

जो दुष्टों का संहार करती हैं वह माता सीता हैं

बगहा। नगर के अर्जुन विक्रम शाह स्टेडियम में चल रहे नौ दिवसीय राम कथा ज्ञान महायज्ञ के छठे दिन रविवार को चित्रकूट तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने राम जानकी विवाह का वर्णन किया। जैसे ही कथा का शुभारंभ हुआ जय श्री राम के नारे के साथ पूरा वातावरण गूंज उठा । कथा सुनने के लिए करीब 30 हजार से अधिक लोग पहुंचे हुए थे। भारी संख्या में भीड़ जुटने के कारण सुरक्षा प्रबंध संभालने में पुलिस प्रशासन को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। पुलिस प्रशासन के स्तर पर इसको लेकर कई इंतजाम किए गए हैं। कथा के दौरान रामभद्राचार्य महाराज ने जैसे ही सोहर गया पूरा महा भक्ति में हो गया महिलाएं और पुरुष झूमने लगे 'रामजी पहुनवा अइलन, मिथिला नगरिया में ' से

उन्होंने कथा की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि श्री राम कथा में सीता स्वयंवर का प्रसंग बड़ा सुहावना है। सीता जी को पहली बार श्री राम का दर्शन फुलवारी में होता है। भगवान और शक्ति का यह मिलन बड़ा आनंददायी हैं। उन्होंने ने कहा कि भगवान श्री राम गुरु पूजन के लिए पुष्प लेने पुष्प वाटिका में पहुंचते हैं। वही सीता जी गौरी पूजा के लिए पुष्प संचय के लिए पहुंचती हैं। दोनों का पहली बार मिलन होता है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी सीता का अर्थ समझाते हुए कहा कि जो सबको जन्म देती हैं, वह माता सीता हैं। जो सबका पालन करती है वह माता सीता हैं। जो दुष्टों का संहार करती है वह माता सीता हैं। शिव जी का धनुष सिर्फ भगवान श्री राम ही तोड़ पाए। उन्होंने धनुष को मध्य में तोड़ा और सीता जी को अपनी अर्धांगनी बना लिया।

यज्ञ के छठे दिन के यजमान अभय विक्रम शाह, विनय मिश्रा व मुकेश कुमार संयुक्त रूप से रहे। आरती के साथ कथा का समापन हुआ। हरीनगर सुगर मिल की निदेशक नीता पित्ती, ज्योति अग्रवाल , गोपी कृष्ण चांडक, मधुकर राय, पूनम द्विवेदी, भुवनेश्वर शांडिल्य, रविन्द्र श्रीवास्तव, कृष्णा सिंह नेपाली, अभिषेक राय, प्रमोद मिश्रा, जनक साह, प्रमोद साह, अविनाश पांडेय समेत बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल रहें।

मां की देखभाल को लेकर भाइयों के बीच विवाद

समस्तीपुर। जिले के कपूरीग्राम थाने के सिलौत पोखरैरा गांव में रविवार देर शाम बूढी मां की देखभाल को लेकर हुए विवाद के बड़े भाई ने अपने छोटे भाई और उसकी पत्नी को मारपीट कर जख्मी कर दिया। जख्मी अनिल कुमार ठाकुर और उनकी पत्नी को ग्रामीणों के सहयोग से सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घटना को लेकर अनिल ने थाने में अपने बड़े भाई अजय ठाकुर के खिलाफ आवेदन दिया है। घटना के संबंध में अनिल ने बताया कि वह दो भाई हैं। उनकी मां बूढी हैं,

जिनकी देखरेख उनके अलावा उनकी पत्नी और बच्चे किया करते हैं। बड़े भाई को इससे कोई लेना देना नहीं है। रविवार शाम वह अपनी बीमार मां को उठाने के लिए अपने बड़े भाई को कहा इसी बात पर विवाद हो गया। मां को उठाने में मदद के बदले अजय ने अनिल के साथ मारपीट शुरू कर दी। उनके अलावा उनकी भाभी व भतीजा से उनकी पिटाई शुरू कर दी। हल्ला होने पर जब उनकी पत्नी बीच बचाव करने आयी तो उनके साथ भी लोगों ने मारपीट किया। हल्ला होने पर गांव के लोगों की भीड़ जुटी तो लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। साथ ही दंपत्ति को उपचार के लिए सदर अस्पतान पहुंचाया। जहां दोनों का उपचार चल रहा है।

कपूरीग्राम थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने कहा कि बूढी मां की देखरेख के विवाद में भाईयों के बीच मारपीट की घटना हुई है। अगर पीड़ित द्वारा थाने में आवेदन दिया जाएगा तो प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

विधानसभा का शीतकालीन सत्र, विपक्ष ने लॉ-एंड-ऑर्डर पर घेरा

इजराइल-फिलिस्तीन का मुद्दा भी उठा; लेफ्ट ने हमास का समर्थन किया

पटना। बिहार विधानमंडल के शीतकालीन सत्र के पहले दिन लॉ-एंड-ऑर्डर को लेकर विपक्ष जमकर हंगामा कर रहा है। विपक्ष ने जॉब में घोटाले का भी आरोप लगाकर भी सरकार को घेरा है। इजराइल और फिलिस्तीन का मुद्दा भी विधानसभा में उठा है। विधानसभा में जीएसटी संशोधन आदेश विधेयक पेश किया गया। वित्त मंत्री ने 2023-24 का द्वितीय अनुपूरक व्यय विवरण पेश किया है। दिवगंत सदस्यों के श्रद्धांजलि देने के दौरान मौन धारण करने से पहले लेफ्ट विधायक जमकर हंगामा करने लगे। लेफ्ट के विधायक इजरायल से हमला रोकने की मांग कर रहे थे। सीएम नीतीश कुमार ने भाकपा(माले) विधायक महबूब आलम को समझाया। विधानसभा की कार्यवाही मंगलवार 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। सदन के बाहर माले विधायक ने कहा कि फिलिस्तीन की आजादी के पक्ष में भाकपा माले का प्रोटेस्ट हो रहा है। इजराइल महिलाओं, बच्चों, अस्पतालों को नहीं छोड़ रहा। हमारी मांग है कि गजा पर हमला तत्काल बंद हो। मोदी सरकार पर हमला करते हुए लेफ्ट पार्टी के विधायक ने कहा कि केंद्र ने अपनी विदेश नीति को अमेरिका के आगे गिरवी रख दिया है। सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले बीजेपी विधायक हरिभूषण बचौल ने कहा कि बिहार में कानून-व्यवस्था फेल है। तुष्टिकरण की राजनीति की जा रही है। लैंड

जिहाद का खेल चल रहा है। सरकार धर्मांतरण, जातिवाद का जहर घोल रही है। प्रदेश में भ्रष्टाचार चरम पर है। वहीं तेजस्वी के बयान (जिसमें उन्होंने कहा था कि बीजेपी तलवार बांटती है, हम कलम बांटते हैं) पर कहा कि सरकार कलम बांटती है या लाठी में तेल पिलवा कर मरवाती है, ये सब जानते हैं। तेजस्वी के भूमिहार वाले बयान पर उन्होंने कहा कि इलेक्शन पास आया है तो तेजस्वी ऐसे ही छलने का काम करेंगे। बीजेपी जात की राजनीति नहीं करती है, जमात की राजनीति करती है। रोहतास के डेहरी से राजद विधायक फतेह बहादुर सिंह ने कहा कि वो दुर्गा और हिंदू देवताओं पर दिए अपने बयान पर आज भी कायम हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला है कि रामायण के सभी पात्र काल्पनिक हैं। हिंदू धर्म ग्रंथों को भगवान ने नहीं, बल्कि इंसानों ने लिखा है। डेहरी विधायक के जवाब में बीजेपी विधायक नीरज सिंह बबलू ने कहा कि ये इनलोगों को अपनी जमीन खिसकती हुई दिखाई दे रही है। राजनीति में इन लोगों को लगने लगा है कि ना हिंदू में है, ना मुसलमान में हैं, इसलिए बेचैन हैं। बेचैन होकर इस तरह की बयानबाजी कर रहे हैं। बता दें कि यह सत्र 10 नवंबर तक चलेगा। 5 दिनों के इस सत्र को काफी अहम माना जा रहा है। इस दौरान सरकार कई महत्वपूर्ण बिल पेश करेगी। इसके साथ ही सत्र के दौरान सरकार की ओर से जातीय गणना की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी जाएगी। सत्र की शुरूआत से पहले विधानसभा पहुंचे मुख्यमंत्री का अध्यक्ष ने स्वागत किया। उन्होंने सीएम को एक बुके भी दिया। संभावना है कि सरकार की ओर से आरक्षण का कोटा बढ़ाने से संबंधित प्रस्ताव रखेगी। जानकारी के मुताबिक, सरकार आरक्षण का कोटा 50% से बढ़ाकर 70-75% करने का प्रस्ताव पारित कर केंद्र को भेज सकती है। सत्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए विधानसभा अध्यक्ष ने सभी दलों के नेताओं के साथ बैठक की है। उन्होंने सभी से सदन की सुचारु रूप से चलाने की अपील की है। उन्होंने कहा है कि सत्र छोटा है, लेकिन काफी गंभीर होगी। वहीं, बीजेपी नेता संजय मयूख ने कहा कि राज्य में बढ़ते क्राइम, भ्रष्टाचार पर तीव्र प्रहार करेंगे। उन्होंने कहा कि जातिगत गणना के कारण राज्य के पिछड़ा और अतिपिछड़ा वर्ग को घाटा हुआ है। सीएम नीतीश कुमार तुष्टीकरण की नीतियों के कारण कुछ विशेष लोगों को विशेष लाभ दिया गया है। उन्होंने कहा कि इसके खिलाफ भी भरपूर खुलासा करेंगे। उन्होंने कहा कि ये सरकार अटकाने, भटकाने और लटकाने वाली सरकार है इसलिए सदन के अंदर हम इनका भरपूर विरोध करेंगे। शीतकालीन सत्र के पहले दिन नए चुने गए प्रतिनिधि शपथ ग्रहण करेंगे। इसके साथ ही वित्तीय वर्ष 2023-24 का सेकंड सप्लीमेंट्री बजट सदन के पटल पर रखा जाएगा। इसके बाद शोक संवेदना व्यक्त कर पहले दिन की कार्यवाही खत्म हो जाएगी। सत्र के दूसरे और तीसरे दिन राजकीय विधेयक और राजकीय कार्य निपटाए जाएंगे। 9 नवंबर को वित्तीय वर्ष 2023-24 के सेकंड सप्लीमेंट्री बजट पर चर्चा होगी। सदन के अंतिम दिन 10 नवंबर को गैर सरकारी सदस्यों के काम निपटाए जाएंगे। गैर सरकारी संकल्प इसी दिन पारित किए जाएंगे। जातीय सर्वे के मुताबिक बिहार में सबसे ज्यादा आबादी 36.01% अति पिछड़ों की है। वहीं, पिछड़ा वर्ग 27.12%, अनुसूचित जाति की आबादी 19.65%, अनुसूचित जाति की आबादी 1.68% और सामान्य जाति की आबादी 15.25% है।

अब नहीं रुलाएगी प्याज: एक सप्ताह के अंदर प्याज की कीमतों में होगी गिरावट

पटना। प्याज की कीमतें लगातार आसमान छू रही हैं। उत्तर बिहार की सबसे बड़ी मंडी गुलाबबाग में भी प्याज की कीमत 45 रुपए किलो है। वहीं खुदरा बाजार में इसकी कीमत 60 रुपए है। 20 रुपया मिलने वाली प्याज सीधे 60 रुपए बिकने लगी। प्याज मंडी व्यापारी मुकेश जायसवाल, बबलू चौधरी ने बताया कि पूर्णिया में प्याज की उपलब्धता पूरी तरह से हो गई है। पूर्णिया में महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान, अलवर, नासिक इंदौर सहित अन्य राज्यों से प्याज आसानी से आ रहा है।आने वाले एक सप्ताह में प्याज की कीमत फिर पहले की तरह 25 से 30 रुपए और सस्ती और सामान्य हो जाएगी। उन्होंने कहा कि पूर्णिया के गुलाब बाग मंडी में तकरीबन रोजाना 600 टन प्याज बेची जाती है। इस मंडी से बिहार, बांग्लादेश, नेपाल, असम सहित अन्य जगह भी प्याज भेजी जाती है। उत्तर बिहार के सबसे बड़ी व्यावसायिक मंडी पूर्णिया के गुलाबबाग के व्यापारी मुकेश जायसवाल, बबलू चौधरी, बिंदेश्वरी यादव, विष्णु एवं सुनील जायसवाल सहित अन्य मंडी के व्यापारियों ने बताया कि एक सप्ताह पूर्व प्याज का रेट आसमान छु रहा था। लोग प्याज खरीदने से डरते थे, लेकिन अब राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि गुलाबबाग मंडी की अगर बात की जाए तो अधिकतम दर प्याज की 3 नवंबर को पूर्णिया के गुलाबबाग मंडी में 4 हजार रुपए प्रति क्विंटल रहा।

संक्षिप्त डायरी

सीतामढ़ी में डूबने से परिवार के 3 बच्चों की मौत

सीतामढ़ी । एक ही परिवार के तीन बच्चों की गड्ढे में डूबने से मौत हो गई। तीनों चिमनी के पास स्थित गड्ढे से मिट्टी निकालने गए थे। अचानक पैर फिसलने से एक के बाद एक तीनों गड्ढे में गिर गए और पानी में डूब गए। तीनों की एक साथ अर्थी को देख पूरे गांव में मातम और सन्नाटा फैल गया। घटना में से दो सगे भाई बहन और एक चचेरी बहन की मौत हुई है। घटना जिले के बाजपट्टी थाना क्षेत्र के बर्री गांव स्थित सरेह की है। मृतकों की पहचान बर्री गांव निवासी अशोक ठाकुर की बेटी सोनी कुमारी (11), आदित्य कुमार (10) और जितेन्द्र ठाकुर की बेटी लाडली कुमारी (12) के रूप में की गई है। घटना की जानकारी के बाद घटनास्थल के पास सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ गई। सरेह में भैंस चराने जा रहे लोगों की नजर डूब रहे बच्चों पर पड़ी। उन लोगों ने घटना की जानकारी गांव के लोगों को दी। जिसके बाद जुटे लोगों ने तीनों बच्चों को गड्ढे से बाहर निकाला, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। मृतका की मां शिला देवी ने ईश्वर को कोसते हुए कहा कि मैंने आपका क्या बिगाड़ा था। मृतका लाडली के पिता जितेंद्र ठाकुर सैलून चलाकर परिवार का भरण पोषण करते हैं। मृतक सोनी और आदित्य दोनों बाजितपुर गांव के एक कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ते थे। रविवार की छुट्टी होने के कारण दोनों घर पर थे। पिता अशोक ठाकुर सहित सभी परिजनों को मलाल है कि शायद स्कूल खुला रहता तो यह दिन नहीं देखना होता। घटना की जानकारी के बाद बाजपट्टी थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर तीनों बच्चों के शव को पोस्टमार्टम के लिए सीतामढ़ी सदर अस्पताल में भेज दिया और मामले की जांच में जुट गई।

बरनवाल महिला समिति का संगठन विस्तार

नवादा। जिले की वारसलीगंज में बरनवाल महिला समिति ने कमेटी के गठन के लिए बैठक की। बैठक की अध्यक्षता नवादा जिला महिला सेल की अध्यक्ष माधुरी बरनवाल के देखरेख में की गई। माधुरी बरनवाल ने कहा कि वारसलीगंज के महिला अध्यक्ष नीलम बरनवाल, सचिव सावित्री बरनवाल को पद पर चयनित किया गया है। 18 सदस्यों को भी जिम्मेदारी दी गई है। बैठक में सचिव रेखा रानी, चीनू बरनवाल, पुनीता बरनवाल, रूबी बरनवाल आदि की देखरेख में संगठन का विस्तार किया गया। नई जिम्मेदारी मिलते ही अध्यक्ष ने कहा कि महिलाएं हर समय एक बेहतर काम करतीं हैं। जिम्मेदारी मिली है। बेहतर काम कर के भी दिखाएंगे। महिला संगठन बेहतर कार्य करता है। इस कार्य के माध्यम से लोगों की मदद भी की जाती है। महिलाओं के प्रति रोजगार से लेकर अन्य कामों तक लोगों की मदद करने का काम महिला बरनवाल समिति करती है। संगठन की महिलाएं लोगों की मदद के लिए जागरूकता अभियान भी चलातीं हैं। लोगों को जागरूक करने का काम संगठन की महिलाएं करतीं हैं। गरीब और सहायक लोगों के बीच समय-समय पर सामग्री का भी वितरण संगठन की महिलाएं कतरीं हैं। ठंड की आहट आते ही महिलाओं ने लोगों के बीच सामग्री वितरण करने का निर्णय लिया है।

बॉडीगार्ड के सामने बालू कारोबारी की हत्या

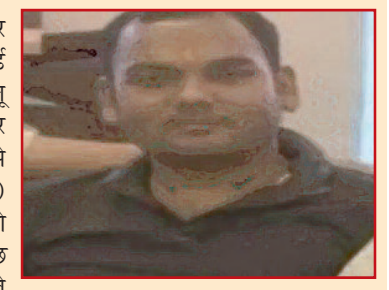

पटना । स्कॉर्पियो सवार अपराधियों ने बॉडीगार्ड के सामने बालू कारोबारी को गोली मार दी। तीन गोली लगने से देवराज यादव(40) की मौके पर ही मौत हो गई। बॉडीगार्ड कुछ समझ पाता उससे पहले ही अपराधी गोली मारकर हथियार लहराते हुए स्कॉर्पियो से फरार हो गए। वारदात पालीगंज के रानीतालब थाना क्षेत्र के कंपा पुल के पास हुई है। अपराधियों ने रविवार की देर रात घटना को अंजाम दिया है। बालू कारोबार से जुड़े देवराज यादव (40) उर्फ लालू को अपराधियों ने एक के बाद एक 3 गोलियां मारीं। वारदात के बाद अपराधियों की गिरफ्तारी को लेकर छापेमारी चल रही है, लेकिन अब तक पुलिस को कोई बड़ा सुराग नहीं मिला पाया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया है। पालीगंज अनुमंडल के बेरर गांव के देवराज फॉर्च्यूनर गाड़ी से घर की ओर जा रहे थे। कनपा पुल के पास गाड़ी रोककर जैसे ही उतरा, पूर्व से घात लगाए अपराधियों ने बालू कारोबारी पर गोलीबारी कर दी। देवराज के सिर और सीने में तीन गोलियां मारी गई हैं। बालू कारोबारी का बॉडीगार्ड साथ में था, लेकिन वह कुछ समझ पाता। इससे पहले ही घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी काले रंग की स्कॉर्पियो से फरार हो गए। आनन- फानन में देवराज को अस्पताल ले जाया गया। वहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस आसपास में लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है । कुछ दिनों पहले गांव में हुई मारपीट में भी देवराज घायल हुआ था। इसके बाद अपनी सुरक्षा के लिए देवराज ने लाइसेंसी हथियार और बॉडीगार्ड लिया था। पालीगंज डीएसपी प्रीतम कुमार ने बताया कि बालू से जुड़े एक कारोबारी की देर रात गोली मारकर का हत्या कर दी गई है। फिलहाल बालू घाट से जुड़े विवाद को लेकर हत्या की बात सामने आ रही है। जांच के बाद ही मामले का खुलासा हो पाएगा। लिखित आवेदन के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बेतिया निगम कार्यालय में कूड़ा गिराने वालों पर होगा केस

बेतिया। नगर निगम कार्यालय परिसर में बीते दो नवंबर को ट्रैक्टर ट्रेलर से कूड़ा गिराने और गिरवाने वालों के खिलाफ कार्रवाई निगम प्रशासन ने शुरू कर दी है। डीएम दिनेश कुमार राय की सख्ती के बाद नगर आयुक्त शंभू कुमार ने कचरा गिराने वालों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया है। निगम कार्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरे से उनकी पहचान कराई गई है। नगर आयुक्त ने घारी प्रभारी शम्स तबरेज आलम को पत्र भेजा है। भेज गए पत्र में नगर आयुक्त ने कहा है कि नगर निगम कार्यालय परिसर में कूड़ा गिराने वालों की सीसीटीवी कैमरे से पहचान कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराएं, ताकि

दोबारा कूड़ा-कचरा न गिराए। नगर आयुक्त ने कहा है कि महापौर से भी इस बाबत निर्देश मिला है। अगर कोई जनप्रतिनिधि शामिल है तो उनकी पहचान कर उनके खिलाफ भी एफआईआर कराएं। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने हजारी पशु मेला ग्राउंड में कूड़ा गिराने पर रोक लगा दी थी। इस रोक से नाराज कुछ पार्षदों ने सांकेतिक विरोध के तौर पर वार्ड से निकले कूड़े नगर निगम कार्यालय परिसर में गिरवा दिया था। हालांकि बाद में सफाई एजेंसी ने कूड़ा हटाया। विगत 28 अक्टूबर को महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने हजारी पशु मेला ग्राउंड में कचरा गिराने पर रोक लगाई थी। रोक के एक दिन बाद हजारी पशु मेला ग्राउंड में कचरा गिराते देखे जाने पर लोगों ने विरोध जताया था। ट्रैक्टर ट्रेलर को पड़कर थाना लाया गया था। हालांकि बाद में उसे छोड़ दिया गया था। नगर से प्रतिदिन करीब तीन सौ टन कचरा निकलता है। घारी प्रभारी का कहना है कि दीपावली के अवसर पर घरों की सफाई के कारण कचरे की मात्रा करीब डेढ़ गुना बढ़ जाता है। कचरा गिराने के लिए पिपरा में डंपिंग जोन बनाया गया है। आयुक्त की ओर से महापौर को भेजी गई फाइल में कचरा गिराने वाले पार्षदों का नाम दर्ज है। इसमें चार पार्षद व तीन पार्षद प्रतिनिधि कचरा गिराने के मामले में फंस सकते हैं। इनपर कार्रवाई के लिए नगर आयुक्त ने अनुशंसा के लिए मेयर को फाइल भेजी है।

संतान की मंगलकामना का पर्व 'अहोई अष्टमी'

हिन्दू समुदाय में करवा चौथ के चार दिन पश्चात और दीपावली से ठीक एक सप्ताह पहले 'अहोई अष्टमी' का पर्व मनाया जाता है। प्रायः वही स्त्रियां यह त्योहार मनाती हैं जिनके संतान होती है। किन्तु अब यह व्रत निसंतान महिलाएं भी संतान की कामना के लिए करती हैं। अहोई अष्टमी व्रत प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अष्टमी को किया जाता है और इस वर्ष यह पर्व 05 नवंबर को मनाया जा रहा है। स्त्रियां दिनभर व्रत रखती हैं। सायंकाल से दीवार पर आठ कोष्ठक की पुतली लिखी जाती हैं। उसी के पास सेह और उसके बच्चों के चित्र भी बनाए जाते हैं। पृथ्वी पर चौक पूरकर कलश स्थापित किया जाता है। कलश पूजन के बाद दीवार पर लिखी अष्टमी का पूजन किया जाता है। फिर दूध-भात का भोग लगाकर कथा कही जाती है। आधुनिक युग में अब बहुत सी महिलाएं दीवारों पर चित्र बनाने के लिए बाजार से अहोई अष्टमी के रेडीमेड चित्र खरीदकर उन्हें पूजास्थल पर स्थापित कर उनका पूजन करती हैं। कार्तिक कृष्ण अष्टमी को महिलाएं अपनी संतान की दीर्घ आयु तथा उनके जीवन में समस्त संकटों या विघ्न-बाधाओं से उनकी रक्षा के लिए यह व्रत रखती हैं। कुछ स्थानों पर इस दिन धोबी मारन लीला का भी मंचन होता है, जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा कंस द्वारा भेजे गए धोबी का वध करते प्रदर्शन किया जाता है। अहोई माता के रूप में अपनी-अपनी पारिवारिक परम्परानुसार लोग माता पार्वती की पूजा करते हैं। अहोई अष्टमी व्रत के संबंध में कुछ कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी एक कथानुसार प्राचीन काल में किसी नगर में एक साहूकार रहता था। उसके सात लड़के थे। दीपावली से पहले साहूकार की स्त्री घर की लीपा-पोती हेतु मिट्टी लेने खदान में गई और कुदाल से मिट्टी खोदने लगी। दैव योग से उसी जगह एक सेह की मांद थी। सहसा उस स्त्री के हाथ से कुदाल सेह के बच्चे को लग गई, जिससे सेह का बच्चा तत्काल मर गया। अपने हाथ से हुई हत्या को लेकर साहूकार की पत्नी को बहुत दुख हुआ परन्तु अब क्या हो सकता था? वह पश्चाताप करती हुई शोकाकुल अपने घर लौट आई। कुछ दिनों बाद उसके बेटे का निधन हो गया। फिर अकस्मात दूसरा, तीसरा और इस प्रकार वर्ष भर में उसके सभी बेटे मर गए। महिला अत्यंत व्यथित रहने लगी। एक दिन उसने अपने आस-पड़ोस की महिलाओं को विलाप करते हुए बताया कि उसने जानबूझकर कभी कोई पाप नहीं किया। हां, एक बार खदान में मिट्टी खोदते हुए अनजाने में उससे एक सेह के बच्चे की हत्या अवश्य हुई है और तत्पश्चात मेरे सातों बेटों की मृत्यु हो गई। यह सुनकर पास-पड़ोस की वृद्ध औरतों ने साहूकार की पत्नी को दिलासा देते हुए कहा कि यह बात बताकर तुमने जो पश्चाताप किया है, उससे तुम्हारा आधा पाप नष्ट हो गया है। तुम उसी अष्टमी को भगवती माता की शरण लेकर सेह और सेह के बच्चों का चित्र बनाकर उनकी आराधना करो और क्षमा-याचना करो। ईश्वर की कृपा से तुम्हारा पाप धुल जाएगा। साहूकार की पत्नी ने वृद्ध महिलाओं की बात मानकर कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को उपवास व पूजा-याचना की। वह हर वर्ष नियमित रूप से ऐसा करने लगी। बाद में उसे सात पुत्रों की प्राप्ति हुई। तभी से अहोई व्रत की परम्परा प्रचलित हो गई। अहोई व्रत के संबंध में एक और कथा प्रचलित है। बहुत समय पहले झांसी के निकट एक नगर में चन्द्रभान नामक साहूकार रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रिका बहुत सुंदर, सर्वगुण सम्पन्न, सती साध्वी, शीलवन्त, चरित्रवान तथा बुद्धिमान थी। उसके कई पुत्र-पुत्रियां थे परन्तु वे सभी बाल अवस्था में ही परलोक सिधार चुके थे। दोनों पति-पत्नी संतान न रह जाने से बहुत व्यथित रहते थे। वे दोनों प्रतिदिन मन ही मन सोचते कि हमारे मर जाने के बाद इस अपार धन-सम्पदा को कौन संभालेगा? एक बार उन दोनों ने निश्चय किया कि वनवास लेकर शेष जीवन प्रभु-भक्ति में व्यतीत करें। यही विचार कर दोनों अपना घर-वार त्यागकर वन की ओर चल दिए। रास्ते में जब थक जाते तो रुककर थोड़ा विश्राम कर लेते और फिर चल पड़ते। इस प्रकार धीरे-धीरे वे बद्रिका आश्रम के निकट शीतल कुण्ड जा पहुंचे। वहां पहुंचकर दोनों ने निराहार रहकर प्राण त्यागने का निश्चय कर लिया। निराहार व निर्जल रहते हुए जब उन्हें सात दिन हो गए तो आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों प्राणी अपने प्राण मत त्यागो। यह सब दुख तुम्हें तुम्हारे पूर्व पापों से भोगना पड़ा है। यदि तुम्हारी पत्नी कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजन करे तो अहोई देवी प्रसन्न होकर साक्षात दर्शन देंगी। तुम उनसे दीर्घायु पुत्रों का वरदान मांग लेना। व्रत के दिन तुम राधाकुण्ड में स्नान करना। चन्द्रिका ने आकाशवाणी के बताए अनुसार विधि-विधान से अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजा-अर्चना की और तत्पश्चात राधाकुण्ड में स्नान किया। जब वे स्नान इत्यादि के बाद घर पहुंचे तो उस दंपति को अहोई माता ने साक्षात दर्शन देकर वर मांगने को कहा। साहूकार दंपति ने हाथ जोड़कर कहा, "हमारे बच्चे कम आयु में ही परलोक सिधार जाते हैं। आप हमें बच्चों की दीर्घायु का वरदान दें। "तथास्तु! कहकर अहोई माता अंतर्ध्यान हो गईं। कुछ समय के बाद साहूकार दंपति को दीर्घायु पुत्रों की प्राप्ति हुई और वे सुखपूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे। देवी पार्वती को अनहोनी को होनी बनाने वाली देवी माना गया है, इसलिए अहोई अष्टमी पर माता पार्वती की पूजा की जाती है और संतान की दीर्घायु एवं सुखमय जीवन की कामना की जाती है।

भारत को छद्म सेकुलरवाद से मुक्ति चाहिए

ANALYSIS

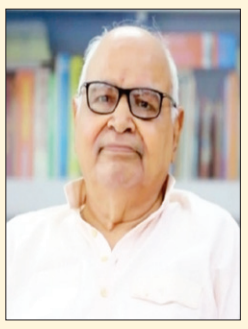

हृदयनारायण दीक्षित

सरकार ने प्रस्तावित कार्यक्रम के मार्ग में मस्जिद और चर्च होने के अमान्य तर्क दिए और कार्यक्रम की अनुमति देने से इनकार किया। मद्रास उच्च न्यायालय ने इस कृत्य पर कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा है कि, 'संघ को अनुमति देने से इनकार करने का निर्णय संविधान की पंथनिरपेक्ष नीति के विरुद्ध है और लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों के भी असंगत है।' सरकार का निर्णय मौलिक अधिकारों के भी विरुद्ध है। स्टालिन सरकार ने सेकुलरवादवाद की आड़ में पिछले वर्ष भी ऐसा ही किया था। तब संघ ने गांधी जयंती और भारतीय स्वतंत्रता के 75 साल पूरे होने के अवसर पर कार्यक्रम करने की अनुमति मांगी थी। सरकार ने अनुमति नहीं दी। संघ ने तब भी न्यायालय की शरण ली थी। वस्तुतः स्टालिन सरकार भारतीय सांस्कृतिक विचार का विरोध करती है। बेशक अपनी विचारधारा का प्रसार करना सबका अधिकार है। लेकिन स्टालिन सरकार सनातन परम्परा को मलेरिया, डेंगू, कोरोना आदि बताती है।

अपने विवेक और विश्वास के आधार पर जीना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। भारतीय संविधान (अनु. 19) में विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठन बनाने व देश में अबाध संचरण के मौलिक अधिकार हैं। लेकिन छद्म सेकुलरवादी राष्ट्र राष्ट्रीयता व संवैधानिक मूल्यों पर आक्रामक रहते हैं। हाल में तमिलनाडु की स्टालिन सरकार ने सेकुलरिज्म के नाम पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पथ संचरण कार्यक्रम पर रोक लगाई थी। सरकार ने प्रस्तावित कार्यक्रम के मार्ग में मस्जिद और चर्च होने के अमान्य तर्क दिए और कार्यक्रम की अनुमति देने से इनकार किया। मद्रास उच्च न्यायालय ने इस कृत्य पर कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा है कि, 'संघ को अनुमति देने से इनकार करने का निर्णय संविधान की पंथनिरपेक्ष नीति के विरुद्ध है और लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों के भी असंगत है।' सरकार का निर्णय मौलिक अधिकारों के भी विरुद्ध है। स्टालिन सरकार ने सेकुलरवादवाद की आड़ में पिछले वर्ष भी ऐसा ही किया था। तब संघ ने गांधी जयंती और भारतीय स्वतंत्रता के 75 साल पूरे होने के अवसर पर कार्यक्रम करने की अनुमति मांगी थी। सरकार ने अनुमति नहीं दी। संघ ने तब भी न्यायालय की शरण ली थी। वस्तुतः स्टालिन सरकार भारतीय सांस्कृतिक विचार का विरोध करती है। बेशक अपनी विचारधारा का प्रसार करना सबका अधिकार है। लेकिन स्टालिन सरकार सनातन परम्परा को मलेरिया, डेंगू, कोरोना आदि बताती है। सनातन परम्परा व संवैधानिक आदर्शों का अपमान करती है और इस सब के लिए छद्म सेकुलरवाद का सहारा लेती है। भारत के अधिकांश दल सेकुलरवाद के बहाने बहुसंख्यकों की भावना पर आक्रामक रहते हैं। सेकुलरवाद भारतीय विचार नहीं है। यह विचार यूरोप से आया है। इस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष भौतिक या सांसारिक होता है। इस विचार में आस्था के सभी केन्द्र गैरसेकुलर हैं। सेकुलरवाद की परिभाषा में सभी आस्थाएं और विश्वास गैरसेकुलर हैं। ईश्वर भी प्रत्यक्ष भौतिक संरचना नहीं है। ईश्वर प्रत्यय है और विश्वास है। इसलिए सेकुलर नहीं है। सर्वोच्च न्यायपीठ ने हिन्दुत्व को भारत की जीवन पद्धति बताया था कि, 'हिन्दुत्व किसी 'रिलीजन' या उपासना-पद्धति का नाम नहीं है। भारत की सुदीर्घ काल से चली आ रही संस्कृति और उस पर आधारित जीवन पद्धति का नाम है। हिन्दुत्व भारतीयता का पर्यायवाची है।' लेकिन सेकुलरवाद में हिन्दू और हिन्दुत्व साम्प्रदायिक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दुनिया का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन है। सेकुलर चश्मे में वह साम्प्रदायिक है लेकिन घोर साम्प्रदायिक मुस्लिम लीग, एआईएमआईएम सेकुलर हैं। इस विचार में ईसाईयत और इस्लामी विश्वास सेकुलर हैं। सार्वजनिक कार्यक्रमों में दीप प्रज्जवलन और संस्कृत के सुभाषित पढ़ना साम्प्रदायिक है। सरस्वती वंदना भी साम्प्रदायिक है। सभी सांस्कृतिक प्रतीक साम्प्रदायिक हैं। इनका विरोध सेकुलरवाद है। वन्दे मातरम् भी सेकुलरवादियों के निशाने पर रहा है। इस्लामी परम्परा के रोजा कार्यक्रमों में राजनेताओं का जाना सेकुलर है। रामनवमी और जन्माष्टमी उत्सवों में हिस्सा लेना साम्प्रदायिक है। सेकुलरवादियों ने योग को भी साम्प्रदायिक बताया था। वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संयुक्त राज्य अमीरात गए थे। वे वहां की विशाल मस्जिद भी गए। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा सफल रही। उनकी प्रशंसा हुई लेकिन सेकुलर दलतंत्र में दिलचस्प प्रतिक्रियाएं हुईं। प्रधानमंत्री की सहजता को सेकुलर दिखाई देने की कोशिश कहा गया था। मंदिर, मस्जिद या चर्च आदि उपासना केन्द्रों में जाने के प्रायः दो कारण हो सकते हैं। पहला अपनी आस्था विश्वास के अनुसार मंदिर, गुरुद्वारा, मस्जिद या चर्च जाना। यह स्वाभाविक है। दूसरा अपनी आस्था से भिन्न समुदायों के प्रति आदर भाव व्यक्त करने के लिए भी लोग उपासना स्थलों पर जाते हैं। लेकिन छद्म सेकुलरवाद ने मस्जिद जाने का तीसरा कारण बताया कि, मस्जिद जाने से सेकुलर होने की गारंटी है। एक सीनियर मुफ्ती कादरी ने दयनीय टिप्पणी की थी कि, 'प्रधानमंत्री होने के बाद मोदी ने अपने पद की जिम्मेदारियां ठीक से समझ लीं।' मुफ्ती की मानें तो मोदी जी मस्जिद न जाते तो गैर जिम्मेदार थे। मुफ्ती के अनुसार मस्जिद जाना संवैधानिक फर्ज निभाने के लिए जरूरी है। ऐसी ही हास्यास्पद टिप्पणी मुस्लिम विकास परिषद के चेयरमैन ने भी की, 'मस्जिद जाने की यह घटना स्टंट है। मोदी वाकई भारत को सेकुलर सिद्ध करना चाहते थे तो उन्हें अबुधाबी से पहले भारत की किसी मस्जिद में जाना चाहिए था।' टिप्पणी का भाव है कि, 'भारत को सेकुलर सिद्ध करना हो तो मस्जिद जाइए और स्वयं भी सेकुलर हो जाइए। नहीं जाते तो साम्प्रदायिक बने रहिए। छद्म सेकुलरवाद में सभी राष्ट्रीय प्रतीक साम्प्रदायिक हैं और अलगाववाद के प्रतीक सेकुलर हैं। मजेदार बात यह है कि इस्लामी राजनीतिक विचारधारा सेकुलरवाद नहीं मानती। ऐसी राजनीति राष्ट्रवाद को भी बुरा मानती है। इस्लामी विचार के विद्वान डॉ. मुशीरुल हक ने लिखा है, 'मुसलमान का यकीन है कि यह ईश्वरीय ज्ञान (इस्लामी मजहब) सारी दुनिया में फैलाना है। इसलिए वह उन लोगों को सम्मान की दृष्टि नहीं देख सकता जो कहते हैं कि सभी धर्म सच्चे हैं।' मौलाना मौदूदी इस्लाम और नेशनलिज्म को परस्पर विरोधी मानते। व्यावहारिक सेकुलर राजनीति में सेकुलरवाद का अर्थ अल्पसंख्यकवाद है और अल्पसंख्यकवाद का अर्थ मजहबी तुष्टीकरण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में तुष्टीकरण को विकास विरोधी बताया है। छद्म सेकुलरवादी भारत को सांस्कृतिक राष्ट्र नहीं मानते। संघ इस देश को सांस्कृतिक राष्ट्र मानता है। राष्ट्र का परम वैभव संघ का ध्येय है। संघ पाकिस्तानी हमले (1965) में सरकार के साथ था। तत्कालीन संघ प्रमुख माधव सदाशिव गोलवलकर ने सितम्बर 1965 में वक्तव्य दिया कि, 'युद्ध थोपा गया है। परिस्थिति गंभीर है। हम सब को नई जिम्मेदारियों का वहन करना होगा। शासन उन्हें निभाएगा। लेकिन उस पर काफी भार होगा। मैं देशवासियों और संघ के स्वयंसेवकों का आह्वान करता हूं कि सरकार का समर्थन करें।' हिन्दू सभी पंथों का सम्मान करते हैं। भारत में सभी आस्था विश्वासी मजे से रहते हैं। हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध और पारसी सहअस्तित्व में हैं। राष्ट्रीय संकट की प्रत्येक घड़ी में संघ सरकार के साथ रहा है। लेखक खुशवंत सिंह ने 1972 में गोलवलकर से भेंट की थी। उन्होंने जेक क्यूरेन द्वारा लिखी गई पुस्तक 'आरएसएस एंड हिन्दू मिलिटरिज्म' के हवाले से प्रश्न पूछे थे। गोलवलकर ने ईसाईयों के सम्बंध में कहा, 'धर्मान्तरित करने के तरीकों के अलावा हमारा उनसे कोई विरोध नहीं।' मुसलमानों के बारे में कहा, 'उन्हें भारतीयता के प्रवाह में मिल जाना चाहिए।' संघ ने भारतीय राष्ट्रवाद को नई ऊंचाइयां दी हैं। न्यायालयों द्वारा हिन्दुत्व और संघ के सम्बंध में दिए गए निर्णयों पर छद्म सेकुलर ध्यान नहीं देते। कोर्ट द्वारा स्टालिन की सरकार को आईना दिखाने की घटना ताजी है। मुंबई उच्च न्यायालय ने 1962 में कहा था कि, 'किसी सरकारी कर्मचारी का संघ की गतिविधियों में भाग लेना विध्वंसक कार्य नहीं है। उसे इसी आधार पर सरकारी सेवा से हटाया नहीं जा सकता।' इसी तरह बंगलुरु उच्च न्यायालय ने संघ का सदस्य होने के आधार पर न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति से वंचित रखना वैध कारण नहीं माना। पटना, चंडीगढ़, भोपाल आदि दर्जन भर से ऊपर न्यायालयों ने अपने निर्णयों में संघ का सदस्य होना आपत्तिजनक नहीं माना। संघ की विचारधारा से सहमत असहमत होना अलग बात है लेकिन सेकुलरवाद के बहाने भारतीय संस्कृति और परम्परा को अपमानित और लांछित करने का स्टालिन जैसा कृत्य किसी भी सूरत में उचित नहीं कहा जा सकता। देश को ऐसे छद्म सेकुलरवाद से मुक्ति चाहिए।

लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।

भारत ने दिलाई मोटे अनाज को अंतरराष्ट्रीय पहचान

मोटा अनाज यानी की श्रीअन्न आज दुनिया की पसंद बनता जा रहा है। दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि आज समूची दुनिया 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट ईयर के रूप में मना रही है। मोटे अनाज के महत्व और पोषकता को देखते हुए ही इसे श्रीअन्न कहकर पुकारा गया। 2018 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मोटे अनाज को पोषक अनाज घोषित करने के लिए विश्वव्यापी अभियान शुरू किया था। यह उनके प्रयासों का नतीजा है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने मोटे अनाज के महत्व को समझते हुए 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित किया। आज देश-दुनिया के देश मोटे अनाज के प्रति जागरूक हो रहे हैं। दरअसल खान-पान के चलते एक के बाद एक बीमारियों से लोग दो-चार होने लगे हैं। ऐसे में मोटा अनाज एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है। देश-विदेश में मोटे अनाज का गुणगान होने लगा है। मोटापा, डायबिटीज, विटामिन की डेफिसिएंसी, बढ़ती हार्ट डिजिजेज, एनिमिया, डाइजेशन प्रॉब्लम, कैल्शियम की कमी या यूं कहें कि अच्छा खाने के बाद भी खोखले होते शरीर के कारण केमिकल्स पर आधारित दवाओं से अलग हटकर अब लोग मोटे अनाज में विकल्प खोजने लगे हैं। खरीफ की प्रमुख फसल बाजरा का तो इस साल और अधिक उत्पादन होने जा रहा है। किसान इससे उत्साहित है तो स्टार्टअप और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां बेहद उत्साहित हैं। दरअसल गुजरी शताब्दी के छठे-सातवें दशक तक हमारे यहां खासतौर से गांवों का मुख्य भोजन मोटा अनाज ही रहा है। 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट के विकल्प के रूप में हरित क्रांति का दौर आरंभ हुआ और ऐसे में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता बनी और इसके लिए गेहूं को प्रमुख विकल्प माना गया। इसके बाद एक ओर गेहूं के आयात, गेहूं के उत्पादन बढ़ाने और उत्पादन बढ़ाने के नाम पर रासायनिक उर्वरकों का दौर शुरू हुआ। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रचार तंत्र को एग्रेसिव किया गया और आज हमारे कृषि वैज्ञानिकों, नीति नियंताओं और अन्नदाता की मेहनत से देश खाद्यान्न को लेकर आत्मनिर्भर बन गया है। कोरोना त्रासदी से लेकर अब तक जरूरतमंद लोगों तक निःशुल्क खाद्यान्न की उपलब्धता बड़ा सहारा बनी है। हरित क्रांति समय की मांग थी और आज भी है। पर अब समूची दुनिया में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों और नित नई बीमारियों से त्रस्त होने के कारण विकल्प तलाशा जाने लगा है और मोटे अनाज को दुनिया के देश बेहतर विकल्प और आशा के रूप में देख रहे हैं। इसमें कोई दोराय नहीं कि एक समय था जब मोटा अनाज प्रमुख भोजन होता था। आज भी दुनिया में कुल उत्पादित मोटे अनाज में हमारे देश की भागीदारी 41 प्रतिशत है। राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि प्रमुख राज्य हैं। आज मोटे अनाज के निर्यात में भी भारत प्रमुख देश है। हमारे देश से गुजरे साल 2.69 करोड़ डॉलर का मोटा अनाज अमेरिका को निर्यात किया गया है। 13 प्रकार के अनाज को मोटे अनाज के रूप में माना जाता है। यह हैं बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदों को माना जाता है। कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय के वर्ष 2023-24 के पहले अनुमान के अनुसार खरीफ पोषक मोटे अनाजों का उत्पादन 351.37 लाख टन अनुमानित है जोकि 350.91 लाख टन औसत मोटे अनाजों की तुलना में थोड़ा सा अधिक है। वर्ष 2023-24 के दौरान श्रीअन्न का उत्पादन 126.55 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है। मोटे अनाज को प्रमोट करने के विश्वव्यापी प्रयास आरंभ हो गए हैं। युवा एंटरप्रोन्योर स्टार्टअप्स के माध्यम से आगे आ रहे हैं। लोगों को मिलेट रेसिपी भाने भी लगी है। लोग इनके महत्व को समझने लगे हैं। पुरानी पीढ़ी के लोगों को याद होगा कि राजस्थान में तो खासतौर से एक समय था जब घर पर मेहमान आने पर ही गेहूं की चपाती बनती थी। धीरे-धीरे मोटे अनाज का उत्पादन और उपयोग दोनों ही प्रभावित हुए। यह सब तो तब रहा जब कि बाजरा आदि मोटे अनाज के खेती में कम पानी और कम लागत आती है तो दूसरी और मोटा अनाज प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्द्धक तत्वों से भरपूर रहा है और इनकी उपयोगिता को आज वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं। सर्दी में बाजरा कितना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है इसको बताने की आवश्यकता नहीं है तो गरमी में बाजरे की राबड़ी की अपनी पहचान हैं। समय का बदलाव देखिए कि गांव-गरीब का भोजन आज पांच सितारा होटलों का प्रमुख व्यंजन बन चुका है। शादियों में बाजरे की खिचड़ी या छाछ- राबडी प्रमुखता से परोसी जाने लगी है तो इसका मतलब भी समझना होगा। देश के कृषि क्षेत्र में निरंतर सुधार हो रहे हैं। कृषि बजट में साल दर साल उल्लेखनीय बढ़ोतरी की जा रही है। अब कृषि वैज्ञानिकों के सामने नई चुनौती मोटे अनाज की उन्नत व गुणवत्तापूर्ण किस्में विकसित करने की है जिसे सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस क्षेत्र में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को मोटे अनाज के उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित करने के समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। आज दुनिया के देश मोटे अनाज को एक बार फिर से भविष्य का अनाज देख रहे हैं तो फिर देश दुनिया में मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं।

Social Media Corner

सच के हक में...

अबुआ बीर अबुआ दिशोम अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम में शामिल हुआ। अभी कुछ दिनों में हम आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम भी पूरे राज्य भर में शुरू करने जा रहे हैं। मुझे लगता है कि राज्य अलग होने के बाद जो सबसे पहले काम होना चाहिए था वह अब शुरू हो रहा है। यहाँ की बहुसंख्यक आबादी, वनों और खेती-बाड़ी से जुड़ी है। वन अधिकार अधिनियम बने हुए वर्षों हो गए मगर पहले कभी भी इस विषय पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, इसे नजरअंदाज कर रखा गया। शायद यही वजह है कि आज वन अधिकार को एक अभियान की शक्ल देकर उतारना पड़ रहा है।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

झारखंड को धोखे एवं अंधेरे में रखने की आदी हो चुकी हेमंत सरकार झारखंड वीमेंस एशियन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी 2023 के फाइनल मैच में भी बिजली आपूर्ति सुनिश्चित नहीं कर पाई। मुख्यमंत्री हेमंत की मौजूदगी में, इंटरनेशनल मैच में ऐसी तकनीकी खराबी से भारत की अंतर्राष्ट्रीय और विश्वगुरु की छवि को धूमिल किया जा रहा है।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर नियंत्रण जरूरी

तकनीक और राजनीति की दुनिया के दिग्गजों ने उचित ही चेतावनी दी है कि अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नियंत्रित नहीं किया गया, तो दुनिया के लिए भारी जोखिम पैदा हो जाएगा। लोगों की गोपनीयता तो खत्म होगी ही, साथ ही इंसानों के जीवन पर भी खतरा मंडराने लगेगा। ब्रिटेन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिखर सम्मेलन का आयोजन दरअसल समाधान खोजने का सराहनीय व स्वागतयोग्य प्रयास है। ऐसे शिखर सम्मेलन की लंबे समय से प्रतीक्षा थी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अर्थात एआई को लेकर विगत दो वर्षों में लगातार चिंता का इजहार किया गया है। यह ब्रिटेन में आयोजित शिखर सम्मेलन की बड़ी कामयाबी है कि वहां तकनीक की दुनिया के दिग्गज जोखिमों को कम करने के लिए तैयार दिखे हैं। एआई के विकास में सरकारों के साथ मिलकर काम करना जरूरी है, ताकि कानून-कायदे के अंतर्गत ही इस नई तकनीकी का विकास हो। अगर निजी कंपनियों में एआई के विकास को लेकर खुली प्रतिस्पर्द्धा छिड़ गई, तो तकनीकी मानवता को ही नुकसान पहुंचाने लगेगी। एआई के विकास में लगे नेताओं को जिम्मेदारी का एहसास कराने के मकसद में शिखर सम्मेलन को कामयाबी मिली है और भविष्य में आने वाली तकनीक के न्याय-अनुकूल होने की संभावना बढ़ गई है। चूंकि इस शिखर सम्मेलन को यूरोप के अनेक नेताओं ने गंभीरता से लिया है और इसमें अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने भी भाग लिया है, इसलिए महत्व को समझा जा सकता है। फ्रांस और जर्मनी के वित्त मंत्री, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस, ब्रिटेन और इटली के प्रधानमंत्री, ऑस्ट्रेलिया के उप-प्रधान मंत्री ने भी हिस्सा लिया है। खास यह कि चीन के नेता भी शिखर सम्मेलन शामिल हुए हैं। तमाम नेताओं ने एआई से जुड़े जोखिमों को पहचानने और उनका उपचार करने पर जोर दिया है। दुनिया में एआई को लेकर एक साझा नीति का निर्माण जरूरी है, ताकि कोई भी देश या कंपनी इस अत्याधुनिक तकनीक का दुरुपयोग न कर सके। वास्तव में यह अन्य तकनीकी की तरह नहीं है। चूंकि इंटरनेट की दुनिया में पूरी तरह से जुड़ी हुई है, इसलिए एआई के विकास या उसके प्रभाव को किसी खास देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं रखा जा सकता। मान लीजिए कि कोई देश एक हथियार विकसित करता है, तो उससे सभीको खतरा नहीं है और हो सकता है, वह देश अपने को सुरक्षित करने के लिए हथियार बनाए और संरक्षित रखे। किसी देश ने अगर रासायनिक हथियार बना रखे हैं, तो उससे ज्यादा खतरा नहीं है, लेकिन एआई तकनीक को सीमा में नहीं बांधा जा सकता। एक बार कहीं वह इंटरनेट पर उपलब्ध होगी, तो उसके सदुपयोग और दुरुपयोग करने वाले अनेक पैदा हो जाएंगे। अतः एआई पर सजग देशों की निगाह जरूरी है। एआई के मोर्चे पर केवल समान विचारधारा वाले देशों का परस्पर सहमत होना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए सभी देशों को सहमत होना पड़ेगा। यूरोप, अमेरिका जैसे देश मिलकर अगर कोई तंत्र बनाएंगे, तो केवल उतना ही दुनिया के लिए पर्याप्त नहीं होगा। डिजिटल दुनिया अब केवल विकसित या पश्चिमी देशों तक सीमित नहीं है। अतः ऋषि सुनक जैसे नेताओं को व्यापकता में सोचना चाहिए और समान विचारधारा के देशों को साथ लेने की बजाय सभी को साथ लेना चाहिए और साथ ही, सभी देशों को एआई के मोर्चे पर समान नीति के पालन के लिए पाबंद भी करना चाहिए। यह बात भी समझने की है कि तकनीक का फायदा चंद देशों को ज्यादा हुआ है और अब चूंकि तकनीक की उपलब्धता बढ़ गई है, तो कुछ देश एआई जैसी तकनीक पर अपना शिकंजा कसना चाहते हैं। शिखर सम्मेलन का मकसद यह नहीं होना चाहिए कि कथित समान विचारधारा के देशों को ही एआई से मजबूती मिले।

चुनावी बॉन्ड का भविष्य

सुप्रीम कोर्ट में चल रहे इलेक्टोरल बॉन्ड से जुड़े अहम मामले में गुरुवार को सुनवाई पूरी हो गई। चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ की अगुआई वाली बेंच ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है, लेकिन सुनवाई के दौरान जिस तरह से इस मसले के अलग-अलग पहलू उभरे वह भी काफी महत्वपूर्ण है। इस दौरान न केवल चुनावी फंडिंग से बल्कि डोनेशन देने वाली कंपनियों, डोनेशन पाने वाले दलों और इन राजनीतिक दलों को अपने वोट से चुनने वाले वोटरों के अधिकारों से भी जुड़ी अलग-अलग राय सामने आई। यह सवाल उठा कि सुप्रीम कोर्ट को इस मसले पर विचार करने का अधिकार है भी या नहीं। अदालत ने साफ किया कि चुनावी फंडिंग का जो फॉर्मैट कार्यपालिका ने बनाया है, वह संविधान की कसौटियों पर खरा उतरता है या नहीं, यह देखना उसकी जिम्मेदारी है और इसी सवाल पर वह विचार करेगी। अगर उसमें कमी पाई जाती है तो उसे कैसे ठीक किया जाए या उसकी जगह कोई दूसरा फॉर्मैट लाना है तो वह कैसा हो और कैसे आए, यह देखना सरकार का काम होगा। सुनवाई के दौरान यह बात बार-बार कही गई कि चुनावी बॉन्ड से जुड़ा कानून लाने के पीछे मंशा अच्छी थी। इस पर किसी पक्ष ने आपत्ति भी नहीं की। बावजूद इसके, फंडिंग के इस तरीके में कई तरह की दिक्कतों की बात सामने आई। भले ही कानून लाने के पीछे कैश डोनेशन रोकने और फर्जी कंपनियों के डोनेशन पर लगाम लगाने का इरादा रहा हो, लेकिन व्यवहार में हो यह रहा है कि डोनेशन से जुड़े डीटेल्स तक सिर्फ सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी की पहुंच होती है किसी और की नहीं। इसका परिणाम यह देखा जा रहा कि इलेक्टोरल बॉन्ड का तकरीबन सारा हिस्सा सत्तारूढ़ दलों को जाता है और बाकी पार्टियों को नाम मात्र का हिस्सा मिलता है। इस धारणा की पुष्टि के लिए हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग से इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए मिले फंड का ब्योरा पेश करने को कहा है, लेकिन यहां दो सवाल उभरते हैं।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

फिच ने भारत की जीडीपी वृद्धि का अनुमान बढ़ाया, चीन का घटाया

नई दिल्ली।

वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसी फिच ने सोमवार को भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की मध्यावधि वृद्धि का अनुमान पहले के 5.5 फीसदी से 0.7 फीसदी बढ़ाकर 6.2 फीसदी कर दिया, जबकि चीन के लिए अपने अनुमान में 0.7 प्रतिशत की कटौती की।रेटिंग एजेंसी ने 10 उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए अपना अनुमान पहले के 4.3 फीसदी से घटाकर 4 फीसदी कर दिया। फिच ने अपनी रिपोर्ट में कहा, उभरते बाजार की संभावित वृद्धि चीन की धीमी गति के कारण कमजोर हुई। यह कटौती मुख्य रूप से चीन की आपूर्ति पक्ष की वृद्धि क्षमता के अनुमान में 0.7 प्रतिशत अंक की बड़ी कमी के कारण है। चीन की मध्यावधि वृद्धि का अनुमान पहले के 5.3 प्रतिशत से घटाकर 4.6 प्रतिशत कर दिया गया है। हालांकि, हमने भारत और मेक्सिको में बड़े पैमाने पर उन्नयन किया है, जिससे पूंजी-से-श्रम अनुपात के बेहतर दृष्टिकोण से लाभ हुआ है। भारत का अनुमान 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 6.2 प्रतिशत और मेक्सिको का 1.4 प्रतिशत से बढ़कर 2 प्रतिशत है। रूस के लिए पूर्वानुमान को 1.6 प्रतिशत से घटाकर 0.8 प्रतिशत, कोरिया के लिए 2.3 प्रतिशत से घटाकर 2.1 प्रतिशत और दक्षिण अफ्रीका के लिए 1.2 प्रतिशत से घटाकर 1 प्रतिशत कर दिया गया है। एजेंसी ने यह भी कहा कि नवीनतम अनुमान ब्राजील और पोलैंड को छोड़कर सभी शीर्ष 10 उभरते बाजारों (ईएम10) के लिए उसके महामारी-पूर्व संभावित विकास अनुमानों से नीचे हैं। इसमें कहा गया है, यह बिगड़ते जनसांख्यिकीय रुझान और महामारी से व्यवधानों की विरासत को दर्शाता है। उत्तरार्द्ध आंशिक रूप से पूंजी स्टॉक और उत्पादकता वृद्धि के अनुमानों में संशोधन के माध्यम से परिलक्षित होता है। रिपोर्ट में कहा गया है, लेकिन कुछ डरावने प्रभावों को पकड़ना मुश्किल है और हमने अब मेक्सिको, इंडोनेशिया, भारत और दक्षिण अफ्रीका के लिए 2020 और 2021 में संभावित सकल घरेलू उत्पाद के ऐतिहासिक अनुमानों में अतिरिक्त स्तर का झटका समायोजन किया है।

ओपनएआई जल्द ही चैटजीपीटी सब्सक्राइबर्स के लिए 'जीपीटी बिल्डर' ऑप्शन कर सकता है जारी

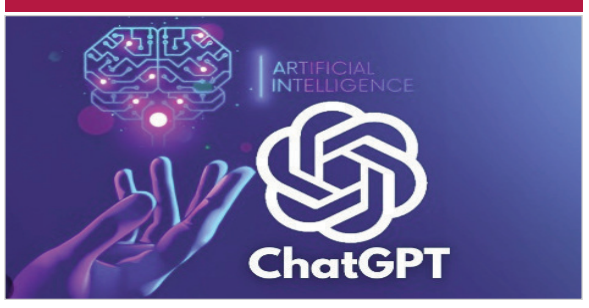

सैन फ्रांसिस्को।

ओपनएआई के डेवलपर कॉन्फ्रेंस से पहले एक महत्वपूर्ण चैटजीपीटी अपडेट लीक हो गया है, जिसमें एक कस्टम चैटबॉट क्रिएटर का खुलासा हुआ है।लीक हुए स्क्रीनशॉट और वीडियो के अनुसार, कस्टम चैटबॉट क्रिएटर के पास जीपीटी-4 का इस्तेमाल करके चैटजीपीटी में वेब ब्राउजिंग और डेटा एनालिसिस जैसे कई फीचर्स पहले से ही उपलब्ध हैं। यह खबर सबसे पहले 'द डिकोडर' ने प्रकाशित की थी।रिपोर्ट के मुताबिक, ओपनएआई के पास एक नया मार्केटप्लेस भी होगा, जहां यूजर्स अपने चैटबॉट शेयर कर सकते हैं या दूसरों द्वारा बनाए गए चैटबॉट को ब्राउज कर सकते हैं। इसके अलावा, एसईओ टूल डेवलपर टिबोर ब्लाहो ने 'जीपीटी बिल्डर' ऑप्शन प्रदर्शित करते हुए फीचर के लिए यूआई का एक वीडियो भी शेयर किया, जो यूजर्स को चैटबॉट डेवलप करने के लिए एक प्रॉम्प्ट सबमिट करने की अनुमति देता है, उदाहरण के लिए एक क्रिएटिव बनाएं, जो नए प्रोडक्ट्स के लिए विजुअल जनरेट करने में मदद करता है। जैसा कि वीडियो में दिखाया गया है, 'क्रिएट' टैब पर बॉट के लिए एक डिफॉल्ट लैंग्वेज, टोन और राइटिंग स्टाइल का सलेक्ट करने के ऑप्शन हैं। फिर, कॉन्फिगर पेज पर, नेमिंग, डेस्क्रिबिंग और बॉट को निर्देश देने के लिए फील्ड हैं कि वह क्या कर सकता है और क्या नहीं।

चोई नामक एक यूजर, जिसने कुछ दिन पहले एक्स पर रुमर्ड अपडेट की समरी पोस्ट की थी, ने यह भी दावा किया कि ओपनएआई 'फ्लेक्सिबल' और 'एनुअल' ऑपशन के साथ एंटरप्राइज 'टीम' सब्सक्रिप्शन प्लान जारी करने की योजना बना रहा है।

विरासत करों को कवर करने के लिए 2 अरब डॉलर मूल्य के शेयर बेच रहे सैमसंग परिवार के सदस्य

सोल।

सैमसंग ग्रुप के स्वामित्व वाले परिवार के सदस्य विरासत करों को कवर करने के लिए सैमसंग सहयोगियों में लगभग 2.6 ट्रिलियन वॉन (2 बिलियन डॉलर) मूल्य के शेयर बेचने के लिए तैयार हैं।

अक्टूबर 2020 में दिवंगत सैमसंग चेयरमैन ली कुन-ही की मृत्यु के बाद से, उनके परिवार के सदस्य पांच साल की योजना के अनुसार विरासत में मिली संपत्ति के लिए किस्तों में विरासत कर का भुगतान कर रहे हैं।समाचार एजेंसी योनहाप की रिपोर्ट के अनुसार, कुल विरासत कर की राशि 12 ट्रिलियन वॉन थी।वित्तीय पर्यवेक्षी सेवा के साथ नियामक फाइलिंग के अनुसार, ली की पत्नी होंग रा-ही और उनकी दो बेटियों ली बू-जिन और ली सेओ-ह्यून, जिनमें से एक होटल शिला कंपनी की सीईओ और दूसरी सैमसंग वेलफेयर फाउंडेशन की प्रमुख है, ने पिछले मंगलवार को हाना बैंक को शेयर निपटान का काम सौंपने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। 'विरासत कर भुगतान' के उद्देश्य से किए गए सौदे के तहत, हाना बैंक को 30 अप्रैल, 2024 तक सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स में हांग की 0.32 प्रतिशत हिस्सेदारी और फर्म में दोनों बेटियों के स्वामित्व वाली संयुक्त 0.18 प्रतिशत हिस्सेदारी का निपटान करना आवश्यक है। जब प्रति शेयर 69,600 वॉन का नवीनतम बाजार समापन मूल्य लागू किया जाता है, तो बिक्री के लिए सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयरों की राशि लगभग 2.08 ट्रिलियन वॉन हो जाती है। होटल शिला सीईओ ने अपने शेयरों की बिक्री के लिए एक अतिरिक्त समझौते पर भी हस्ताक्षर किए, जिसमें सैमसंग सी एंड टी कॉर्प में 0.65 प्रतिशत हिस्सेदारी, सैमसंग एसडीएस कंपनी में 1.95 प्रतिशत हिस्सेदारी और सैमसंग लाइफ इंश्योरेंस में 1.16 प्रतिशत हिस्सेदारी शामिल है। शेयरों का संयुक्त मूल्य 499.3 बिलियन वॉन है।

रिकवरी धीमी होने से वैश्विक आर्थिक विकास की संभावनाएं कमजोर : सीतारमण

नई दिल्ली।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि मध्यम अवधि में वैश्विक आर्थिक विकास की संभावनाएं और कमजोर हो गई हैं क्योंकि रिकवरी धीमी और असमान है।दिल्ली में 'मजबूत सतत संतुलित और समावेशी विकास' पर एक वेबिनार में उन्होंने कहा, 'महामारी के बाद से, वैश्विक अर्थव्यवस्था कई संकटों से जूझ रही है, जिससे वैश्विक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। हालांकि रिकवरी चल रही है, लेकिन धीमी और असमान है। वैश्विक विकास की वर्तमान गति काफी कमजोर बनी हुई है। महामारी से पहले के दो दशकों में 3.8 प्रतिशत के औसत के मुकाबले विकास दर काफी नीचे है और मध्यम अवधि में विकास की संभावनाएं कमजोर हो गई हैं।'' उन्होंने कहा कि वैश्विक और घरेलू स्तर पर पॉलिसी कॉर्डिनेशन यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि विकास पटरी पर आए और मजबूत, टिकाऊ, संतुलित और समावेशी बना रहे। उन्होंने कहा कि जी20 नई दिल्ली नेताओं की घोषणा (एनडीएलडी) समान विकास और वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने के लिए कैलिब्रेटेड व्यापक आर्थिक और संरचनात्मक नीतियों को लागू करने की जरूरत को रेखांकित करती है। सीतारमण ने आगे कहा, 'हमारी अध्यक्षता में, जी20 ने एमएसएमई को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एकीकृत करने पर पूरा ध्यान दिया। दुनिया भर में एमएसएमई का 90 प्रतिशत व्यवसाय, 60 से 70 प्रतिशत रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद में 50 प्रतिशत का योगदान है। वे आजीविका को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खास कर कामकाजी गरीबों, महिलाओं, युवाओं और कमजोर परिस्थितियों वाले समूहों के बीच। हालांकि एमएसएमई को विकासशील देशों में, अक्सर जानकारी तक सीमित पहुंच के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जिससे उनकी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भागीदारी में बाधा आती है। इस चुनौती से निपटने में मदद करने के लिए, एनडीएलडी ने जयपुर कॉल फॉर एक्शन का स्वागत किया, जिसका मकसद एमएसएमई क्षेत्र को बढ़ावा देना है और साथ ही एमएसएमई के लिए इनफोर्मेशन गैप को पाटना है ताकि उन्हें अपने व्यवसाय और व्यापार का विस्तार करने में मदद मिल सके।

सुप्रीम कोर्ट में आरसीएपी रिजॉल्यूशन मामले में टोरेंट की याचिका पर सुनवाई मंगलवार को

मुंबई।

रिलायंस कैपिटल रिजॉल्यूशन प्लान मामले में टोरेंट इन्वेस्टमेंट की याचिका पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होने वाली है।पांच महीने पहले 99.6 प्रतिशत वोट के साथ ऋणदाताओं द्वारा हिंदुजा समूह की समाधान योजना को मंजूरी दिए जाने के बावजूद, रिलायंस कैपिटल के लिए समाधान प्रक्रिया अपने निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है। टोरेंट की याचिका, जिसने रिलायंस कैपिटल की संपत्तियों की बिक्री के लिए दूसरे दौर की नीलामी को चुनौती दी थी, अप्रैल 2023 से सुप्रीम कोर्टमें लंबित है। सुप्रीम कोर्ट ने नीलामी के दूसरे दौर पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था, जो अंततः 26 अप्रैल, 2023 को आयोजित की गई थी। हिंदुजा समूह की कंपनी आईआईएचएल दूसरी नीलामी में एकमात्र बोली लगाने वाली कंपनी थी, क्योंकि टोरेंट इन्वेस्टमेंट ने भाग नहीं लेने का फैसला किया था। आईआईएचएल ने 9,800 करोड़ रुपये की नकद बोली लगाई थी। आईआईएचएल की समाधान योजना को ऋणदाताओं ने जून 2023 में योजना के पक्ष में 99.6 प्रतिशत मतदान के साथ मंजूरी दे दी थी, लेकिन इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट में लंबित मुकदमे और विभिन्न प्रक्रियात्मक देरी के कारण रिलायंस कैपिटल की समाधान प्रक्रिया को अंतिम रूप नहीं मिल सका है। टोरेंट इन्वेस्टमेंट ने

अगस्त में एनसीएलटी को आईआईएचएल समाधान योजना पर विचार करने से रोकने के लिए एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, लेकिन अदालत ने एनसीएलटी के समक्ष कार्यवाही पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सोमवार को भारतीय रुपया एक पैसे की गिरावट के साथ ही 83.21 पर बंद हुआ। आज सुबह शुरुआती कारोबार में रुपया डॉलर के मुकाबले रुपया पांच पैसे बढ़कर 83.15 पर पहुंच गया, जिससे घरेलू इक्विटी में सकारात्मक रुख आया क्योंकि बाजार में जोखिम की भावना बनी हुई थी। वहीं विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि अक्टूबर में अमेरिकी नौकरी वृद्धि उम्मीद से कम रहने के बाद अमेरिकी मुद्रा के अपने ऊंचे स्तर से गिरने के बाद रुपये में तेजी आई। वहीं अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपया 83.17 पर खुला और फिर 83.15 के शुरुआती उच्च स्तर पर पहुंच गया। यह पिछले बंद के मुकाबले पांच पैसे की बढ़त दिखाता है। वहीं शुक्रवार को रुपया डॉलर के मुकाबले 83.20 पर बंद हुआ था। इस बीच दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.03 फीसदी बढ़कर 105.05 पर था।

एसोचैम यूएई के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठकें करेगा

चंडीगढ़। उद्योग निकाय एसोचैम संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के शारजाह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा मुक्त (एसएआईएफ) क्षेत्र के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठकों का आयोजन करेगा। एक विज्ञप्ति के अनुसार एसएआईएफ क्षेत्र के साथ वैश्विक स्तर पर अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए इन बैठकों का आयोजन 7-8 नवंबर को चंडीगढ़ में होगा। व्यवसायों के बीच (बी2बी) होने वाली इन बैठकों का उद्देश्य शहर के उद्योगपतियों को यूएई के मुक्त व्यापार क्षेत्रों में व्यवसाय स्थापित करने के लिए जरूरी जानकारी देना है।

खंडवा से आने लगा नया प्याज, अब घटने लगे दाम

इंदौर । पिछले दिनों प्याज की कीमतों में तेजी से हो रही बढ़ोतरी की वजह से लोग परेशान होने लगे थे लेकिन खंडवा से नया प्याज की आवक शुरू हो गई है। इससे अब प्याज की कीमतों में गिरावट आने लगी है, जिससे आमजन को राहत मिली है। इंदौर की थोक आलू-प्याज मंडी में दो दिन से प्याज की अच्छी आवक देखने को मिल रही है। इस वजह से पिछले सप्ताह तक जो प्याज की कीमत 70 से 80 रुपए किलो थी, वह अब थोक भाव में 30 से 40 रुपए तक पहुंच गई है। व्यापारियों का कहना है कि दीपावली बाद प्याज की कीमत में और कमी आएगी, क्योंकि जल्द ही नासिक (महाराष्ट्र) से नए प्याज की आवक शुरू हो जाएगी। इसके बाद प्याज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने से भाव में गिरावट देखने को मिलेगी। दरअसल कीमतों में गिरावट आने की असली वजह खंडवा से आने वाला प्याज है। देवी अे हिल्याबाई होलकर चोइथराम थोक मंडी में दो दिन से 400 से 500 बोरी सुपर प्याज आ रहा है। इस वजह से प्याज की कीमतों में गिरावट आ गई है। इंदौर के खुले बाजार में प्याज 40 से 60 रुपए किलो बिक रहा है।

शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद

सेंसेक्स 594 , निफ्टी 181 अंक बढ़कर बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार सोमवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी रहने से आया है। आज कारोबार के दौरान बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी ऊपर आया। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 594.91 अंक करीब 0.92 फीसदी की बढ़त के साथ 64,958.69 अंक पर बंद हुआ। वहीं पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 181.15 अंक तकरीबन 0.94 फीसदी की बढ़त के साथ ही 19,411.75 अंक पर बंद हुआ। वहीं व्यापक बाजारों में बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप दोनों ही सूचकांकों में एक-एक फीसदी की बढ़त रही।

आज के कारोबार में सेंसेक्स के शेयरों में 26 शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। एलएंडटी, एक्सिस बैंक, टाटा स्टील, बजाज फाइनैंस और पावर ग्रिड सेंसेक्स के सबसे अधिक लाभ वाले पांच शेयर रहे। सबसे ज्यादा लाभ एलएंडटी के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 2.16 फीसदी बढ़े हैं। वहीं दूसरी तरफ सेंसेक्स के शेयरों में केवल 4 शेयर ही नुकसान के साथ लाल निशान पर बंद हुए। एसबीआई, एचयूएल, टाटा मोटर्स और टाइटन सेंसेक्स के नुकसान वाले शेयर रहे। सबसे ज्यादा 0.65 फीसदी नुकसान एसबीआई के शेयरों को हुआ।

वहीं इससे पहले आज सुबह सप्ताह के पहले कारोबारी दिन बाजार की शुरुआत बढ़त के साथ हुई है। बीएसई सेंसेक्स 305.92 अंक की बढ़त के साथ 64,697.91 के स्तर पर खुला और कुछ देर बाद ही यह 64,743 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। वहीं निफ्टी 91.75 अंक के उछाल के साथ 19324.65 के स्तर पर कारोबार करता दिखा और थोड़ी देर में यह 19,347 के स्तर पर आ गया। इसके अलावा प्री-ओपनिंग में भी बाजार में तेजी आई थी। सेंसेक्स 380 अंक चढ़कर 64,744.76 के स्तर पर कारोबार कर रहा था। वहीं निफ्टी 79.15 अंक की बढ़त के साथ 19309 के स्तर पर कारोबार कर रहा था

अक्टूबर में डीजल, जेट ईंधन की बिक्री बढ़ी

नई दिल्ली। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, इस साल अक्टूबर में डीजल और पेट्रोल की बिक्री 2022 के इसी महीने की तुलना में क्रमशः 9.3 प्रतिशत और 4.8 प्रतिशत बढ़ गई है।पेट्रोल और डीजल की अधिक खपत देश में आर्थिक गतिविधियों के बढ़े हुए स्तर को दर्शाती है। डीजल का उपयोग परिवहन और कृषि दोनों क्षेत्रों में किया जाता है और दोहरे अंक की खपत वृद्धि इन दोनों क्षेत्रों में ग्रोथ दिखाती है। इसी प्रकार, पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में महीने के दौरान हवाई यात्रा में वृद्धि के कारण एयरलाइंस द्वारा जेट ईंधन की खपत भी 12.3 प्रतिशत तक बढ़ गई। बिटुमिन की बिक्री में भी 20.5 फीसदी का उछाल आया है, जो देश में हो रहे राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की तेज गति को दर्शाता है। हालांकि, साथ ही पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ी हुई खपत का मतलब ये भी है कि आयात अधिक हो रहा है। देश की 80 प्रतिशत से अधिक कच्चे तेल की जरूरत वैश्विक बाजार से पूरी होती है। इससे चालू खाता घाटा बढ़ता है और रुपया कमजोर होता है। कच्चे तेल के आयात के लिए भुगतान अमेरिकी डॉलर में करना पड़ता है।

डीआरआई ने हैवेल्स इंडिया कार्यालय में तलाशी ली

नई दिल्ली। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक्स सामान और उपकरण निर्माता हैवेल्स इंडिया के मुख्यालय पर तलाशी अभियान चलाया। हैवेल्स इंडिया के अनुसार, तलाशी डीआरआई द्वारा की गई जो तस्करी और वाणिज्यिक धोखाधड़ी के मामलों की जांच करने के लिए प्रमुख एजेंसी के रूप में कार्य करती है। कंपनी ने बीएसई को बताया कि डीआरआई ने नोएडा में उसके कॉर्पोरेट कार्यालय में तलाशी ली। तलाशी अभियान 4 नवंबर को रात लगभग 2.20 बजे समाप्त हुआ। इसमें कहा गया है कि तलाशी सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 105 के तहत शुरू की गई थी। कंपनी ने यह भी कहा कि उसकी वित्तीय, संचालन या अन्य गतिविधियों पर इसके प्रभाव को इस समय निर्धारित नहीं किया जा सकता है। उसने बताया कि मामला हीटिंग तत्वों के आयात के वर्गीकरण से संबंधित है। कंपनी हैवेल्स, लॉयड, क्रैबट्री और लियो के ब्रांड नाम के तहत उपभोक्ता विद्युत उत्पादों का निर्माण और विपणन करती है।

गोगोरो ने बैटरी स्वैपिंग केंद्र स्थापित करने एचपीसीएल से किया करार

मुंबई ।

बैटरी अदला-बदली (स्वैपिंग) करने वाली कंपनी गोगोरो ने आने वाले सालों में देशभर में बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) के साथ प्रारंभिक समझौता किया है। गोगोरो अमेरिकी स्टॉक एक्सचेंज नैस्डैक पर सूचीबद्ध है। गोगोरो ने कहा कि इस समझौते के अंतर्गत गोगोरो पूरे देश में एचपीसीएल की खुदरा दुकानों पर बैटरी स्वैपिंग केंद्र स्थापित करते हुए इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के लिए एक व्यापक बैटरी स्वैपिंग बुनियादी ढांचा विकसित करेगा। बयान के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनी एचपीसीएल की देशभर में लगभग 21,000 खुदरा दुकानें हैं। गोगोरो के एक वे रिष्ठ अे धिकारी (सीईओ) ने कहा कि हम आने वाले वर्षों में पूरे देश में अपनी खुदरा दुकानों पर हजारों गोगोरो बैटरी स्वैपिंग केंद्र शुरू करने के लिए एचपीसीएल के साथ साझेदारी की घोषणा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत अपने

शहरी दोपहिया परिवहन तंत्र में बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रिक वाहन स्वीकार्यता के प्रारंभिक चरण में है। यह तेजी से स्पष्ट हो रहा है कि बैटरी स्वैपिंग व्यापक स्वीकार्यता के लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए इसके बुनियादी ढांचे का निर्माण महत्वपूर्ण है।

सेलो वर्ल्ड का शेयर 28 प्रतिशत की बढ़त के साथ सूचीबद्ध

नई दिल्ली ।

घरेलू सामान एवं स्टेशनरी विनिर्माता सेलो वर्ल्ड का शेयर सोमवार को अपने निर्गम मूल्य 648 रुपये पर करीब 28 फीसदी की तेजी के साथ सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर कंपनी का शेयर अपने निर्गम मूल्य से 28.24 प्रतिशत की बढ़त के साथ 831 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में यह 28.81 प्रतिशत की बढ़त के साथ 834.70 रुपये पर पहुंच गया। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी का शेयर 27.93 प्रतिशत की उछाल के साथ 829 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। सुबह के कारोबार के दौरान कंपनी का बाजार मूल्यांकन 16,769.44 करोड़ रुपये था। सेलो वर्ल्ड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को बिक्री के ओ खिरी दिन 38.90 गुना अभिदान मिला था। इसका मूल्य दायरा 617-648 रुपये प्रति शेयर था।

दुल्हन सजे वैस्टर्न और इंडियन लुक में

यदि किसी लड़की को संस्कृति, परंपरा और संस्कारों की जीती-जागती तस्वीर के रूप में देखना हो तो वे पल उसकी शादी के होते हैं। यही वे पल हैं, जो उसका रूप निखारते हैं। आज की दुल्हन वैस्टर्न और इंडियन लुक के बैलेंस में स्वयं को संवारना चाहती है। पारंपरिक साड़ी और लहंगे को हर बार नए अंदाज में प्रस्तुत कर उसकी इस ख्वाहिश को पूरा करते हैं डिजाइनर्स, यही कारण है कि आऊटफिट तैयार करते हुए दुल्हन के कांप्लैक्शन और फिगर का खास ख्याल रखा जाता है...

कांप्लैक्शन का ध्यान रखना जरूरी

यदि दुल्हन का रंग गोरा है तो कोई भी रंग बेधड़क पहना जा सकता है। इस मौके पर आप पिंक, फिरोजी, ग्रीन, रैड, सिल्वर या गोल्डन किसी भी कलर को चूज कर सकती हैं। यदि कांप्लैक्शन गेहुंए रंग का है तो आप पर रूबी, रैड, ऑरेंज, नेवी ब्ल्यू, फिरोजी और ब्ल्यू कलर ज्यादा अच्छे लगेंगे, गोल्ड बेस वर्क के साथ मैरून, मैट गोल्ड वर्क के साथ एमेराल्ड ग्रीन या कॉपर के शेड्स अच्छे लगते हैं। सांवली रंगत वालों को ब्राइट कलर में यैलो,ऑरेंज, रैड एवं ब्ल्यू कलर्स में अपना आऊटफिट तैयार करवाना चाहिए।

बॉडी शेप

सिर्फ कम्प्लैक्शन के हिसाब से ही नहीं बल्कि बॉडी शेप के अनुसार भी लहंगे और साड़ी का चुनाव किया जाना बहुत जरूरी है ।तभी तो इस दिन आप सबसे अलग नजर आ पाएंगी। परफैक्ट शेप वाली लड़कियों पर हर तरह के स्टाइल का लहंगा जंचता है, इसलिए जो भी फैशन में हो आप बिना टैंशन के पहन सकती हैं। लहंगे के साथ स्ट्रेपी, वन शोल्डर, ऑफ -शोल्डर, डीप बैक में से जिस तरह की भी चोली आपको पसंद हो, बनवाएं। आप एंब्रायडरी फैशन के अनुरूप चुन सकती हैं अर्थात अपना आऊटफिट चुनने में आपको किसी प्रकार की टैंशन नहीं और च्वाइस में बहुत कुछ अवेलेबल है।

हैवी ब्रैस्ट वाली लड़कियों को लाइट वर्क वाली चोली का ही चुनाव करना चाहिए। यदि एम्ब्रायडरी का डिजाइन छोटा हो तो अच्छा लगेगा। यदि कमर के नीचे का हिस्सा हैवी है तो ए-लाइन लहंगा आप पर खूबसूरत लगेगा। फैब्रिक भी सॉफ्ट ही होना चाहिए। फुलावट वाला लहंगा आपको और भी हैवी लुक देगा। फुल स्लीव चोली भी आपकी फिगर को बैलेंस लुक देगी। पतली और लंबी लड़कियों पर कोई भी फैब्रिक अच्छा लगता है। लहंगे के साथ डीप नैक वाली छोटी चोली पहनें तथा दुपट्टा लंबा रखें। आप लंबे स्लीव और हाई नैक लाइन को इगनोर करें। चौड़ी बॉडी वाली लड़कियों को क्रेप या जॉर्जेट अच्छा लुक देगा। स्लिम लुक के लिए डॉर्क शेड में डीप नैक वाली चोली लें। लहंगे का बार्डर पतला और एम्ब्रायडरी वर्टिकल डिजाइन में रखें, आप एलिगैंट नजर आएंगी।

सर्दी में भी बच्चे रहें सेहतमंद

सर्दी के मौसम में जितनी देखभाल आप खुद की करते हैं उससे कहीं ज्यादा ख्याल अपने बच्चों का भी रखते हैं लेकिन लाख देखभाल करने के बावजूद इस मौसम में बच्चों को सर्दी-जुकाम, बुखार जैसी समस्याएं हो ही जाती हैं चूंकि बच्चे अपनी समस्या सही तरीके से बता नहीं पाते और उपचार के दौरान उनसे परहेज कराना भी बड़ा मुश्किल काम होता है, इसलिए बच्चों की खराब सेहत एक बड़ी टैंशन के रूप में सामने आती है। ऐसे में बेहतर तरीका तो यही है कि इस मौसम की नजाकत को समझते हुए बच्चों को सीजनल बीमारियों से बचाने का प्रयास किया जाए।

बरतें सावधानी

दरअसल, सर्दी के मौसम में बच्चों को सर्दी-जुकाम, लंबे समय तक खांसी, इन्फ्लूएंजा, वायरल, फ्लू, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियों की आशंका अधिक होती है लेकिन ठंड के मौसम में केवल थोड़ी सी सावधानी बरत कर ही आप अपने बच्चों को कई बीमारियों से दूर रख सकती हैं। हालांकि आम तौर पर बच्चे दवाएं लेने में आनाकानी करते हैं ऐसे में आप बच्चों को सर्दी-जुकाम की शुरूआत होते ही घरों में अदरक-तुलसी आदि का सेवन कराएं। यदि बच्चे को बुखार नहीं है और उसके ऊपरी रैस्पिरेट्री हिस्से सर्दी से प्रभावित हैं तो ये घरेलू उपचार काफी हद - तक उसके लिए फायदेमंद साबित होते हैं लेकिन अगर बच्चे को तीन दिन से अधिक समय तक बुखार और जुकाम हो या फिर 4-5 दिन बिना बुखार के सर्दी टिकी रहे तो अच्छे डॉक्टर से जांच कराने में देर कतई नहीं करें।

इनका भी रखें ध्यान

- नए ट्रैंड में फिटेड और खूबसूरत कट के लहंगों का फैशन है। फिश कट लहंगा और फिटेड चोली के साथ ए-लाइन घाघरा भी खूब पसंद किए जा रहे हैं।
- दुल्हन के लिए बनारसी एवं सिल्क की गोल्डन और सिल्वर वर्क के साथ साडियां ही पहली पसंद में शामिल रहती हैं। हालांकि हैवी वर्क के साथ शिफॉन, क्रेप और जॉर्जैट की साडियों का चलन भी बढ़ा है।
- साड़ी एवं लहंगा दोनों में मिरर, गोटा एवं पर्ल वर्क इन फैशन है। एंटीक गोल्ड, क्रिस्टल वर्क ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। कुंदन वर्क एवं सितारा वर्क के साथ थ्रैड वर्क, क्लासिक वर्क तथा कटैंपरेरी वर्क का खूबसूरत कांबीनेशन भी बेहद पसंद किया जाता है।
- मोटी लड़कियों को साड़ी के अंदर स्ट्रेट कट या नॉन प्लेयर्ड पेटीकोट यूज करना चाहिए। इससे आप थोड़ा स्लिम लगेंगी। आपको शिफॉन, क्रेप और जॉर्जेट की साडियां पहननी चाहिए।

लुक कूल विद हॉट स्टोल

फैशन का अंदाज हमेशा बदलता रहता है। मौसम की नजाकत के हिसाब से ही फैशन बाजार में अपना स्थान बना पाता है। इस समय सर्दी अपने पूरे शबाब पर है, ऐसे में खूबसूरत ड्रैसेस के साथ स्टाइल बनाए रखने के लिए स्टाइलिश स्टोल्स इन हैं। इनसे ठंड से तो बचाव होगा ही बल्कि ड्रैसेस की खूबसूरती भी बरकरार रहेगी...

ठंड दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। बाहर निकलने से पहले ढ़ेर सारे गर्म कपड़े, स्वैटर, जैकेट पहनने पड़ते हैं। लेकिन यह साल का बैस्ट फैशन टाइम भी होता है। सर्दी का मौसम फैशन के लिहाज से बहुत हॉट होता है। फैशन के दीवाने, सर्दी के इस मौसम में भी फैशनेबल दिखना चाहते हैं, पर साथ ही खुद को ठंड से बचाए रखना भी चाहते हैं। युवा इस कूल सीजन में खुद को हॉट बनाए रखने के लिए अपना फैशन स्टेटमेंट भी खूबसूरती के साथ चेंज करते हैं। इसलिए स्टाइलिश और डिफरैंट लुक के लिए उनकी पसंद होती है ऐसा विंटर वियर जिससे उनकी डिजाइनर ड्रैस पूरी तरह ढंके नहीं और साथ ही उनका स्टाइल भी बरकरार रहे।

सर्दी से बचाव के साथ ही यदि इसमें फैशन के रंग भी शामिल हो जाएं तो क्या बात है। विंटर में ट्रेंडी और स्टाइलिश अंदाज में रहने के लिए स्टोल्स खूब पसंद किए जा रहे हैं। स्टोल्स की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये आपकी ड्रैस को नोटिसेबल फ्लेयर देते हैं। वूलन और सिल्क से बने ये स्टोल्स स्मार्ट और डिफरेंट लुक्स भी दे रहे हैं। विभिन्न रंगों में उपलब्ध होने के कारण लड़कियों में इसकी खरीदारी जोरों पर चल रही है। ड्राइव करते समय या सर्दी में अपने चेहरे को ठंडी हवा और बेजान होने से बचाने के लिए लड़कियां इन स्टोल्स को पहनना पंसद कर रही हैं।

स्टोल्स का स्टाइल

स्टोल यानी चौकोर कपड़े का एक ऐसा टुकड़ा, जो इंडियन दुपट्टे और स्कार्फ का ही एक रूप है। हर कोई स्टोल्स पहनना पसंद कर रहा है। हर उम्र और मिजाज के लोग इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। स्टोल पहनने के कई तरीके हैं। आप अपने रंग-रूप और आउटफिट के हिसाब से स्टोल को कई तरीके से पहन सकती हैं। ज्यादातर महिलाएं इसे गले में हार की तरह दो बार घुमा कर डालती हैं और यह गले और गर्दन को पूरी तरह ढंक देता है। इन्हें गांठ बांधकर या फिर पिनअप करके भी पहना जा सकता है। लम्बे स्टोल को गले में कॉलर वाली शर्ट या स्वैटर के साथ डाल सकती हैं। जींस और शर्ट के साथ सिंपल पोल्का डॉट्स वाले स्टोल को गले में बांध सकती हैं और यदि आप थोड़ी बिंदास दिखना चाहती हैं तो इसे सिर पर भी बांध सकती हैं। कैजुअल दिखने के लिए आप स्टोल को गले में बिना गांठ बांधे भी डाल सकती हैं। पुरुष स्टोल को स्कार्फ की तरह इस्तेमाल करते हैं। पुरुषों के स्टोल्स यूनिसैक्स रंगों और फैब्रिक में आते हैं। इन्हें फॉर्मल और कैजुअल दोनों तरह की ड्रैसेस के साथ पहन सकते हैं। फॉर्मल वियर के साथ इसे नॉट लगाकर पहन सकते हैं, जिसके सिरे या तो चैस्ट तक लंबे हों या फिर आपके कोट की लंबाई के बराबर।

स्टाइलिश लुक

एक्सैसरीज में स्टोल्स का क्रेज बढ़ रहा है। यही वजह है कि युवतियां शॉल की बजाय स्टोल्स पहनना ज्यादा पसंद करती हैं। अगर इनका चयन अपनी पर्सनैलिटी के हिसाब से किया जाए, तो कॉलेज जाना हो या फिर किसी पार्टी में स्टोल्स आपको बहुत डैशिंग लुक देते हैं। स्टोल्स इंडियन व वैस्टर्न दोनों तरह की ड्रैसेज पर फबते हैं। जींस, टॉप, कैप्री व स्कर्ट्स पर ये स्टोल्स कूल लुक देते हैं। इसे आप सलवार सूट के साथ भी कैरी कर सकती हैं। अगर आप इन्हें जींस के साथ मैच करके पहनना चाहती हैं, तो पतला फोल्ड बनाकर मफलर लुक में कैरी कर सकती हैं। स्कर्ट पर पतला फोल्ड करके इसके दोनों सिरे आगे की तरफ लेकर डाल सकती हैं।

सॉफ्ट एंड कंफर्टेबल

माना जाता है कि सर्दियों में गले को बचाना, उसे ढंक कर रखना बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे शरीर की कई नाजुक नसें गले से जुड़ी होती हैं इसलिए सर्दियों में गले को बचाना जरूरी है। स्टोल्स को गले में मफलर की ही तरह लपेटा जाता है। सर्दियों में आमतौर पर लंबे स्टोल कैरी किए जाते हैं, जिन्हें गले में डालकर गर्दन, कान और चेहरे को ठंड से बचाया जा सकता है। इस तरह ये आपको एक स्टाइलिश फैशनेबल लुक तो देते ही हैं, साथ ही आपका ठंड से बचाव भी करते हैं। स्टोल्स मफलर से ज्यादा हल्के, काफी गर्म और बेहद सॉफ्ट फैब्रिक में होते हैं। इसलिए ये बेहद कंफर्टेबल होते हैं और सर्दी से बचाव करने में बेजोड़।

मैचिंग एंड कंट्रास्ट

स्टोल्स के इतना लोकप्रिय होने का एक कारण यह भी है कि ये बहुत ही किफायती होते हैं, इनमें रंगों की बड़ी वैरायटी मिल जाती है और डिजाइंस की भरमार रहती है। इसके चलते यंगस्टर्स अपनी ड्रैसेस के साथ मैचिंग रंगों वाले स्टोल्स खूब खरीदती हैं। कई लोग इन्हें अपनी ड्रैस के कलर के अपोजिट कंट्रास्ट रूप में भी डालना पसंद करती हैं। स्टोल यदि आपकी आउटफिट के साथ कॉन्ट्रास्ट में होगा तो ज्यादा हॉट लुक देगा। इसलिए यदि आप ब्लैक ड्रैस ट्राई कर रही हैं तो कलरफुल स्टोल आपको ज्यादा स्मार्ट और खूबसूरत लुक देगा।

सिल्क स्टोल्स हैं लाजवाब

सिल्क व वूलन मिक्स से बने स्टोल्स इन दिनों महिलाओं व युवतियों की पहली पसंद बने हुए हैं। इस सीजन में थोड़ा हटकर ट्राई करें। इस मौसम में फैब्रिक का सबसे ज्यादा महत्व है। सिल्की टच लिए स्टोल्स अपने रिच लुक के कारण ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। सिल्क स्टोल कई शेप्स, डिजाइन और कलर्स में आप खरीद सकती हैं। स्कवेयर सिल्क स्टोल लड़कियां ज्यादा प्रेफर करती हैं क्योंकि यह औरों से अलग लुक देता है साथ ही इसे ज्यादा आसानी से कैरी किया जा सकता है। हालांकि कड़ाके की ठंड में वूलन स्टोल्स ही आपको गर्माहट देगा। कैजुअल लुक के लिए चैकी व प्लेन स्टोल्स खासतौर से युवतियों को पसंद आ रहे हैं। कॉटन के स्टोल में ब्राइट कलर्स जैसे गोल्डन, ब्लू, ब्राउन और रेड खास हैं। इन दिनों एनिमल प्रिंट और फ्लोरल प्रिंट्र वाले स्टोल ट्रैंड में हैं। एनिमल प्रिंट के स्टोल से बोल्डनैस भी झलकती है और खूबसरती भी। फ्लोरल प्रिंट के स्टोल्स का अंदाज औरों से जुदा ही होता ह। ये कैरी करने में तो अच्छे लगते ही हैं, साथ हीफैमिनिन लुक भी देते हैं। डिजाइनर्स स्टोल्स भी युवतियों को अट्रैक्ट रहे हैं, जिनमें कांथा वर्क, ब्रॉकेट की बॉडर्स फैशन में है। वूलन स्टोल प्योर वूल से बनाई जाती हैं और काफी गर्म होती हैं। इन्हें हर उम्र के लोग इस्तेमाल कर सकते हैं। कश्मीरी स्टोल को कॉटन व वूल को मिलाकर बनाया जाता है। यह युवाओं के लिए खास है। पशमीना स्टोल सबसे सॉफ्ट व हल्की होती है। लाइट वेट होने की वजह से इसे यंगस्टर्स पसंद करते हैं। रॉ सिल्क स्टोल हाथ से बनाए जाते हैं। फैदर स्टोल बेहद फैंसी होती हैं। हैंडलूम स्टोल हाथ से बनती हैं, जो अलग लुक वाली व डिजाइनर होती हैं। ऑक फॉरेस्ट सिल्क स्टोल में सिल्ककी सॉफ्टनैस और वूल की गर्माहट का मिश्रण होता है।

मैचिंग ड्रैस से बनें परफैक्ट

नई-नई शादी हुई हो तो हसबैंड और वाइफ दोनों ही अलग लुक में नजर आना चाहते हैं। खास तौर से डिनरलाइट पार्टीज, त्यौहारों एवं पारिवारिक समारोहों पर, ऐसे में मैचिंग ड्रैस एक परफैक्ट आप्शन नजर आता है जिसे आमतौर पर सैलीब्रिटीज कपल कैरी करते हैं। मौसम और समय के अनुसार आप रंग चुन सकते हैं या चाहें तो मैचिंग कंट्रास्ट भी कर सकते हैं। वास्तव में यह प्रेम को अभिव्यक्त करने के साथ ही रचनात्मकता और कुछ अलग करने की संतुष्टि भी प्रदान करता है।

ट्रैडिशनल लुक में सजें

इस रेंज में पत्नी के पास लहंगा, साड़ी, सलवार-सूट, गरारा और अनारकली जैसे कई विकल्प उपलब्ध हैं, तो पति भी उनके साथ कुर्ता-पायजामा, धोती-कुर्ता या शेरवानी जैसे ट्रैडिशनल परिधान चुन सकते हैं। यूं तो ट्रैडिशनल ड्रैसेज में केवल लाल, नारंगी, पीला रंग ही पसंद किया जाता था, परंतु अब आप रेडियम ग्रीन, ब्ल्यू या पर्पल, आइस ब्ल्यू, लीफ ग्रीन आदि से लेकर क्रीम और चॉकलेट कलर भी इस कैटेगरी में पसंद कर सकती हैं। अपने लहंगे, साड़ी या सलवार सूट की मैचिंग के हिसाब से पतिदेव के लिए उसी कलर में पाइपिंग, लाइनिंग या एम्ब्रायडरी वाला कुर्ता या शेरवानी चुनें।

यदि पतिदेव एक जैसे रंगों वाले परिधान नहीं चाहते तो आप उनके कुर्ते की नैक और स्लीव्स पर सेम कलर की हल्की एम्ब्रायडरी के साथ अपनी ड्रैस के कलर से मैचिंग चूड़ीदार पायजामा या धोती चुन लें या फिर उनके लिए मैचिंग स्टोल लें, इससे भी आप मैचिंग ड्रैस का लुत्फ उठा सकती हैं।

मॉडर्न - यह एक ऐसा ऑप्शन है जिसमें मैचिंग से किसी भी पति को एतराज नहीं हो सकता। यदि आप शानदार ईवनिंग गाऊन या फुल लैंथ ड्रैस पहन रही हैं तो उनके लिए थ्री पीस सूट, सामान्य सूट या फिर जींस के साथ अट्रैक्टिव एम्ब्रायडरी वाली शेरवानी निकाल लें। आप दोनों सब लोगों में अलग एवं आकर्षक नजर आएंगे। इसके अलावा पति के सूट या टाई से मैच करता आपका गाऊन भी एक अच्छा विकल्प है।

एक्सैसरीज - फुटवियर, वॉच, पर्स, बैग, क्लच, ब्रेसलैट, नैकलेस, बैल्ट, ईयररिंग्स या फिर बीडेड ज्यूलरी इत्यादि ढेर सारे ऑप्शंस हैं जो आप दोनों एक-दूसरे के ड्रैसअप के लिहाज से मैच कर सकते हैं। यहां आप अपनी पूरी क्रिएटिविटी दिखा सकते हैं।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने जापान को हराकर एशियन चैंपियंस ट्रॉफी जीती

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली (ईएमएस)। भारतीय महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियन चैंपियंस ट्रॉफी जीत ली है। खिताबी मुकाबले में भारतीय महिला टीम ने आसानी से जापान को 4-0 से हरा दिया। इस मुकाबले में भारत की ओर से संगीता ने 17वें मिनट में पहला गोल किया जबकि नेहा ने 46वें मिनट में दूसरा व लालरेमसियामी ने 57वें मिनट में तीसरा गोल किया। इसके बाद वंदना कटारिया ने 60वें मिनट में गोल कर जापानी टीम को कोई अवसर नहीं दिया। संगीता और वंदना ने मैदानी गोल किये जबकि नेहा और लालरेमसियामी ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागे। भारत ने इससे पहले टूर्नामेंट के लीग चरण और एशियाई खेलों के ब्रॉन्ज कांस्य पदक के प्लेऑफ में भी जापान को 2-1 के समान अंतर से हराया था।

वहीं कोबायाकावा शिहो ने 22वें मिनट में जापान के लिए गोल किया था पर वीडियो रेफरल के बाद उनके इस गोल को खारिज कर दिया गया। जापान को 52वें मिनट में पेनल्टी स्ट्रोक भी मिला था, पर काना उराता इसे गोल में बदल नहीं पायीं। चीन ने दक्षिण कोरिया को 2-1 से हराकर तीसरा स्थान हासिल किया।

महिला चैंपियंस ट्रॉफी का यह 7वां सत्र था। जिसमें भारतीय महिला टीम ने दूसरी बार खिताब जीता है। इससे पहले 2016 में सिंगापुर में खेले गए टूर्नामेंट में भारतीय टीम ने चीन को हराकर खिलाब अपने नाम किया था।

कैब ने विराट को जन्मदिन पर सोने की परत वाला बल्ला भेंट किया

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मुकाबले में 35वें जन्मदिन पर शतक लगाकर एक अहम उपलब्धि हासिल की है। विराट जन्मदिन पर शतक लगाने वाले दुनिया के 7वें बल्लेबाज जबकि भारत के तीसरे बल्लेबाज हैं। इस अवसर पर बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) के प्रमुख स्नेहाशीष गांगुली ने विराट को सोने की परत वाला बल्ला भेंट किया। इस बल्ले पर 'हैप्पी बर्थडे विराट' लिखा हुआ था। इसके नीचे के हिस्से पर लिखा था, आप समर्पण के प्रतीक हैं और इस बात का सबूत कि उम्र सिर्फ एक नंबर भर है। कोहली ने इस विशेष उपहार के साथ भारत की जीत के बाद स्टेडियम में ही एक बड़ा सा केक काटा। इस पर हैप्पी बर्थडे विराट लिखा था, साथ ही उनका स्टेच्यू भी इसपर लगा था।

कोहली ने इस मैच में महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के 49 शतकों की बराबरी भी कर ली। यह पहली बार है जब कोहली ने वनडे विश्व कप में 500 रन का आंकड़ा पार किया और पहली बार एकदिवसीय विश्व कप के एक ही संस्करण में दो शतक बनाए हैं। कोहली के शतक की इस मैच में भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका रही।

अफगानिस्तान की सफलता के पीछे है अजय जडेजा : गुलबदिन

मुंबई (एजेंसी)। एकदिवसीय विश्वकप में इस बार अफगानिस्तान ने अपने अच्छे प्रदर्शन से सभी का ध्यान खींचा है। इस टीम ने अपने से बेहतर टीमों को हराकर सेमीफाइनल के लिए अपनी संभावनाएं बनाये रखी हैं। एशियाई खेलों में अफगान टीम के कप्तान रहे गुलबदिन नायब ने इसका श्रेय भारतीय टीम के पूर्व हरफनमौला अजय जडेजा को दिया है। जडेजा विश्व कप के दौरान अफगानिस्तान टीम के मैंटोर हैं। अफगानिस्तान की टीम मंगलवार को ऑस्ट्रेलिया से खेलेगी। उसके 7 मैचों में 4 जीत और 3 हार के साथ ही 8 अंक हैं। वहीं न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के नाम भी इतने ही अंक है पर इन दोनों टीमों ने एक-एक मैच अधिक खेले हैं। अफगानिस्तान नेट रन रेट -0.330 के मामले में इन दोनों टीमों से पीछे है। नायब ने 2019 विश्व कप में टीम का नेतृत्व किया था पर वर्तमान विश्व कप में वह टीम के रिजर्व खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा कि जब अफगानिस्तान के खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करने की बात आती है तो जडेजा के सुझाव 'अविश्वसनीय रहे हैं।

नायब ने टीम के अभ्यास सत्र के दौरान कहा कि टीम के परिणामों पर मैंटोर की भूमिकाओं का काफी प्रभाव होता है। वह जडेजा खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करते हैं और वह किसी बड़े खिलाड़ी की तरह अपना अनुभव साझा करते हैं। अजय भाई भारत के लिए खेल चुके हैं, वह जानते हैं और अनुमान भी लगा सकते हैं कि खेल के किसी भी चरण में क्या हो सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे दिमाग में पूरे मैच का खाका होता है पर वह मैच पर करीबी नजर रखते हैं और उसे 10-10 मिनट के सत्र में बांट कर योजना बनाते हैं। इस मैदान के पास अरब सागर है ऐसे में उन्हें पता है कि यहां क्या हो सकता है। उन्हें इस बात का अंदाजा रहता है कि गेंद कितनी स्विंग करेंगी या पिच स्पिनरों के लिए मददगार होगी। दिन और रात के हालातों में क्या फर्क होगा। हमें इन चीजों के बारे में आसानी से पता चल जाता है।

रोहित ने की शमी और श्रेयस की प्रशंसा, अच्छा प्रदर्शन नहीं करते तो भी टीम में रखता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैच के बाद मोहम्मद शमी और श्रेयस अय्यर की जमकर प्रशंसा की। रोहित ने कहा कि अगर ये दोनो खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं भी करते तो भी मैं टीम में शामिल करता। शमी ने इस विश्व कप में पहले 4 मैच नहीं खेले थे। इसके बाद भी विश्व कप 2023 में उन्होंने भारतीय टीम की ओर से सबसे अधिक 16 विकेट लिए हैं। शमी ने केवल 26 ओवर में ये विकेट लिए। उनका स्ट्राइक रेट 9.7, औसत 7 और इकोनॉमी रेट 4.30 रहा। वहीं अय्यर ने विश्व कप की अपनी पहली 6 पारियों में तो कुछ विशेष नहीं किया और वह केवल एक अर्धशतक लगा पाये पर इसके बाद दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के खिलाफ उन्होंने लगातार दो अर्धशतक लगाये।

रोहित ने श्रेयस को लगातार अवसर देने के सवाल पर कहा, अगर ये दोनों खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं भी करते और भरोसे पर खरा नहीं उतरते तो भी मेरा इन पर विश्वास कम नहीं होता। साथ ही कहा कि खिलाड़ियों को आजादी देना जरूरी है। उन्हें यह समझाना अहम होता है कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है और मैं यह भी समझता हूं कि हर मैच में खिलाड़ी बेहतर नहीं कर सकता। ऐसे में आपको उन खिलाड़ियों पर भरोसा करना होगा जिन्होंने पूर्व में टीम के लिए अच्छा किया था।

भारतीय शमी को लेकर कहा कि वह शुरुआती कुछ मुकाबलों में शमी अंतिम -11 का हिस्सा नहीं थे पर वापसी के बाद से पिछले 4 मैच में उन्होंने जिस तरह की गेंदबाजी की, वो उनकी मजबूत मानसिकता और एक खिलाड़ी के तौर पर उनकी क्षमताओं को दिखाता है। अय्यर के साथ भी ऐसा ही है, वो शुरुआत में अपने स्तर के मुताबिक रन नहीं बना पा रहे थे पर पिछले दो मैच में उन्होंने अर्धशतक लगाकर अपनी क्षमताएं दिखाई।

पाक के सेमीफाइन में पहुंचने की राह अब भी आसान नहीं

बेंगलुरु ।यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ हुए मुकाबले में जीत के साथ ही पाकिस्तान क्रिकेट टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने की संभावनाएं बन गयी हैं। अभी पाकिस्तान और न्यूजीलैंड दोनों ही टीमें अंक तालिका में चौथे और 5वें स्थान पर बनी हुई है। बराबर अंक होने के बाद भी न्यूजीलैंड टीम बेहतर रन औसत के कारण आगे है। उसका औसत 0.398 नेट जबकि पाकिस्तान का नेट रन औसत 036 है। पाक को अब अगले मैच में इंग्लैंड से खेलना है जिसमें भी उसका लक्ष्य बड़ी जीत दर्ज करना रहेगा। वहीं न्यूजीलैंड को श्रीलंका से खेलेगी। ऐसे में पाक को क्वालिफाई करना है तो उन्हें न्यूजीलैंड की जीत से 130 रन ज्यादा से जीतना होगा। अगर न्यूजीलैंड की टीम श्रीलंका से 50 रन से जीत जाती है तो पाक को इंग्लैंड को 180 रन से हराना जरूरी होगा। तभी वह बेहतर नेट रन रेट के साथ सेमीफाइनल में पहुंचेगी। पाकिस्तान की सेमीफाइनल की उम्मीदों पर अफगानिस्तान और श्रीलंका पानी फेर सकते हैं। पाकिस्तान टीम अगर इंग्लैंड के खिलाफ जीत भी जाती है तो भी उसके लिए सीधे सेमीफानल में पहुंचना संभव नहीं है। अफगानिस्तान 7 मैचों में 4 जीत के साथ अंक तालिका में छठे स्थान पर हैं। उनके दो आगामी मुकाबले ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका से है। अगर वह दोनों में से एक भी जीत गया तो पाकिस्तान की राह कठिन हो जाएगी। अगर अफगानिस्तान दोनों ही मैच हारता है तो ही पाक टीम सेमीफाइनल की ओर बढ़ेगी। आगे जा पाएगी। इसके अलावा पाक को ये दुआ करनी होगी कि श्रीलंका की टीम न्यूजीलैंड को हरा दें।

लीजेंड्स लीग के लिए चल रही तैयारियां

श्रीनगर (एजेंसी)। दिग्गज पूर्व क्रिकेटरों की लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) के लिए तैयारियां जारी है। इसी माह 18 नवंबर से ये लीग भारत में शुरु होगी। इसमें देश विदेश के कई दिग्गज पूर्व क्रिकेटर भाग लेंगे। ये लीग मुकाबले 9 दिसंबर तक चेलेंगे। 5 शहरों में ये लीग खेली जाएगी। देश के पांच शहरों रांची, देहरादून, जम्मू, विजाग और सूरत में ये मैच खेले जाएंगे। एलएलसी 2023 का शुरुआती मैच 18 नवंबर को रांची में शुरु होगा। इसमें इंडिया कैपिटल्स का मुकाबला भीलवाड़ा किंग्स से होगा। 2022 फाइनल में भी यही दोनों टीमों एक दूसरे से टकरायीं थीं। तब इंडिया कैपिटल्स ने भीलवाड़ा किंग्स को 104 रनों से हराया था।

इस बार 22 दिनों में 19 मैच खेले जाएंगे। रांची के बाद 24 नवंबर को देहरादून में भीलवाड़ा किंग्स का सामना गुजरात जायंट्स से होगा। जम्मू में 27 नवंबर से 1 दिसंबर तक 4 मैच खेले जाएंगे जबकि विजाग में 2 दिसंबर से 4 दिसंबर तक तीन मैच होंगे। एलएलसी 2023 का नॉकआउट चरण सूरत में खेला जाएगा, जिसमें सेमीफाइनल 5 दिसंबर और 6 दिसंबर को खेले जाएंगे।टूर्नामेंट के पहले मैच में 18 नवंबर को पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर (इंडिया कैपिटल्स) और इरफान पठान (भीलवाड़ा किंग्स) की टीमों के बीच मुकाबले होंगे। लीजेंड्स लीग क्रिकेट के सह-संस्थापक और सीईओ रमन रहेजा ने कहा कि रांची, देहरादून में खेले जाने वाले खेलों के साथ, जम्मू, विजाग और सूरत, हम सिर्फ एक टूर्नामेंट की मेजबानी नहीं कर रहे हैं बल्कि हम देश में दूर-दूर तक खेल के प्रति प्यार फैला रहे हैं। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना एलएलसी में नई फ्रेंचाइजी अर्बनराइजर्स हैदराबाद की कप्तानी करेंगे।

सुनील नारायण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से रिटायर्ड, बोले- फेंचाइजी क्रिकेट खेलता रहूंगा

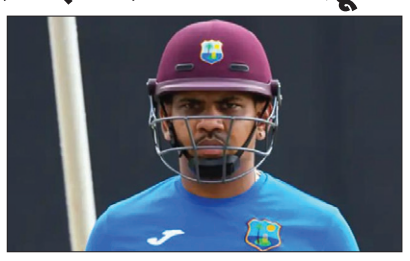

पोर्ट ऑफ स्पेन । वेस्टइंडीज के दिग्गज स्पिनर सुनील नारायण ने रविवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। आईसीसी टी20 विश्व कप 2012 जीतने वाली वेस्टइंडीज की टीम के सदस्य रहे नारायण ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पिछला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला अगस्त 2019 में प्रोविडेंस में भारत के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के रूप में खेला था। 35 साल के नारायण ने 'इंस्टाग्राम' पर लिखा कि मुझे आखिरी बार वेस्टइंडीज की ओर से खेले 4 साल से अधिक समय हो गया लेकिन आज मैं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करता हूं। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक तौर पर मैं कम बोलने वाला व्यक्ति हूं लेकिन निजी तौर पर कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने मेरे पूरे करियर में मुझे अटूट समर्थन दिया है और वेस्टइंडीज का प्रतिनिधित्व करने के मेरे सपने को साकार करने में मेरी मदद की है। मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। शीर्ष स्तर के क्रिकेट से संन्यास लेते हुए नारायण ने अपने परिवार, विशेषकर पिता और आसपास के अन्य लोगों को धन्यवाद दिया। उन्होंने लिखा कि मैं क्रिकेट वेस्टइंडीज, कोचिंग स्टाफ, उत्साही वेस्टइंडीज प्रशंसकों और निश्चित रूप से अपने साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मुझे सभी प्रारूपों में उच्चतम स्तर पर खेलने में सक्षम बनाया और कुछ यादगार प्रदर्शन किया। नारायण सुपर50 कप प्रतियोगिता में त्रिनिदाद और टोबैगो के लिए खेल रहे हैं लेकिन उन्होंने कहा कि यह उनकी अंतिम लिस्ट ए प्रतियोगिता होगी। नारायण ने हालांकि कहा कि वह फ्रेंचाइजी क्रिकेट के जरिए खेल से अपना जुड़ाव जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि कहने की जरूरत नहीं है कि निकट भविष्य में मैं फ्रैंचाइजी क्रिकेट में खेलता रहूंगा। नारायण अब भंग हो चुकी चैंपियंस लीग टी20 में 2011 के दौरान त्रिनिदाद के लिए खेलते हुए सुर्खियों में आए थे।

दक्षिण अफ्रीका के कोच वॉल्टर का बयान, कहा- 'पिच में कोई खराबी नहीं हमने 70 -80 रन ज्यादा दिये'

कोलकाता(एजेंसी)। वर्ल्ड कप 2023 में रविवार को टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को भी धूल चटा दी है। इस मुकाबले से पहले ऐसा माना जा रहा था कि साउथ अफ्रीका की टीम भारत को कड़ी टक्कर देगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कोलकाता के ईडन गार्डन्स में टीम इंडिया ने टेंबा बावुमा की टीम को 243 रनों से करारी शिकस्त दी। दक्षिण अफ्रीका की इस हार के बाद ईडन गार्डन्स की पिच को लेकर को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं जिस पर हेड कोच रॉब वाल्टर ने जवाब देकर सबको चुप करा दिया है।

दरअसल, दक्षिण अफ्रीका के कोच रॉब वॉल्टर ने पिच पर ठीकरा फोड़ने की बजाय कहा कि यह 326 रन वाली पिच नहीं थी लेकिन उनके गेंदबाजों ने 70-80 रन अधिक दे दिये। भारत के पांच विकेट पर 326 रन के जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम 83 रन पर आउट हो गई जिससे भारत ने 243 रन से जीत दर्ज की।

वॉल्टर ने मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा, ''पिच को दोष देना गलत होगा। इसी पिच पर एक टीम ने 326 रन बनाये और दूसरी टीम 100 भी नहीं बना सकी। ऐसे में पिच को गलत ठहराना सही नहीं है।'' उन्होंने कहा, '' यह जरूर कह सकते हैं कि यह 320 रन वाली पिच नहीं थी। हमने 70-80 रन ज्यादा दे दिये। भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन किया।''

उन्होंने कहा, ''भारत ने हमसे बेहतर प्रदर्शन किया। हर विभाग में। इस टूर्नामेंट में हमने भी दूसरी टीमों के खिलाफ अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन भारतीय टीम आज हमसे कहीं बेहतर थी।'' उन्होंने ईडन गार्डन पर करीब 65000 दर्शकों के सामने विश्व कप में भारत के खिलाफ खेलने को अपनी टीम के लिये शानदार मौका बताया। वॉल्टर ले कहा ,'' ऐसा मौका बार बार नहीं मिलता। आप खचाखच भरे ईडन गार्डन पर विश्व कप में भारत के खिलाफ खेल रहे थे। सभी खिलाड़ी इसे लेकर रोमांचित थे लेकिन नर्वस नहीं थे।'' नयी गेंद से अब तक शानदार प्रदर्शन करने वाले तेज गेंदबाज मार्को जेनसन ने ईडन गार्डस पर लय खो दी और काफी अतिरिक्त रन दिये।

कोच ने हालांकि उनका बचाव करते हुए कहा ,'' इस तरह के मैच में इतने दर्शकों के सामने गेंदबाजी करने से उसे सीखने को मिला होगा। मुझे यकीन है कि

वह नॉकआउट चरण में लय में लौटेगा।'' उन्होंने कहा ,'' अच्छी बात यह है कि यह ऐसा मैच नहीं था जिसे जीतना बहुत जरूरी था। यह एक अच्छी टीम के खिलाफ खेलने का मौका था। हम अच्छा नहीं खेल सके लेकिन मानसिक और शारीरिक रूप से नये सिरे से तरोताजा होकर वापसी करेंगे।

वैशाली और विदित को फिडे ग्रैंड स्विस खिताब, कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। आर वैशाली और विदित गुजराती ने भारत को दोहरी सफलता दिलाते हुए फिडे ग्रैंड स्विस शतरंज टूर्नामेंट में क्रमशः महिला और ओपन वर्ग के खिताब जीते तथा प्रतिष्ठित कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया। वैशाली ने रविवार की रात को खेले गए 11वें और अंतिम राउंड में मंगोलिया की बटखुयाग मुंगुटुउल के साथ बाजी ड्रॉ कराई जबकि विदित ने सर्बिया की एलेक्जेंडर प्रेडके को हराकर प्रतियोगिता में अपनी सातवीं जीत दर्ज की और ओपन वर्ग में शीर्ष स्थान हासिल किया।

वैशाली और विदित दोनों ने समान 8.5 अंक बनाए और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से आधा अंक के अंतर से खिताब जीते। अगले साल अप्रैल में कनाडा में होने वाले कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिएक्वालीफाई करने के अलावा वैशाली को 25000 अमेरिकी डॉलर (20 लाख रुपये से

अधिक), जबकि विदित को 80000 अमेरिकी डॉलर (66 लाख रुपये से अधिक) का पुरस्कार मिला।

महिला वर्ग में दूसरा स्थान यूक्रेन की अन्ना मुज्यचुक को मिला जिन्होंने स्वीडन की अनुभवी ग्रैंडमास्टर पिया क्रैम्लिंग से ड्रॉ खेला। कैंडिडेट्स में जगह बनाने वाली दूसरी महिला खिलाड़ी तान झोंग्यी थीं जो यहां तीसरे स्थान पर रहीं। मुज्यचुक विश्व महिला कप से पहले ही क्वालीफाई कर चुकी थी। ओपन वर्ग में हिकारू नाकामुरा ने भारत के अर्जुन एरिगैसी के साथ बाजी ड्रॉ खेली।

इस तरह से भारतीय खिलाड़ी इस टूर्नामेंट में अजेय रहा लेकिन उन्हें चौथे स्थान से ही संतोष करना पड़ा। वैशाली ग्रैंड स्विस टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी है। कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में उनके अलावा भारत की पहली महिला ग्रैंडमास्टर कोनेरू हंपी के भी भाग लेने की संभावना है। हंपी अपनी ऊंची रेटिंग के कारण इस टूर्नामेंट में जगह बना सकती है लेकिन इसकी औपचारिक घोषणा जनवरी 2024 में की जाएगी। अभी वैशाली भारतीय शतरंज की नई स्टार हैं। उनकी निगाह यहां स्वर्ण पदक जीतने पर टिकी थी। ग्रैंड मास्टर की उपाधि हासिल करने के लिए उन्हें थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा। डी हरिका 2011 में महिला वर्ग से भारत की दूसरी ग्रैंडमास्टर बनी थी।

पोंटिंग के शीर्ष खिलाड़ियों की सूची में विराट सहित किसी भी किसी भारतीय को नहीं मिली जगह

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मुकाबले में अपना 49 शतक लगाने के साथ ही महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के रिकार्ड की बराबरी कर ली। अब इस टूर्नामेंट में उनके पास सचिन के रिकार्ड को तोड़ने का अच्छा अवसर है। इसके अलावा विराट ने अपने 500 रन भी पूरे कर लिए हैं। विश्वकप में शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय टीम सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पहली टीम भी गयी है। इसके बाद भी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिकी पोंटिंग ने अभी तक विराट सहित किसी भी भारतीय खिलाड़ी को अपने शीर्ष-3 खिलाड़ियों की सूची में शामिल नहीं किया है। वहीं विराट ने इस बार विश्वकप में दो शतक और चार अर्धशतक भी लगाये हैं। वो इस टूर्नामेंट में अपने 500 रन भी पूरे कर चुके हैं। मुश्किल परिस्थिति में लक्ष्य का पीछा करने में वह पारंगत हैं। इसके बाद भी पोंटिंग ने उन्हें क्यों नजरअंदाज किया ये समझ से परे है।

इस विश्व कप में भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने भी आठ मैचों में 55 से अधिक की औसत से 442 रन बना दिए हैं। पोंटिंग ने उन्हें भी अपनी सूची में नहीं नहीं रखा है। इसके अलावा तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने तीन मैचों में उन्होंने दो बार पांच विकेट लेकर 14 विकेट लिए। इसके अलावा पोंटिंग ने युवा तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और जसप्रीत बुमराह को भी पोंटिंग ने पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। पोंटिंग ने अपने शीर्ष-3 में खिलाड़ियों में अपने ही देश के एडम जम्पा को पहले स्थान पर रखा है। जम्पा ने इस टूर्नामेंट के 7 मैचों में 19 विकेट लिए हैं। वहीं दक्षिण अफ्रीका के क्विंटन डी कॉक दूसरे स्थान पर हैं। वह सबसे अधिक रन बनाने वालों की सूची में पहले स्थान पर हैं। इसके अलावा आठ मैचों में 16 विकेट लेने वाले दक्षिण अफ्रीका के मार्को जेंसन को भी शीर्ष खिलाड़ियों में शामिल किया है।

वीनस अभी खेल में बनी रहेंगी

लास एंजिल्स । विश्व नंबर की पूर्व एक टेनिस खिलाड़ी अमेरिका की वीनस विलियम्स ने अभी अपने संन्यास की संभावनाओं कों खारिज किया है। वीनस ने कहा कि अभी उनका खेल से दूर होने का इरादा नहीं है वह अगले वर्ष मार्च में होने वाली प्रतियोगिता में वापसी करेंगी। विलियम्स ने हाल ही में एक साक्षात्कार में कहा उन्होंने अगले अभी खेल में बने रहना तय किया है। विलियम्स ने कहा कि मैंने अमेरिकी ओपन तक ठीक होने का पूरा प्रयास किया। मैं फॉर्म में नहीं हूं इसलिए अब मैं वापस आने तक आराम कर रही हूं। मैं मार्च को लक्ष्य बना रही हूं, तभी टूर्नामेंट वापस जाएंगे, इसलिए मेरा लक्ष्य है जब अमेरिकी ओपन टूर्नामेंट वापस आएंगे तो यह शुरु होगा। विलियम्स ने विंबलडन में हार के बाद तीन मुकाबले खेले। वह मॉन्ट्रियल में पहले दौर में हार गईं, इसके बाद सिनसिनाटी में शुरुआती दौर में वेरोनिका कुडरमेतोवा पर उसे जीत मिली। वह सत्र का आखिरी मैच यूएस ओपन के पहले दौर में बेल्जियम ग्रीट मिन्नेन से 6-1, 6-1 से हार गयी थीं। टूर्नामेंट में 100 करियर मैचों में यह विलियम्स की यूएस ओपन की सबसे एकतरफा हार थी।

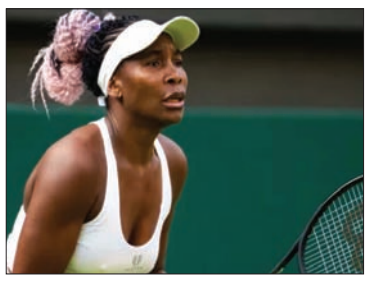

पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा से 33 लाख रुपये की ठगी

नई दिल्ली । पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा से ठगी का मामला सामने आया है। आकाश से एक कारोबारी ने करीब 33 लाख रुपये हड़प लिए। इस क्रिकेटर ने इस मामले की शिकायत पुलिस से की है। क्रिकेटर से संन्यास के बाद कमेंटेटर बने आकाश ने आगरा में पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि एक कारोबारी कमलेश पारिख और उनके बेटे ध्रुव ने उनसे 33.3 लाख रुपये लौटाये नहीं हैं। दोनों ने उनसे लौटाने की शर्त पर पैसा निवेश करवाया था। आकाश ने कहा है कि उन्होंने कमलेश और ध्रुव के कारोबार में 57.8 लाख रुपये निवेश किए थे। उस समय ध्रुव ने एक माह के अंदर पैसा लौटाने की बात कही थी पर एक साल बाद भी उन्होंने केवल 50 फीसदी पैसा ही दिया। आकाश ने अपनी शिकायत में कहा है, हमने औपचारिक रूप से नोटरीकृत समझौता किया, जिसमें शर्त थी कि ध्रुव को 20 फीसदी मुनाफा होने पर 30 दिनों के भीतर पैसा वापस करना था, और वसूली के लिए पोस्ट-डेटेड चेक भी प्रदान किए गए थे। हालांकि, एक साल बाद भी उन्होंने केवल 24.5 लाख रुपये वापस किए गए हैं, और इसके बाद जारी किए गए दो चेक बाउंस हो गए हैं। चोपड़ा ने मामले के मुख्य आरोपी कमलेश से बात की, जिसने कहा था कि वह उसे रकम का भुगतान कर देगा पर जब जब उन्हें पैसा नहीं मिला तो उन्होंने कानून का सहारा लिया। इसके बाद पिता और पुत्र ने उनकी बातों का जवाब देना ही बंद कर दिया। इस प्रकार उन्हें 33.3 लाख रुपये का नुकसान हुआ। इन दोनो ही लोगों पर पहले भी इसी प्रकार धोखाधड़ी के आरोप लगे थे।

जोकोविच 40 मास्टर्स 1000 खिताब जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने

पेरिस। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी सर्बिया के नोवाक जोकोविच ने पेरिस मास्टर्स खिताब जीतने साथ ही एक अहम उपलब्धि हासिल कर ली है। जोकोविच ने ग्रिगोर दिमित्रोव को 6-4, 6-3 से हराकर अपना रिकॉर्ड सातवां एटीपी मास्टर्स 1000 खिताब जीता। जोकोविच इसी के साथ ही 40 मास्टर्स 1000 खिताब जीतने वाले पहले खिलाड़ी भी बने। एक रिपोर्ट के अनुसार, इस जीत के साथ ही वह अब 18 मैचों की जीत की लय के साथ ही सत्र के अंत में एटीपी फाइनल में अपनी जगह बनाएंगी। जोकोविच ने कहा, यह सप्ताह मेरे लिए काफी अहम रहा। मेरे लिए हार के बाद वापसी करना आसान नहीं था। पेरिस ट्रॉफी जीतने के साथ ही जोकोविच ने एटीपी लाइव रेस टू ट्यूरिन में अपनी बढ़त 1490 अंक तक बढ़ा दी।

मध्यप्रदेश में बसपा सुप्रीमों मायावती की चुनावी सभाएं

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती मध्य प्रदेश के दो दिवसीय दौरे पर हैं। वे वहां विभिन्न चुनावी समाओं को संबोधित करने जा रही हैं। मध्य प्रदेश में बसपा सुप्रीमो अशोकनगर जिले और निवाड़ी जिले में चुनावी सभाओं को संबोधित करते हुए जनता को अपने साथ जोड़ने की कोशिश में जुट गईं हैं। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को चुनाव होना है और मतदान की मतगणना 3 दिसंबर को होनी है। इस चुनाव से पहले सभी राजनीतिक पार्टियों ने अपनी कमर कस ली है। सभी दल इस विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करना चाहते है। इसी के मद्देनजर बसपा सुप्रीमो मायावती मध्यप्रदेश में दो दिनों तक चुनावी प्रचार करेंगी। मध्य प्रदेश में मायावती अपनी पार्टी एवं गठबंधन के उम्मीदवारों के समर्थन में चुनावी जनसभा करेंगी।

सचिन जिंदगी है लेकिन विराट कोहली मेरी पसंद : सीमा हैदर

-वर्ल्ड कप में रविवार को हुई भारत की जीत के बाद विराट को बताया हीरो

ग्रेटर नोएडा । पाकिस्तान से भारत आईं सीमा हैदर ने रविवार को भारत और साउथ अफ्रीका के बीच हुए मैच में भारत की जीत के बाद टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली को अपना हीरो बताया है। सीमा हैदर ने एक निजी चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा कि सचिन उसकी जिंदगी है तो विराट उसकी खास पसंद है। उसे अब नया घर मिल गया है और अब उसे खास मेहमान का इंतजार है। सीमा हैदर ने आगे बताया कि वो विराट कोहली को बहुत पसंद करती है और उनकी तस्वीर को अपने कमरे में सजा कर रखती है। अब उसे बस विराट कोहली से मुलाकात का इंतजार है। मिली जानकारी के मुताबिक, सीमा हैदर से कमरे में विराट कोहली को दिन-रात देखने पर पूछा तो सचिन को इससे जलन नहीं होती। इस पर सीमा ने जवाब देते हुए कहा कि सचिन उसकी जिंदगी हैं जबकि विराट कोहली को वो पसंद करती है। सीमा हैदर के पास एक कॉफी का कप भी है जिस पर विरोट कोहली की फोटी बनी हुई है। सीमा हैदर ने आगे कहा कि ना सिर्फ वो बल्कि उसका पति सचिन मीणा भी विराट कोहली को पसंद करता है। वहीं सचिन से जब क्रिकेट वर्ल्ड कप में विराट के प्रदर्शन को लेकर सवाल पूछ गया तो उन्होंने कहा कि वो खुद भी विराट कोहली के फैन हैं इसलिए अगर उनकी पत्नी विराट को पसंद करती है तो इससे उन्हें कोई दिक्कत नहीं है। यूपी के जौनपुर जिले में यातायात विभाग ने नियमों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई शुरू कर दी है और इसी क्रम में रविवार को दो नाबालिग बच्चों के वाहन चलाने पर अभिभावकों पर 25-25 हजार रूपये का जुर्माना लगाया गया। यातायात निरीक्षक जी डी शुक्ला ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि जिलाधिकारी अनुज कुमार झा द्वारा गत दिवस सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में नाबालिगों द्वारा सड़कों पर वाहन चलाते हुए पाए जाने पर उनके अभिभावकों पर 25000 का जुर्माना लगाए जाने के आदेश दिये गये थे।

दंतेवाड़ा में हथगोला फटने से बीएसएफ के एक जवान की मौत

दंतेवाड़ा । छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में हथगोला फटने से बीएसएफ के एक जवान की मौत हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले में विधानसभा चुनाव ड्यूटी पर गए हिमाचल प्रदेश के सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवान की हथगोला फटने से मृत्यु हो गई। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के कटेकल्याण थाना परिसर में हथगोला फटने से बीएसएफ के हवलदार बलबीर चंद की मृत्यु हो गई है। उन्होंने बताया कि कटेकल्याण थाना परिसर में विधानसभा चुनाव के लिए रुके बीएसएफ के 70वीं बटालियन के जवान जब गश्त के लिए रवाना हो रहे थे तो हिमाचल प्रदेश के निवासी बलबीर चंद के पाऊच में रखा हथगोला फट गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि घटना के बाद घायल जवान को दंतेवाड़ा शहर के जिला अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना को लेकर मृतक जवान के परिवार के सदस्यों तक सूचना पहुंचा दी गई है।

महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री एकनाथ खडसे को पड़ा दिल का दौरा, इलाज जारी

मुंबई । महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के विधान परिषद सदस्य एकनाथ खडसे को अचानक दिल का दौरा पड़ा है। अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। राकांपा की नेता एवं सांसद सुप्रिया सुले ने रविवार को यह जानकारी देते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि वह एकनाथ खडसे की बेटी और शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष रोहिणी खडसे के संपर्क में हैं। इससे पहले, रोहिणी खडसे ने अपनी एक पोस्ट में कहा था कि उनके पिता को जलगांव के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है, क्योंकि वह पिछले दो दिनों से अस्वस्थ महसूस कर रहे थे। रोहिणी खडसे ने कहा कि सावधानी बरतने के लिए उनके पिता को मुंबई के एक अस्पताल में ले जाया जा रहा है और उनकी हालत स्थिर है। उन्होंने यह भी कहा कि अब चिंता की कोई बात नहीं है। गौरतलब है कि खडसे 2020 में भारतीय जनता पार्टी छोड़कर राकांपा में शामिल हो गए थे। वह 2022 में राज्य विधान परिषद के लिए सदस्य भी चुने गए।

केजरीवाल ने सरकारी कर्मचारियों को दिया 7-7 हजार रुपए का दीवाली बोनस

नई दिल्ली । दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने दिवाली बोनस देनें की घोषणा की है। मिली जानकारी के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली के सरकारी कर्मचारियों को 7-7 हजार रुपये का तोहफा दिया है। सीएम केजरीवाल ने सोमवार को दिल्ली सरकार के ग्रुप बी गैर-राजपत्रित और ग्रुप सी कर्मचारियों के लिए यह बोनस की घोषणा की है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली सरकार ने 80,000 कर्मचारियों को दिवाली बोनस देने के लिए 56 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हम दिल्ली सरकार के ग्रुप बी गैर-राजपत्रित और ग्रुप सी कर्मचारियों को बोनस के रूप में 7,000 रुपए देंगे। वर्तमान में लगभग 80,000 ग्रुप बी गैर-राजपत्रित और ग्रुप सी कर्मचारी दिल्ली सरकार के साथ काम कर रहे हैं। इस प्रकार से इस बोनस देने में कुल 56,000 करोड़ रुपए खर्च का खर्च आएगा। वहीं, दिल्ली सरकार ने वायु प्रदूषण के कारण प्राथमिक स्कूलों में छुट्टियां 10 नवम्बर तक बढ़ा दी है। शिक्षा मंत्री आतिशी ने रविवार सुबह सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा कि छठी से बारहवीं की कक्षाएं भी ऑन लाइन लगाने के स्कूल प्रबंधनों को विकल्प दिया गया है। हालांकि दिल्ली सरकार ने पहले 5 नवम्बर तक प्राथमिक स्कूलों में अवकाश घोषित किया था। अब लेकिन ग्रेप-4 की पाबंदियों में स्कूल बंद रखकर कक्षाएं ऑन लाइन ही चलाने का प्रावधान किया गया है।

नकली हीरे ने छीनी असली हीरे की चमक - मजदूरों की रोजी-रोटी खतरे में

सूरत । सूरत के उपनगर कटार गांव में हीरा तरासने के कई कारखाने हैं। लेकिन इस बार हीरा के कारखाने में काम करने वाले कारीगरों की दीवाली फीकी होने वाली है। हीरे के तरासने का काम बहुत कम हो गया है। मजदूरी भी नहीं मिल पा रही है। जिसका असर कारीगरों पर दीपावली के अवसर पर देखने को मिल रहा है। हीरा तरासने के काम में लगे मजदूरों का कहना है,कि पहले इसमें 10000 से लेकर 25000 रूपये प्रतिमाह तक की कमाई हो जाती थी। लेकिन अब हीरा तरासने का काम काफी कम हो गया है। नकली हीरे की चमक बाजार में बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है। जिसके कारण असली हीरों का कारोबार दिनों दिन काम होता जा रहा है। पहले कुशल कारीगर एक माह में 200000 रूपये तक की कमाई कर लेते थे। अब उन्हें 25000 रूपये भी प्रतिमाह नहीं मिल पा रहे हैं। असली हीरे की मांग 75 फीसदी तक घट गई है। 15 दिसंबर तक के लिए उद्योग ने कच्चे हीरे का आयात रोक दिया है ।जिसके कारण हीरा तरासने वाले कारीगरों को कम नहीं मिल पा रहा है।

एमपी में अखिलेश ने कहा- बीजेपी, कांग्रेस दोनों दल जातिगत जनगणना के पक्षधर

-टीकमगढ़ के जतारा की जनसभा में किया 3000 रुपए हर माह समाजवादी पेंशन का वादा

टीकमगढ़ (एजेंसी)। एमपी में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए सपा के प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि बीजेपी व कांग्रेस दोनों ही दल जातिगत जनगणना के पक्षधर हो गए हैं। समाजवादी पार्टी के प्रमुख ने दावा किया कि कांग्रेस ने अतीत में जातिगत जनगणना और मंडल आयोग की सिफारिशों का कार्यान्वयन रोक दिया था। उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भी आज इसी तरह का रुख अपना रही है। मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के जतारा विधानसभा क्षेत्र में एक चुनावी सभा के दौरान अखिलेश ने कहा कि कांग्रेस और भाजपा चुनावों में पीडीए यानी पिछड़ा वर्ग, दलितों और आदिवासियों को लुभाने के लिए जातिगत जनगणना और आरक्षण की बात कर रहे हैं, क्योंकि दोनों दलों को इन तबकों की ताकत का अहसास हो चुका है। उन्होंने कहा, कि देश में जातिगत जनगणना और मंडल आयोग की सिफारिशों को किसी पार्टी ने रोका, तो वह कांग्रेस है। अब उसी रास्ते पर भाजपा भी चल रही है।

अखिलेश ने कहा कि जातिगत जनगणना का जो सवाल उठा है, उसका चमत्कार ही है कि अब कांग्रेस कह रही है कि जातिगत जनगणना होनी चाहिए। वहीं,

भाजपा जो पिछड़ों के आरक्षण के खिलाफ रही है, वह भी आज जातिगत जनगणना की बात कर रही है। चुनाव आ गया है, इसलिए पीडीए की ताकत को दोनों दल समझ गए हैं। सपा प्रमुख ने मप्र विधानसभा चुनावों के लिए जारी पार्टी के घोषणापत्र के हवाले से कहा कि उनकी पार्टी जातिगत जनगणना, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण और महिलाओं के लिए मध्य प्रदेश सरकार की 'लाड़ली बहना योजना से बेहतर 'समाजवादी पेंशन योजना का संकल्प व्यक्त करती है। उन्होंने कहा कि 'समाजवादी पेंशन योजना के तहत हितग्राहियों को हर माह 3,000 रुपये की सहायता राशि प्रदान की जाएगी।

केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार की आलोचना करते हुए अखिलेश ने दावा किया कि 'अग्निवीर योजना के तहत सशस्त्र बलों में भर्ती होने वाले युवाओं को कर्तव्य के दौरान सर्वोच्च बलिदान पर शहीद का दर्जा और वित्तीय सहायता नहीं मिलेगी। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने सवाल किया कि क्या वह सरकार जो सैनिकों के लिए ऐसे आधे-अधूरे प्रावधान करती है, उसे 'राष्ट्रवादी कहा जा सकता है? उन्होंने आरोप लगाया कि मध्य प्रदेश में महिलाओं पर देशभर में सबसे ज्यादा अत्याचार होते हैं, वहीं दलितों और आदिवासियों के उत्पीड़न की स्थिति भी गंभीर है। सपा प्रमुख ने यह भी कहा कि लोगों को उस कथित प्रलोभन के बारे में पता ही नहीं है, जो मार्च 2020 में कमलनाथ की अगुवाई वाली कांग्रेस सरकार के पतन और शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा सरकार की वापसी का कारण बना।

एल्विश यादव ने मेनका गांधी पर मानहानि का केस करने की दी धमकी

नोएडा । यू-ट्यूबर और बिग बॉस ओटीटी के विजेता एल्विश यादव ने मानहानि का केस करने की धमकी दी है। मिली जानकारी के अनुसार उन्होने यह धमकी भाजपा सांसद मेनका गांधी के खिलाफ दी है। बता दें कि एल्विश यादव पर सांपों की तस्करी का आरोप है। इस मामले में एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। वहीं मामले में एल्विश यादव के शामिल होने की खबर वायरल होने के बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री व भाजपा सांसद मेनका गांधी ने एक बयान जारी कर रेव पार्टी भंडाफोड़ मामले में एल्विश यादव की गिरफ्तारी की मांग की। वीडियो में मेनका गांधी ने खुलासा किया कि उनके एनजीओ के लोग एल्विश यादव पर कुछ समय से नजर रख रहे थे। क्योंकि वह अपने वीडियो में जहरीले सांपों का इस्तेमाल करता था। उन्होंने ये भी कहा कि कुछ लोग टीआरपी के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। मेनका के इस बयान के सामने आने के बाद एल्विश ने एक ट्वीट कर बताया कि मेनका गांधी को माफी मांगने के लिए कहा।

एल्विश ने कहा कि उन पर आरोप लगाने के लिए माफी मांगनी चाहिए क्योंकि वह इसमें शामिल नहीं हैं। वहीं अब हाल ही में एल्विश यादव ने अपना एक नया व्लॉग शेयर किया है जिसमें उन्होंने मेनका गांधी पर बात की है साथ ही ये भी बताया है कि उन्हें इन सब में फंसाया जा रहा है। वीडियो में एल्विश ने कहा ?कि मुझ पर इल्जाम लगाया जा रहा है, मेनका गांधी जी ने मुझे सप्लायर का मुखिया बना दिया। एक मानहानि का केस आएगा भाई, ऐसा नहीं छोड़ने वाला मैं। हल्के में तो छोड़ता ही नहीं मैं। अब मैं हो गया हूं इन चीजों में एक्टिव। पहले मैं सोचता था कि टाइम बर्बाद नहीं करता। लेकिन जब इमेज खराब होती है।'

एल्विश यादव का मामला: नोएडा के कई पुलिसवालों पर लटकी तलवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सांपों का जहर और विदेशी लड़कियां सप्लाई करने के आरोपों से घिरे बिग बॉस ओटीटी-2 के विजेता एल्विश यादव के खिलाफ मामला दर्ज होने और मामले के तूल पकड़ने के बाद नोएडा सेक्टर-49 थाना प्रभारी संदीप चौधरी को रविवार शाम को लाइन हाजिर कर दिया गया। अन्य पुलिसकर्मियों पर भी जल्द गाज गिरने की आशंका है। एल्विश पर रेव पार्टी आयोजित करने, उसमें सांपों का जहर सप्लाई करने और विदेशी लड़कियां उपलब्ध कराने के आरोप में केस दर्ज हुआ था।

पूरे मामले में पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे है। दरअसल एक दिन पूर्व एल्विश यादव को राजस्थान में पुलिस ने पकड़ने के बाद नोएडा पुलिस से संपर्क किया, लेकिन नोएडा पुलिस ने तब उसके मामले में जांच होने की बात कहते हुए उसे वॉन्टेड मानने से इनकार कर दिया। नोएडा पुलिस की इस रवैए के बाद एल्विश को राजस्थान पुलिस ने छोड़ दिया था और यह मामला भी खासा सुर्खियों में रहा। इसके बाद से ही इस प्रकरण में पुलिस अधिकारियों पर कार्रवाई की संभावना जताई जा रही थी। वहीं दूसरी तरफ एल्विश यादव ने एक्स पर अपनी पोस्ट में लिखा, नाम के साथ बदनामी भी आती है, जलने वाले भी बढ़ते हैं। मैं हैरान नहीं होऊंगा कि आने वाले टाइम में मुझ पर और भी इल्जाम लगेंगे। मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है। श्री राम पर भरोसा है। ये टाइम भी जल्दी बीतेगा।

मामला हाईप्रोफाइल हो जाने के बाद पुलिस संभल-संभल कर कदम आगे बढ़ा रही है। पीपुल फॉर एनिमल (पीएफए) सदस्य के दावे भर से एल्विश के खिलाफ केस तो दर्ज कर लिया गया पर अभी तक की जांच में यूट्यूबर का मामले से सीधा संबंध निकल कर सामने नहीं आया है। नोएडा पुलिस का कहना है कि उसने अभी तक न तो एल्विश को क्लीनचिट दी है और न ही उसे आरोपी माना है।अपर पुलिस आयुक्त कानून और व्यवस्था आनन्द कुलकर्णी का कहना है कि लाइन हाजिर की कार्रवाई क्षेत्र में अपराध पर अंकुश न लगा पाने और विवेचना में लापरवाही बरतने के मामले में हुई है। चर्चित यूट्यूबर एल्विश और जेल भेजे गए आरोपी राहुल के बीच का कनेक्शन जोड़ने में नोएडा पुलिस को भारी मशक्कत करनी पड़ रही है।

सूरजपुर कोर्ट के वरिष्ठ वकील देवेंद्र राहुल ने कहा कि वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के तहत किए गए अपराध में तीन से सात साल तक की सजा है। इसमें गिरफ्तारी नहीं हो सकती। अगर पुलिस द्वारा कोई गिरफ्तारी की जाती है तो उसे कोर्ट को कारण बताना होगा। एल्विश के मामले में अभी तक पुलिस के पास ऐसा कोई कारण नहीं मिला है, जिसमें पुलिस उसकी गिरफ्तारी कर सके। इस मामले में एल्विश की गिरफ्तारी होगी या सिर्फ नोटिस की कार्रवाई कर मामले को क्लोज कर दिया जाएगा। इसको लेकर संशय की स्थिति बनी हुई है। पुलिस का कहना है कि अगर आवश्यकता हुई तो एल्विश से संपर्क कर उसे पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा।

घातक एक्यूआई पर नियंत्रण के लिए प्रतिबंधित कार्रवाई शुरु

-पराली जलाने से बढ़े प्रदूषण को लेकर परस्पर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में सोमवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक 485 रहा, जबकि एनसीआर के गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरुग्राम और नोएडा शहरों में यह 400 के आसपास बना हुआ है। राजधानी दिल्ली में प्रदूषण से निपटने के लिए ग्रैप 4 की पाबंदियों के तहत दूसरे राज्यों से आने वाले डीजल ट्रकों के प्रवेश को प्रतिबंधित कर दिया गया है। इसके अलावा बीएस-4 और बीएस-3 की डीजल कारों पर भी पाबंदी लगाई गई है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने रविवार को कहा कि दिल्ली के बढ़ते प्रदूषणस्तर के लिए पंजाब की पराली से ज्यादा हरियाणा और पश्चिम उत्तरप्रदेश में जलने वाली पराली जिम्मेदार हैं। उधर इस बयान पर भाजपा के नेता प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आम आदमी पार्टी सरकार पर दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण में विफलता का आरोप लगाया । प्राप्त आंकड़ो के अनुसार रविवार को पंजाब में पराली जलाने की 3,230 घटनाएं हुई हैं। इसके अलावा पूरे सीजन में यह आंकड़ा 17,403 तक पहुंच गया है। जबकि हरियाणा में रविवार को पराली जलाने की 109 घटनाएं सामने आई हैं, जबकि पूरे सीजन में यहां पराली जलाने की घटनाएं 1500 से ज्यादा रही हैं।

उधर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का कहना है कि वह पराली जलाने वाले किसानों के चालान काट रही है। हरियाणा के 18 शहरों में प्रदूषण खतरनाक स्तर पर है, लेकिन राज्य सरकार का कहना है कि इसके लिए पंजाब जिम्मेदार है। जहां पराली जलाने की घटनाएं अधिक हो रही हैं। पंजाब रिमोट सेंसिंग सेंटर डेटा के मुताबिक राज्य में इस सीजन में पराली जलाने की 17 हजार से ज्यादा घटनाएं हुई हैं। बीते साल की तुलना में यह आंकड़ा भले कम है, लेकिन हरियाणा के मुकाबले काफी ज्यादा है। हरियाणा के 1500 केसों के मुताबिक यह 10 गुना से भी ज्यादा अधिक हुआ। आंकड़े बताते है कि पंजाब में पराली जलाने की कुल घटनाओं में से 56 फीसदी अकेले नवंबर के ही पहले 5 दिनों में हो चुकी हैं।

सम्मान छोड़ हम केजरीवाल के साथ खड़े हैं : संदीप दीक्षित

-चुनाव प्रचार में इंडिया सहयोगी आप नेता के आरोप से आहत कांग्रेस नेता का छलका दर्द?

नई दिल्ली (एजेंसी)। विपक्षी गठबंधन में 28 दलों के शामिल होने के बावजूद कांग्रेस के विरुद्ध दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल की बयानबाजी जारी हैं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में चुनाव प्रचार के दौरान केजरीवाल भारतीय जनता पार्टी सहित कांग्रेस को भी भला-बुरा कह रहे हैं। इसे लेकर इंडिया गठबंधन में शामिल करने का विरोध कर चुके दिल्ली कांग्रेस के बड़े नेता संदीप दीक्षित ने फिर से आम आदमी पार्टी की वफादारी पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि कांग्रेस पार्टी अपना सम्मान छोड़कर आम आदमी पार्टी के साथ खड़ी है।

दरअसल, अरविंद केजरीवाल ने रविवार को छत्तीसगढ़ में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के साथ रोड शो करते हुए कहा कि दिल्ली में भी पहले दो पार्टियां थीं। दोनों पार्टियों ने गदर मचा रखा था। दोनों पार्टियों में सेटिंग थी 5 साल तुम लूटो 5 साल हम लूटेंगे। जनता दुखी थी, लेकिन विकल्प नहीं था। एक बार इससे नाराज होते थे तो एक बार दूसरे को वोट देते थे। फिर ऊपर वाले के चमत्कार से आम आदमी पार्टी आई। उनकी कार्यशैली से दिल्ली वासियों ने एक बार फिर इन दोनों पार्टियों को दरकिनार कर आम आदमी पार्टी को जनादेश दिया।

केजरीवाल के भाषण को शेयर करते हुए संदीप दीक्षित ने अपनी पार्टी को आत्मसम्मान की याद दिलाई। उन्होंने एक्स पर लिखा, मेरी कांग्रेस को अब तो कुछ अहसास होगा इस दोगले की वफादारी का। आत्म सम्मान से बड़ी कोई चीज नहीं, और अपने सम्मान को छोड़ हम केजरीवाल के साथ खड़े हैं। संदीप दीक्षित इससे पहले भी कई बार अपनी पार्टी को सलाह दे चुके हैं कि केजरीवाल और उनकी पार्टी से गठबंधन न किया जाए। उन्होंने सोनिया गांधी और राजीव गांधी को लेकर केजरीवाल की टिप्पणियों का जिक्र करते हुए उनका विरोध किया था।

अजीत पवार को मुख्यमंत्री के रुप में देखना चाहती है उनकी मॉ

-ग्राम पंचायतो में संपन्न मतदान की मतगणना जारी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में रविवार को संपन्न 2,369 ग्राम पंचायतों के मतदान की गणना 6 नवंबर को हो रही है। इस चुनाव में पवार परिवार का गढ़ बारामती की काटेवाड़ी ग्राम पंचायत भी शामिल है।महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार द्वारा अपने चाचा शरद पवार के खिलाफ बगावत और भाजपा-शिवसेना सरकार से हाथ मिलाने के बाद राज्य में यह पहला चुनाव है, इसलिए इसे अजित पवार की प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जा रहा है। इस दौरान मतदान करने पहुंची अजीत पवार की मां आशा पवार ने अपने पुत्र को राज्य का मुख्यमंत्री बनाये जाने की इच्छा व्यक्त की। उनके इस बयान से राजनीतिक गलियारे में एक बार फिर अजित पवार के मुख्यमंत्री पद की चर्चा शुरू होने की संभावना है। अजित पवार

के सीएम बनने की संभावनाओं को लेकर मीडिया द्वारा पूछे गए एक सवाल पर 84 वर्षीय आशा देवी ने कहा कि बारामती में हर कोई उनसे प्यार करता है साथ ही, एक मां होने के नाते, मुझे लगता है कि पुत्र अजीत पवार को मुख्यमंत्री बनना चाहिए। मैं अभी 84 साल की हूं और दूसरों की तरह, मैं भी अपने रहते हुए अजित पवार को मुख्यमंत्री बनते देखना चाहूंगी।

गौरतलब है कि राज्य में रविवार को 2,068 ग्राम पंचायतों से ग्राम पंचायत सदस्यों के 2,950 पदों और सीधे निर्वाचित 130 सरपंच के पदों के लिए वोट डाले गए। इन पदों पर रिक्तियां अयोग्यता, मृत्यु, इस्तीफे आदि के कारण हुई थी। पंचायतों के चुनाव में पवार परिवार का गढ़ बारामती की काटेवाड़ी ग्राम पंचायत भी शामिल है। महाराष्ट्र में ग्राम पंचायत चुनाव विशिष्ट चुनाव प्रतीकों के तहत नहीं लड़े जाते हैं। लेकिन फिर भी, वे बहुत अहमयित रखते हैं, खासकर पार्टियों और स्थानीय नेतृत्व के बीच तीव्र राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता देखी जाती है जहां स्थानीय स्तर पर गठबंधन बनते और टूटते हैं। एनसीपी में 2 जुलाई को उस समय टूट हो गई थी जब अजित पवार और आठ विधायक एकनाथ शिंदे सरकार में शामिल हो गए। इसके बाद पार्टी के संस्थापक शरद पवार के नेतृत्व वाले समूह ने उन्हें अयोग्य ठहराने की मांग करते हुए याचिकाएं दायर की हैं जिन पर अभी फैसला नहीं आया है।

8 तीव्रता वाले भूकंप की भविष्यवाणी को लेकर सतर्कता

नई दिल्ली (ईएमएस)। नेपाल में तीस घण्टे में तीन भूकम्प के मद्देनजर ??विशेषज्ञों ने लोगों से सतर्कता बरतने की चेतावनी दी है क्योंकि नेपाल में केंद्रीय बेल्ट को सक्रिय रूप से ऊर्जा जारी करने वाले क्षेत्र के रूप में पहचाना गया है। वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी में काम कर चुके भूकंपविज्ञानी अजय पॉल ने कहा कि शुक्रवार को आए भूकंप का केंद्र नेपाल के डोटी जिले के करीब के क्षेत्र में था। उन्होंनेद्व कहा कि तीन अक्टूबर को नेपाल में श्रृंखलाबद्ध भूकंप भी इसी क्षेत्र के आसपास थी।

वैज्ञानिकों के अनुसार, भारतीय टेक्टोनिक प्लेट उत्तर की ओर बढ़ने से यूरेशियन प्लेट के साथ संघर्ष पैदा हो रहा इससे हिमालय के नीचे दबाव बन रहा है। लगभग 40-50 मिलियन वर्ष पहले जब भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट से टकराने के लिए हिंद महासागर से उत्तर की ओर बढ़ी तो हिमालय का निर्माण हुआ। यह दबाव संभवत: एक या कई बड़े भूकंपों के माध्यम से जारी होगा, जिनकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर आठ से अधिक होगी। हालाँकि,इसे लेकर सटीक भविष्यवाणी करने का कोई प्रणाली नहीं है।

महादेव एप के बहाने असम के सीएम विस्वा ने सीएम भूपेश पर साधा निशाना

रायपुर (एजेंसी)। राजनीति में जब आरोप लगते हैं तो चौतरफा घेराबंदी भी शुरु हो जाती है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर महादेव एप को लेकर आरोप लगे हैं। उन पर चौरफा हमले भी शुरु हो गए है। असम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्वा सरमा ने महादेव एप के जरिए सीएम बघेल पर जमकर निशाना साधा है,उन्होंने यहां तक कहा कि मां कामाख्या देवी उन्हे कभी माफ नहीं करेगी। मंगलवार को छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के पहले चरण की वोटिंग होनी है। इसके लिए सारी तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है। चुनाव प्रचार थमसे से एक दिन पहले यानी रविवार को भारतीय जनता पार्टी कई दिग्गज नेता छत्तीसगढ़ में मौजूद रहे। इस दौरान असम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्वा सरमा ने एक जनसभा को संबोधित किया। जिसमें उन्होंने महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप को लेकर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर हमला बोला है।

सीएम सरमा ने अपने संबोधन में कहा कि मां कामाख्या आज रो रही हैं कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने महादेव के नाम पर घोटाला किया।सीएम सरमा ने कहा, कांग्रेस ने महादेव के नाम पर भ्रष्टाचार करके मां कामाख्या को बहुत क्रोधित किया है। मां ऐसे लोगों को माफ नहीं करेगी। कोई पैसे लूटने के लिए महादेव के नाम का इस्तेमाल कैसे कर सकता है। उन्होंने कहा कि कोई सोच भी कैसे सकता है कि महादेव के नाम पर कोई पैसे लूटेगा। मां कामाख्या देवी, मां पार्वती का स्वरूप हैं। मैं पार्वती महादेव की पत्नी हैं। इस खबर के सामने आने के बाद से मां कामाख्या दुखी हैं।उन्होंने छत्तीसगढ़ के सीएम पर हमला बोलते हुए आगे कहा कि महादेव के नाम पर बघेल ने पैसा लूटने का काम किया है। कोई ये सोच भी नहीं सकता कि महादेव के नाम पर ऐप बनाकर कोई भ्रष्टाचार करेगा।

इसके बाद भूपेश बघेल ने भाजपा पर पलटवार करते हुए सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा, आख़िरकार केंद्र सरकार को होश आया और उसने 'महादेव ऐप' पर बैन लगाने का फ़ैसला किया। मैं कई महीनों से सवाल पूछ रहा हूं कि सट्टा खिलाने वाले इस ऐप पर केंद्र सरकार बंद क्यों नहीं रही है। मैंने तो यहां तक कहा था कि शायद 28 प्रतिशत जीएसटी के लालच में प्रतिबंध नहीं लग रहा है या फिर भाजपा का ऐप संचालकों से लेन-देन हो गया है। उन्होंने आगे कहा, आश्चर्य है कि ईडी महीनों से इस मामले की जांच कर रही है और फिर भी ऐप का संचालन लगातार होता रहा। अब केंद्र सरकार को होश आ ही गया है तो अच्छा है कि इस ऐप के संचालकों को भी दुबई से यथाशीघ्र गिरफ़्तार कर भारत लाया जाए. छत्तीसगढ़ पुलिस ने ही सबसे पहले उनके ख़िलाफ़ लुक-आउट नोटिस जारी किया था।

पाक में नेगलेरिया फाउलेरी संक्रमण से 11 लोगों की मौत

करांची। पाकिस्तान के कई प्रांत दिमाग खाने वाले एक अमीबा की चपेट में हैं। इस अमीबा को नेगलेरिया फाउलेरी के नाम से जाना जाता है। सिंध स्वास्थ्य विभाग के हवाले से रविवार को बताया कि दिमाग खाने वाले अमीबा नेगलेरिया फाउलेरी ने कराची में एक और मरीज की जान ले ली है। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक, महानगर के बफरजोन कराची निवासी एक व्यक्ति की मौत नेगलेरिया के कारण हुई। सिंध स्वास्थ्य विभाग के प्रवक्ता ने कहा, वह पिछले तीन दिनों से बुखार और सिरदर्द से पीड़ित था। प्राप्त जानकारी के अनुसार, 23 अक्टूबर को मस्तिष्क खाने वाले अमीबा ने कराची में एक शख्स की मौत हो गई थी। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, बंदरगाह शहर के न्यू कराची निवासी 45 वर्षीय अदनान की मौत नेगलेरिया के कारण हुई। सिंध स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक, पूरे प्रांत में नेगलेरिया फाउलेरी संक्रमण (एनएफआई) के कारण अब तक 11 लोगों की जान जा चुकी है। सिंध के कार्यवाहक स्वास्थ्य मंत्री डॉ. साद खालिद ने कराची के लोगों से नेगलेरिया फाउलेरी का शिकार बनने से बचने के लिए निवारक उपाय करने को कहा है। यह एक दुर्लभ लेकिन जलजनित घातक अमीबा है जो ताजे पानी के स्रोतों में पनपता है। खालिद नियाज़ ने जनता से उन पूलों में तैरने से परहेज करने का आग्रह किया, जिनका ठीक से क्लोरीनीकरण नहीं किया गया है। उन्होंने जनता को उन सभी गतिविधियों से बचने को कहा है जिनसे नाक में पानी प्रवेश कर सकता है।

अगले चार साल तक विश्व बैंक करेगा अंतरराष्ट्रीय निधि की निगरानी

-जलवायु परिवर्तन से प्रभावित गरीब देशों के वित्त पोषण पर हुई बैठक

अबू धाबी । अगले चार साल तक विश्व बैंक अंतरराष्ट्रीय निधि की निगरानी करेगा। यह निर्णय जलवायु परिवर्तन से प्रभावित गरीब देशों के वित्त पोषण पर हुई बैठक में लिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार अबू धाबी में खत्म हुई और बैठक में भाग लेने वाले लोगों ने इस बात पर सहमति जतायी है। हालां ?कि इस दौरान वैश्विक तापमान में वृद्धि से सबसे अधिक प्रभावित गरीब देशों की मदद करने के लिए स्थापित अंतरराष्ट्रीय निधि पर अंतिम बैठक में तनावपूर्ण बातचीत हुई। बैठक में अमेरिका और कई विकासशील देशों ने समझौते के मसौदे पर निराशा जतायी है जिसे इस महीने दुबई में होने वाली सीओपी-28 जलवायु शिखर वार्ता में हस्ताक्षर के लिए वैश्विक नेताओं के पास भेजा जाएगा। जानकारी के अनुसार अबू धाबी में बातचीत में शामिल हुए अमेरिका के विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि उन्हें भले ही समझौता होने की खुशी है, लेकिन इस बात का खेद है कि कोष में दान स्वैच्छिक रूप से देने के लिए वार्ताकारों के बीच बनी सहमति अंतिम समझौते में दिखायी नहीं दी। बैठके के दौरान समझौते में निधि के इस्तेमाल के लिए बुनियादी लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है जिसमें 2024 में इसकी शुरुआत और इसे कैसे लागू किया जाएगा और कौन इसकी निगरानी करेगा जैसी बातें शामिल हैं। बैठक में बारबाडोस की प्रधानमंत्री मिया मोटली के जलवायु वित्त पोषण पर विशेष दूत अविनाश परसौद ने कहा कि यह समझौता चुनौतीपूर्ण लेकिन महत्वपूर्ण परिणाम था। परसौद ने बैठकों में लातिन अमेरिका और कैरिबियाई देशों की तरफ से बातचीत की। उन्होंने कहा कि ऐसे किसी भी समझौते पर पहुंचने में विफलता का सीओपी पर लंबा प्रभाव पड़ेगा। मिस्र के प्रमुख वार्ताकार मोहम्मद नासिर ने कहा ?कि यह कुछ उम्मीदों पर खरा उतरने में नाकाम है।

ऑस्ट्रेलियाई कोर्ट ने पूर्व भारतीय राजदूत को दिया मुआवजा देने का आदेश

कैनबरा ।ऑस्ट्रेलिया की एक अदालत ने एक पूर्व भारतीय राजदूत को मुआवजा देने का आदेश दिया है। मिली जानकारी के मुताबिक कैनबरा में भारत के पूर्व उच्चायुक्त नवदीप सिंह सूरी को अपने पूर्व घरेलू कर्मचारी को हजारों डॉलर मुआवजे के तौर पर देने का आदेश दिया है। गौरतलब है कि महिला कर्मचारी ने सूरी पर अनुचित कामकाजी परिस्थितियों में काम कराने का आरोप लगाया था। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। मामले की जानकारी रखने वाले अधिकारियों ने नयी दिल्ली में कहा कि यह ऑस्ट्रेलियाई अदालत में एक पक्षीय कार्यवाही है। रिपोर्ट में कहा कि संघीय अदालत की न्यायाधीश एलिजाबेथ रैपर ने सूरी को 60 दिन के भीतर सीमा शेरगिल को 1,36,000 डॉलर और ब्याज का भुगतान करने का आदेश दिया। बता दें ?कि शेरगिल ने अप्रैल 2015 में ऑस्ट्रेलिया की यात्रा की थी और कैनबरा स्थित सूरी के घर पर एक वर्ष तक काम किया था। मामले की जानकारी रखने वाले अधिकारियों ने बताया कि शेरगिल को आधिकारिक पासपोर्ट जारी किया गया था और 2016 में उसे भारत लौटने के लिए कहा गया था, लेकिन उसने सरकारी आदेश नहीं माने। अधिकारी के अनुसार शेरगिल ने 2021 में ऑस्ट्रेलिया की नागरिकता ले ली और इस बात को मानने के कारण हैं कि उसने उस देश में रहने के इरादे से मामला दायर किया है। उन्होंने कहा कि यदि कर्मचारी को किसी प्रकार की कोई शिकायत थी, तो उसे भारत लौटना चाहिए था और सक्षम अधिकारियों या किसी अदालत से संपर्क करना चाहिए था। हालांकि विदेश मंत्रालय ने ऑस्ट्रेलिया की अदालत के फैसले पर अभी किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। मीडिया रिपोर्ट के हवाले से जबकि संघीय अदालत को बताया गया कि शेरगिल ने सप्ताह में सात दिन प्रतिदिन 17.5 घंटे काम किया था।

अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के निदेशक पहुंचे इजरायल दौरे पर

तेल अवीव । हमास के साथ जारी जंग के बीच अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के निदेशक विलियम जे बर्न्स नेताओं और खुफिया अधिकारियों के साथ चर्चा करने के लिए इजरायल पहुंचे। सीआईए चीफ विलियम बर्न्स का इस क्षेत्र में एक बहु-देशीय यात्रा का पहला पड़ाव है। अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से मिली जानकारी के अनुसार सीआईए प्रमुख विलियम बर्न्स की यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब अमेरिका इजरायल को हमास पर हमला करने के लिए अधिक लक्षित दृष्टिकोण अपनाने, गाजा में मदद के लिए प्रवेश के लिए लड़ाई रोकने और नागरिकों को हताहत होने से बचाने के लिए और अधिक प्रयास करने की कोशिश कर रहा है। वॉशिंगटन तेल अवीव के साथ अपनी खुफिया जानकारी साझा करने का भी विस्तार करना चाहता है, जो बंधकों के स्थानों या हमास द्वारा किसी भी काउंटर अटैक के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है। एक अमेरिकी अधिकारी ने विलियम बर्न्स की यात्रा के बारे में कहा कि उन्होंने क्षेत्र में भागीदारों के साथ खुफिया सहयोग के लिए अमेरिकी प्रतिबद्धता को मजबूत करने की योजना बनाई है। उन्होंने यह भी कहा कि विलियम बर्न्स गाजा की स्थिति के बारे में चर्चा के लिए कई मध्य पूर्वी देशों की यात्रा करेंगे। इसी बीच अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन रविवार की देर रात अचानक इराक पहुंच गए और इराकी प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल सुदानी से मुलाकात की। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक दोनों नेताओं के बीच इजरायल-हमास के टकराव पर चर्चा हुई। ब्लिंकन की यात्रा पहले से कोई प्लान नहीं था, और वह अचानक इराक पहुंचे। इससे पहले वह साइप्रस में भी रुके और गाजा में समुद्री मार्ग से मदद भेजने पर भी अधिकारियों से चर्चा की।

अमेरिकी ड्रोन इजरायली बंधकों को ढूंढने कर रहा मदद

गाजा। इजरायली बंधकों की तलाश करने में मदद के लिए अमेरिका के एमक्यू-9 रीपर ड्रोन की पहले खेप गाजा पहुंच चुकी है। इन यूएवी बहुल एमक्यू-9 रीपर ड्रोन को अब गाजा के हवाई क्षेत्र के ऊपर भेजा जा चुका है जहां ये इजरायली सेना के साथ तालमेल बनाते हुए बंधकों की तलाश कर रहे हैं। पेंटागन के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल पैट रायडर का कहना है कि ड्रोन बंधकों की तलाश के प्रयासों में मदद कर रहे हैं जो करीब एक महीने से हमास के कब्जे में है। इजरायल हमास युद्ध की शुरुआत हुए एक महीना हो गया है। पिछले महीने की 7 तारीख को हमास के इजरायल के हमले के बाद शुरू हुआ इजरायल हमास युद्ध में इजरायल लगातार गाजा पर हमास के ठिकानों पर चुन चुन कर हमले कर रहा है। लेकिन एक महीने से 200 से भी अधिक इजरायली बंधक हमास के कब्जे में हैं जिन्हें गाजा में ही कहीं रखा गया है। माना जा रहा है कि हमास ने इन बंधकों को गाजा की सुरंगों में रखा है। लेकिन इनकी तलाश अब भी जारी है। एमक्यू-9 रीपर ड्रोन अमेरिकी कंपनी जनरल एटॉमिक्स का विकसिक किया गया अनमैन्ड एरियल व्हीकल, यानी यूएवी है। यह 50 हजार फुट की ऊंचाई पर जा सकता और 27 घंटों तक निगारानी करने का काम बिना रुके, लगातार कर सकता है। इसमें उन्नत तकनीकी वाले कैमरा, सेंसर्स, राडार सिस्टम, लगे होते हैं जिससे यह एक बहुत ही शक्तिशाली इंटेलिजेंट गैदरिंग टूल माना जाता है।

जकार्ता में लोग हाई स्पीड ट्रेन के मॉडल के साथ तस्वीरें खिंचाते हुए।

वैज्ञानिक की चेतावनी, एलियंस से संपर्क करना मुसीबत ला सकता

वाशिंगटन। इनदिनों इंसान जिस चीज के बारे में सबसे ज्यादा जानने समझने की कोशिश में है, वे एलियंस हैं। यानी संभवत- दूसरे ग्रह पर रहने वाले प्राणी। कोई इन्हें खतरनाक मानता है, तब कोई उन्हें इंसानों से कहीं ज्यादा इंटैलिजेंट और एडवांस मानता है। एलियंस से संपर्क को लेकर भी कई तरह के दावे किए जाते हैं। इस बीच यूएफ के कैलिफोर्निया में सीनियर प्लैनेटरी एस्ट्रोनॉमर, डॉ फ्रैंक मार्चिस ने एलियंस को लेकर एक चेतावनी जारी की है। उन्होंने कहा कि इंसानों को एलियंस से कॉन्टैक्ट की कोशिश छोड़ देनी चाहिए वरना हम सब बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे। 2021 में, फिजिसिस्ट मार्क बुकानन ने दावा किया था कि एलियंस से संपर्क करना खतरनाक होगा। इसके बाद इस सप्ताह, मार्क के इसी बयान पर बात करते हुए, डॉ.मार्चिस ने एलियंस की तुलना चींटियों से कर कहा अगर वे हमसे मिलने के लिए धरती तक आ सकते हैं, तब उनकी तकनीक शायद हमसे बहुत आगे होगी, जिसमें शायद लाइट की स्पीड से भी तेज ट्रैवल करने का तरीका शामिल है। उन्होंने कहा अगर वे हमें पसंद नहीं करते हैं या हमें बुद्धिमान नहीं मानते हैं, तब वे शायद हमें जल्दी ही मिटा सकते हैं। फिल्म एलियंस की तरह वे चींटियों जैसे हो सकते हैं, जिनकी प्रभारी कोई रानी होती है। इधर, नासा ने इससे कतई इनकार नहीं किया कि पृथ्वी के चारों ओर उड़ते हुए देखे गए कई यूएफओ/यूएपी किसी अन्य दुनिया के प्राणियों के थे। और अंतरिक्ष एजेंसी ने किसी उस व्यक्ति को भी नियुक्त किया है जिसका एकमात्र काम एलियन हंटिंग है। दुनियाभर में कई जगह आए दिन यूएफओ देखे जा रहे हैं। पिछले साल अमेरिका की एक सरकारी रिपोर्ट थी, जिसमें कहा गया था कि साल 2004 तक 140 मामले सामने आए थे, जिसमें एलियन स्पेसशिप देखे गए थे।

नागरिक धोखाधड़ी केस में ट्रंप देंगे गवाही, दांव पर पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप का व्यापारिक साम्राज्य

वाशिंगटन (एजेंसी)। डोनाल्ड ट्रम्प अपने नागरिक धोखाधड़ी मुकदमे में गवाही देने के लिए मैनहट्टन अदालत में उपस्थित होने वाले हैं। राष्ट्रपति और प्रमुख रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार खुद को आरोपों के खिलाफ बचाव कर रहे हैं कि उन्होंने नाटकीय रूप से अपनी निवल संपत्ति बढ़ा दी है। लेकिन यह उपस्थिति उस शुरुआत को भी चिह्नित कर सकती है जो 2024 के चुनाव की एक परिभाषित विशेषता होगी यदि ट्रम्प उनकी पार्टी के उम्मीदवार बन जाते हैं-एक प्रमुख उम्मीदवार, परीक्षण पर गवाह स्टैंड को एक अभियान मंच के रूप में उपयोग कर रहा है क्योंकि वह व्हाइट में वापसी पर नजर रखता है।

राष्ट्रपति के इतिहासकार डगलस ब्रिंकले ने कहा कि यह एक आश्चर्यजनक क्षण होने वाला है। यह काफी नाटकीय है अगर वह इन आरोपों का सामना करने वाले सिर्फ एक पूर्व राष्ट्रपति थे। लेकिन तथ्य यह है कि वह जीओपी चलाने के लिए सबसे पसंदीदा हैं, यह इसे एक चौंका देने वाला सोमवार बनाता है। 60 सेंटर स्ट्रीट का कोर्ट रूम पहले से ही ट्रम्प के लिए एक परिचित स्थल बन गया है। उन्होंने पिछले महीने स्वेच्छा से रक्षा मेज पर बैठकर कार्यवाही का अवलोकन करते हुए कई घंटे बिताए हैं। आंशिक प्रतिबंध आदेश का उल्लंघन करने का आरोप लगने के बाद ट्रम्प ने एक बार अप्रत्याशित रूप से और संक्षिप्त रूप से रुख अपनाया।

ट्रम्प ने नियमों का उल्लंघन करने से इनकार किया, लेकिन न्यायाधीश आर्थर एंगोरोन असहमत थे और फिर भी उन पर जुर्माना लगाया। उनका अधिकांश भाषण अदालत कक्ष के बाहर हुआ है, जहां उन्होंने अपने आक्रोश को व्यक्त करने और दिन की कार्यवाही को सबसे अनुकूल तरीके से पेश करने के लिए एकत्रित मीडिया के बैंक का पूरा फायदा उठाया है।

पीएम मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति से कॉल पर की बात, इजरायल-हमास संघर्ष को लेकर हुई चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजराइल और हमास के बीच बढ़ते तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी से बात की। जहां उन्होंने मध्य पूर्व की कठिन स्थिति पर गंभीर चिंता जताई। बातचीत के दौरान, भारतीय नेताओं ने कहा कि आतंकवादी घटनाएं, हिंसा और नागरिक जीवन की हानि गंभीर चिंताएं थीं और उन्होंने शांति और स्थिरता की शीघ्र बहाली पर जोर दिया। दोनों नेताओं ने पश्चिम एशिया क्षेत्र की कठिन स्थिति और इजराइल-हमास संघर्ष पर विचारों का आदान-प्रदान किया। प्रधानमंत्री

ने आतंकवादी घटनाओं, हिंसा और नागरिक जीवन की हानि पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने इजराइल-फिलिस्तीन मुद्दे पर भारत की दीर्घकालिक और सुसंगत स्थिति को दोहराया। राष्ट्रपति रायसी ने स्थिति का अपना आकलन साझा किया। दोनों नेताओं ने तनाव को रोकने, निरंतर मानवीय सहायता सुनिश्चित करने और शांति एवं स्थिरता की शीघ्र बहाली सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। नेताओं ने बहुआयामी द्विपक्षीय सहयोग में प्रगति की भी समीक्षा की और सकारात्मक मूल्यांकन किया। उन्होंने क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में सुधार के लिए ईरान में चाबहार बंदरगाह पर ध्यान केंद्रित करने और प्राथमिकता देने का स्वागत किया।

फलस्तीन के राष्ट्रपति अब्बास व इराकी प्रधानमंत्री अल-सुदानी से की ब्लिंकन ने बातचीत

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने फलस्तीन के राष्ट्रपति अब्बास व इराकी प्रधानमंत्री अल-सुदानी से बातचीत की है। उन्होंने रविवार को वेस्ट बैंक में फलस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास को आश्वस्त करते हुए कहा कि अमेरिकी प्रशासन गाजा के नागरिकों की स्थिति में सुधार लाने के प्रयास तेज कर रहा है और उन्होंने जोर दिया कि संघर्ष के बाद क्षेत्र में जो भी होगा, उसमें फलस्तीनियों की मुख्य भूमिका होनी चाहिए।बाद में ब्लिंकन इराक के प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी के साथ बातचीत करने के लिए बगदाद रवाना हुए। जबकि इराक और अन्य स्थानों पर ईरान समर्थित मिलिशिया के क्षेत्र में अमेरिकी बलों पर हमले बढ़ रहे हैं। बगदाद से ब्लिंकन तुर्किये के लिए रवाना हुए। बताया जा रहा है कि बिना किसी पूर्व घोषणा के ब्लिंकन ने कड़ी सुरक्षा के बीच बख्तरबंद वाहनों से रामल्ला की यात्रा की। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने गाजा के नागरिकों तक मानवीय सहायता पहुंचाने के लिए युद्धविराम के अमेरिकी प्रस्ताव पर विचार करने से इनकार कर दिया है।

ब्लिंकन ने रविवार को पत्रकारों से इस मामले पर कहा कि यह एक प्रक्रिया है। इजराइल ने कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठाए हैं कि मानवीय संघर्षविराम कैसे काम करेगा। हमें उन सवालों का जवाब देना होगा जिसमें यह भी शामिल है कि संघर्षविराम से हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों पर क्या असर पड़ेगा। हम उस पर काम कर रहे हैं। ब्लिंकन ने वेस्ट बैंक में अब्बास से ऐसे वक्त में मुलाकात की जब उसी दिन इजराइली विमानों ने गाजा में दो शरणार्थी शिविरों पर बमबारी की जिसमें कम से कम 53 लोगों की मौत हो गयी। गाजा में स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। रामल्ला में ब्लिंकन के आने की खबर फैलने के बाद बड़ी संख्या में फलस्तीनियों ने इजराइल युद्ध को अमेरिका द्वारा दिए जा रहे समर्थन के विरोध में प्रदर्शन किए।

जानकारी के अनुसार कैमरों के सामने एक-दूसरे का अभिवादन करते समय न तो ब्लिंकन और न ही अब्बास ने कुछ बोला और उनकी बैठक के बाद कोई सार्वजनिक बयान भी जारी नहीं किया गया। ब्लिंकन ने बगदाद में कहा कि फलस्तीनी प्राधिकरण 'वेस्ट बैंक में स्थिरता बनाए रखने की कोशिश में वहां बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह काफी अहम है क्योंकि कोई भी वेस्ट बैंक या कहीं अन्य कोई संघर्ष नहीं चाहता।' उन्होंने कहा कि हम सभी इस पर सहमत हुए कि गाजा, वेस्ट बैंक और आखिरकार फलस्तीन के भविष्य को आकार देने में फलस्तीनी आवाज को केंद्र में होना चाहिए।

आईडीएफ ने गाजा को दो हिस्सों में बांटा, संचार सेवाएं भी हुई ठप

गाजा (एजेंसी)। एक महीने से गाजा में इजराइली सेना बमबारी कर रही है। यहां लोगों का निकलना मुश्किल हो गया है। बुनियादी जरुरतें भी पूरी नहीं हो रही है। न भोजन है और न पानी। अब संचार सेवाएं भी ठप हो गई हैं। इजराइल ने हमास के खिलाफ जारी युद्ध के तहत गाजा सिटी की घेराबंदी कर तटीय पट्टी को दो भागों में विभाजित कर दिया है। इजराइल की सेना ने यह जानकारी दी। गाजा में रविवार को तीसरी बार संचार सेवा फिर से ठप हो गई। इजराइली सेना के रियर एडमिरल डेनियर हैगारी ने संवाददाताओं से कहा, 'अब उत्तर गाजा और दक्षिण गाजा को विभाजित किया गया है। उन्होंने इसे गाजा पर शासन कर रहे हमास के आतंकवादियों के खिलाफ इजराइल के युद्ध में 'अहम चरण बताया। इजराइली मीडिया के अनुसार, सैन्य बलों के आगामी 48 घंटे में गाजा पट्टी में घुसने की संभावना हैं। उत्तरी गाजा में रात भर जोरदार विस्फोट हुए। इंटरनेट तक पहुंच का समर्थन करने वाले समूह संचार सेवा ठप होने की जानकारी दी और फलस्तीनी दूरसंचार कंपनी पालटेल ने भी इसकी सूचना दी। संचार सेवा ठप हो जाने के कारण सैन्य अभियान के नए चरण की जानकारी लोगों तक पहुंचाना जटिल हो गया है। इससे पूर्व भी गाजा में पहले 36 घंटे और दूसरी बार कुछ घंटे संचार सेवा ठप रही थी। गाजा के स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इजराइल-हमास संघर्ष पर अपनी पश्चिम एशिया कूटनीति के तहत अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने रविवार को कब्जे वाले वेस्ट बैंक के रामल्ला का दौरा किया और फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात की।

हैम्बर्ग विमानतल से उड़ाने हुईं फिर बहाल

-एक व्यक्ति के हमले और आगजनी के बाद शनिवार रात से किया गया था बंद

हैम्बर्ग (एजेंसी)। जर्मनी का मुख्य विमानतल हैम्बर्ग सुरक्षित उड़ान के लिए फिर बहाल हो गया है। गौरतलब है कि एक विमान के पास कार पार्किंग, गोलीबारी और आगजनी की घटना से मची हड़कम्प के बाद शनिवार की रात हैम्बर्ग विमानतल को बंद कर दिया गया था।

इससे पहले उड़ाने रद्द होने से प्रतीक्षारत यात्रियों को सुरक्षित रूप से होटलों में शिफ्ट करना पड़ा। रद्द उड़ानों में डोमेस्टिक के साथ इंटरनेशनल उड़ानें भी शामिल थी। पर अब हैम्बर्ग एयरपोर्ट फिर से पूरी तरह खुल गया है। हालांकि कुछ उड़ानों को र?विवार को ही शुरू कर दिया गया था, पर अब उड़ाने पहले की ही तरह सामान्य तौर पर शुरू हो गईं।

गौरतलब है कि जर्मनी के हैम्बर्ग एयरपोर्ट में शनिवार रात लोकल समयानुसार करीब 10 बजे बंदूको के साथ एक 35 वर्षीय आदमी हैम्बर्ग एयरपोर्ट के टरमैक पर अपनी कार में सिक्योरिटी बैरियर्स को तोड़ते हुए घुस गया। कार में उसके साथ उसकी 4 साल की बच्ची भी थी। आदमी ने कार को एक प्लेन के बीचे पार्क किया और फिर कार से निकलकर पहले हवा में दो बार गोलीबारी की। उसके बाद उसने अपनी कार से जलती बोतलें निकालकर फेंकी जिससे वहाँ आग लग गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए टनल के ज़रिए वहाँ खड़े विमान से सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया और एयरपोर्ट पर मौजूद लोगों को एयरपोर्ट से होटलों में शिफ्ट कर दिया गया।

एयरपोर्ट पर हंगामा करने वाले आदमी ने किसी पर हमला करने की कोशिश नहीं की। रविवार की दोपहर करीब 18 घंटे बाद मामला शांत हुआ। एक मनोचिकित्सक ने लगातार उस आदमी से बात की और उसे शांत किया। इसके बाद वह एयरपोर्ट टरमैक छोड़कर चला गया, पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि उसने गिरफ्तारी का विरोध नहीं किया।

जानकारी के अनुसार आरोपी की पत्नी से विवाद हो गया था। साथ ही वह अपनी बेटी की कस्टडी भी चाहता था पर उसकी पत्नी इसके खिलाफ थी। इसी वजह से वह अपनी बेटी को लेकर एयरपोर्ट चला गया जहाँ से वह तुर्की जाने का प्लान बना रहा था। उसकी पत्नी ने भी उसकी शिकायत की थी कि वह बेटी को लेकर भाग गया है।

शरणार्थी शिविरों पर इजराइली हमले से बड़ी संख्या में हुई लोगों की मौत

-बेंजामिन नेतन्याहू ने ब्लिंकन की अपील ठुकराई, हमास के खिलाफ जारी रहेंगे हमले

गाजा (एजेंसी)। इजराइल के युद्धक विमानों ने शरणार्थी शिविरों पर बम बरसाए, इससे अनेक लोगों की मौत होने के समाचार मिले हैं। जानकारी के अनुसार मध्य गाजा पट्टी में रविवार को दो शरणार्थी शिविरों पर हमला किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए। गाजा के स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। वहीं इजराइल-हमास संघर्ष पर बेंजामिन नेतन्याहू ने ब्लिंकन की अपील ठुकरा दी है। अपनी पश्चिम एशिया कूटनीति के तहत अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने रविवार को कब्जे वाले वेस्ट बैंक के रामल्ला का दौरा किया और फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात की। इजराइल में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ बातचीत करने के बाद, ब्लिंकन ने जॉर्डन में अरब देशों के विदेश मंत्रियों से मुलाकात की। नेतन्याहू ने जोर देकर कहा कि जब तक हमास द्वारा बंधक बनाए गए सभी बंधकों को रिहा नहीं किया जाता, तब तक कोई अस्थायी संघर्ष-विराम नहीं हो सकता। जबकि अमेरिका ने आम नागरिकों को राहत देने के लिए इजराइल से कुछ वक्त के लिए हमले रोकने की अपील की थी, लेकिन इजराइल का कहना है कि वह गाजा में हमास शासकों को कुचलने के लिए अपने हमले जारी रखेगा।

हमले को लेकर इजराइल के रक्षा मंत्री याओव गैलेंट ने कहा कि गाजा पट्टी में रह रहा हर व्यक्ति अपनी जान को खतरे में डाल रहा है। गाजा में हमास संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि इजराइल-हमास युद्ध में मारे गए फलस्तीनियों की संख्या बढ़कर 9,700 हो गई है। इजराइल में 1,400 से अधिक लोगों की मौत हुई है। इनमें से अधिकतर लोगों की मौत सात अक्टूबर को हमास के शुरुआती हमलों में हुई। इन्हीं हमलों के बाद से यह युद्ध शुरू हुआ। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता अशरफ अल-किद्रा ने कहा कि रविवार तड़के मध्य गाजा के मघाजी शरणार्थी शिविर पर हुए हवाई हमले में कम से कम 40 लोग मारे गए और 34 लोग घायल हो गए। रिहाइशी इलाके में बनाया गया यह शिविर उस निकासी क्षेत्र में स्थित है, जहां इजराइल की सेना ने गाजा में फलस्तीनी नागरिकों से शरण लेने का आग्रह किया था

इधर फलस्तीनी 'रेड क्रिसेंट' बचाव सेवा ने कहा कि रविवार को एक अन्य हमले में गाजा शहर में अल-कुद्स अस्पताल के पास एक इमारत ध्वस्त हो गई। उसने एक वीडियो भी साझा किया,

जिसमें चिकित्साकर्मी एक घायल व्यक्ति को अस्पताल ले जाते नजर आ रहे हैं और एक महिला एवं बच्चे उसके पीछे दौड़ रहे हैं। गौरतलब है कि इजराइल-हमास युद्ध में हजारों फलस्तीनी नागरिकों की मौत की निंदा कर रहे अरब नेताओं ने शनिवार को तत्काल संघर्ष-विराम पर जोर दिया।

वरुण तेज और पूर्व मिस उत्तराखंड लावण्या ने इटली में रचाई शादी

वरुण तेज और मिस उत्तराखंड लावण्या त्रिपाठी ने 1 नवंबर को इटली में शादी कर ली। ये शादी इटली के टस्कनी में बोर्गो सैन फेलिस में हुई। इटली की ये लोकेशन अपने चार्म और व्यूज के लिए पॉपुलर है। शादी के लिए वरुण ने कढ़ाई वाली शेरवानी और मैचिंग शॉल पहनी। लावण्या ने मनीष मल्होत्रा का डिजाइन किया हुआ लहंगा पहना। इस शादी में दिग्गज एक्टर चिरंजीवी, अल्लू अर्जुन और राम चरण भी नजर आए। बता दें, वरुण तेज तमिल फिल्मों के नामी एक्टर हैं। साउथ के सुपरस्टार राम चरण, अल्लू अर्जुन उनके चचेरे भाई हैं। लावण्या त्रिपाठी उत्तर प्रदेश से हैं। उन्होंने 2006 में फेमिना मिस इंडिया उत्तराखंड खिताब जीता था। ये मुख्य रूप से तेलुगु सिनेमा में काम करती हैं। कपल को सुनील शेट्टी और भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने बधाइयां भी दीं।

मैं शाहरुख की बहुत बड़ी फैन हूं

आज यानी गुरुवार को रकुल प्रीत मुंबई के फार्मर्स कैफे से बाहर निकलते नजर आईं। ये कैफे मुंबई के खार वेस्ट में लोकेटेड है। इस कैफे की खासियत है कि यहां ऑर्गेनिक क्विज़ीन मिलती है। वीगन, कीटो और ग्लूटेन फ्री खाने के भी यहां काफी विकल्प मौजूद हैं। रकुल को कैजुअल लुक में स्पॉट किया गया। पैपराजी ने जब उनसे कहा कि आज शाहरुख सर का बर्थडे है तो एक्ट्रेस ने कहा, हैप्पी बर्थडे शाहरुख सर को, उनका बहुत ही अच्छा ईयर रहा है, मैं उनकी बहुत बड़ी फैन हूं।

लियो में विजय संग काम करने पर बोलीं तृषा

साउथ की दिग्गज अभिनेत्री तृषा अपनी हालिया रिलीज फिल्म लियो को लेकर खूब सुर्खियां बटोर रही है। लियो बॉक्स ऑफिस पर भी सफलता के झंडे गाड़ रही है। इस साल तृषा की दो फिल्मों ने दर्शकों के बीच धमाल मचाया है, जिनमें मणिरत्नम की पोन्नियिन सेलवन और विजय की लियो शामिल है। अब हाल ही में, अभिनेत्री तृषा ने लियो में विजय के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा किया है अभिनेता को सुपरस्टार भी बताया है।

तृषा ने अपने हालिया इंटरव्यू में विजय संग काम करने के अपने अनुभव का खुलासा करते हुए कहा, ईमानदारी से कहूं तो, जब आपने किसी एक व्यक्ति के साथ इतनी सारी फिल्में की हैं तो आप एक कंफर्ट लेवल पर आ जाते हैं। अब जब लोग पूछते रहे हैं कि वे हमें फिर से स्क्रीन पर एक साथ कब देखेंगे। तो यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई थी कि लोगों को हमारी केमिस्ट्री काफी पसंद आ रही है। इसलिए इस फिल्म में लोगों ने हमारी जोड़ी को काफी पसंद किया था।

अभिनेता के साथ काम करना घर वापस आने जैसा है

तृषा ने आगे कहा, मैं पहली बार विजय से तब मिली थी, जब मैं 19 या 20 साल की थी। इसलिए, जब आप किसी के साथ 20 वर्षों से अधिक दोस्ती का रिश्ता निभा रहे होते है और फिर उनके साथ काम करने का मौका मिलता है तो लगता है कि आप घर वापस आ गए हो। हमारे बीच की जो दोस्ती है, उसका लोकेश ने फिल्म लियो में भरपूर रूप से उठाया है।

सलमान की फिल्म फर्रे से होगा एमसी स्टैन का सिंगिंग डेब्यू

बिग बॉस 16 का खिताब जीतने के बाद एमसी स्टैन की लोकप्रियता में और अधिक इजाफा हो गया है। इसी क्रम में बिग बॉस 16 के विजेता एमसी स्टैन के प्रशंसकों के लिए एक बड़ी खुशखबरी सामने आई है। बिग बॉस 16 का खिताब जीतने के बाद एमसी स्टैन की लोकप्रियता में और अधिक इजाफा हो गया है। इसी क्रम में बिग बॉस 16 के विजेता एमसी स्टैन के प्रशंसकों के लिए एक बड़ी खुशखबरी सामने आई है। जिसे सुनने के बाद आप सभी खुशी से झूम उठेंगे। दरअसल, एमसी स्टैन सलमान खान की फिल्म फर्रे के जरिए बॉलीवुड में अपना सिंगिंग डेब्यू कर रहे हैं। बता दें कि, इस फिल्म को एक्टर और बिग बॉस होस्ट सलमान खान प्रोड्यूस कर रहे हैं। एमसी स्टैन ने अपने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए फैन्स के साथ यह जानकारी साझा की। बता दें कि फिल्म फर्रे से सलमान खान की भांजी अलीजेह अग्निहोत्री बॉलीवुड डेब्यू कर रही है। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ है। अलीजेह के अलावा फिल्म में साहिल मेहता, रोनित बोस रॉय, जूही बब्बर जैसे स्टार्स भी नजर आएंगे।

मैं मुनव्वर को कभी भी अटेंशन नहीं दूंगी

बिग बॉस 17 के घर में मन्नारा चोपड़ा और मुनव्वर फारुकी के झगड़े के बाद दोस्त दुश्मन बन गए हैं। अपकमिंग एपिसोड में, मन्नारा को मुनव्वर के साथ लड़ाई के बाद रोते हुए देखा जाएगा। प्रोमो में मन्नारा विक्की जैन के साथ बैठी है तभी मुनव्वर उनसे बात करने आते है।

मन्नारा मुनव्वर से कहती है, जस्ट शटअप

वह फिर चिल्लाती है – मैं इसको बहुत मना चुकी हूं और आज के बाद मैं इसको कभी अटेंशन नहीं दूंगी। मुनव्वर कोई रिएक्ट नहीं करता। बाद में, मन्नारा रोने लगती है और बिग बॉस से कन्फेशन रूम में बुलाने के लिए कहती है। उन्होंने कहा, बिग बॉस, मैं कन्फेशन रूम में आना चाहती हूं और शो से बाहर निकलना चाहती हूं। लड़ाई के पीछे का कारण अभी तक पता नहीं चला है, लेकिन अपकमिंग एपिसोड में साझा किया जाएगा। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या मुनव्वर एक बार फिर मन्नारा के साथ सुलह करने की कोशिश करता है या फिर वह अब उससे दूरी बनाए रखता है।

शाहरुख खान का जवान 2 के सीक्वल से इनकार

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने 2 नवंबर, 2023 को मुंबई में एक कार्यक्रम में अपने फैंस के साथ अपना 58वां जन्मदिन मनाया। अभिनेता ने इस वर्ष की शुरुआत में एक्शन थ्रिलर पठान और जवान से बड़े पर्दे पर वापसी की। उनकी आखिरी फिल्म जवान ने दुनिया भर में 1150 करोड़ की कमाई की और अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्म बन गई। वहीं, बीते दिन इसके निर्देशक एटली ने इसके सीक्वल के संकेत दिए। हालांकि, किंग खान ने फैंस की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। साथ ही अभिनेता ने खुलासा किया है कि जवान 2 बनाने की उनकी कोई योजना नहीं है।

जवान 2 से शाहरुख खान का इनकार

शाहरुख खान से जब जवान 2 के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, मेरे लिए जवान 2 बनाना बहुत आसान है। मैं अभी एटली को कॉल करूंगा और हम बना लेंगे। उसको क्या बोलते हैं? फ्रेंचाइजी फिल्म, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मैं नई तरह की फिल्में बनाना चाहता हूं और आप सभी के लिए नए किरदार निभाना चाहता हूं। डंकी जैसी फिल्म आपसे बहुत कुछ बोलेगी और आपका भरपूर मनोरंजन करेगी। वास्तव में, मुझे लगता है कि यह जवान और पठान से अधिक मनोरंजन करेगी।

डंकी पर खुलकर बोले शाहरुख खान

शाहरुख खान ने आगे डंकी के बारे में बात की और कहा, राजू सर क्लियर थे कि पहले हमारी फिल्म की दुनिया सबको दिखाई दे। मैं उसमें क्या कर रहा हूं, या तापसी क्या कर रही हैं, वो सब हम धीरे-धीरे दिखाएंगे। तो मैं इसमें क्या कर रहा हूं वो बाद में पता चलेगा मगर काफी अच्छा कर रहा हूं। किंग खान ने कहा कि डंकी इस वर्ष की उनकी पसंदीदा फिल्म है और उन्होंने राजकुमार हिरानी के बारे में कहा, उनकी फिल्मों में कोई एक हीरो नहीं होता, कहानी ही असली हीरो होती है – यह एक खूबसूरत समूह है जो आपको कहानी कहने की ताकत में विश्वास दिलाता है। मैं मुख्य लॉकेट नहीं हूं, मैं वह धागा हूं जो सभी मोतियों को एक साथ जोड़ता है।

मेरे फिल्मों में आने के पीछे मेरे छोटे भाई अजिताभ का हाथ

बिग बी इन दिनों रियलिटी शो कौन बनेगा करोड़पति सीजन 15 होस्ट कर रहे हैं। शो में उन्होंने दिल्ली के बिंदास भाटिया का स्वागत किया। तीनों प्रतियोगियों से बातचीत के दौरान अमिताभ ने कहा, मैं आपको बता दूं कि भाई-बहन या भाई का रिश्ता छोटे के लिए हमेशा एक सुरक्षात्मक माहौल बनाता है। हम उनका ख्याल रखते हैं। उन्होंने साझा किया, मेरा एक छोटा भाई भी है। हमारी उम्र में पांच-छह साल का अंतर है। मैं हमेशा उसकी सुरक्षा के बारे में सोचता था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह फिल्मों में मेरे प्रवेश का कारण है। प्रतियोगियों ने उत्तर दिया- सर, हम आपके भाई को विनम्रतापूर्वक सलाम करते हैं। शोले फेम एक्टर ने आगे कहा, मेरे भाई ने ही सबसे पहले मुझसे कहा था कि तुम्हें फिल्मों में काम करना चाहिए। मैं कोलकाता में काम कर रहा था। उन्होंने बेहतरीन पोज के साथ मेरी तस्वीरें क्लिक की और भेज दीं। हालांकि, मुझे अस्वीकार कर दिया गया। कन, उन्होंने ही वह विचार मेरे दिमाग में डाला, और मैंने यह करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी।

आर्यन खान के डेब्यू शो में अभिनय करेंगे बॉबी देओल

बॉलीवुड अभिनेता बॉबी देओल इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म एनिमल को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। फिल्म में वह खलनायक की भूमिका में नजर आएंगे। वहीं अब अभिनेता से जुड़ी नई खबर सामने आ रही है। वह बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान के डेब्यू शो में नजर आएंगे। इसका खुलासा उन्होंने खुद किया है। दरअसल, करण जौहर के चैट शो कॉफी विद करण सीजन आठ के दूसरे एपिसोड में अभिनेता बॉबी देओल ने पुष्टि की कि वह सुपरस्टार शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान के पहले निर्देशित शो में अभिनय करेंगे। बॉबी अपने भाई और अभिनेता सनी देओल के साथ शो पर पहुंचे। उनके साथ बातचीत के दौरान बॉबी ने खुलासा किया कि उनका एसआरके के प्रोडक्शन हाउस रेड चिलीज प्रोडक्शंस के साथ रिश्ता बन गया है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि रेड चिलीज के साथ मेरा रिश्ता है, पहले मैंने क्लास ऑफ 83 किया, अब आर्यन का शो और फिर मैंने लव हॉस्टल भी किया। मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे हमेशा अच्छी चीजें दी हैं। इससे पहले दिसंबर 2022 में आर्यन ने खुलासा किया था कि उन्होंने अपने पहले निर्देशन प्रोजेक्ट का लेखन पूरा कर लिया है, जिसका वह निर्देशन भी करेंगे। आर्यन के निर्देशन वाले पहले शो के बारे में और जानकारी आनी बाकी है। कथित तौर पर, शो का नाम स्टारडम रखा गया है।

करियर में जो कुछ हासिल हुआ उससे खुश नहीं शारिब हाशमी

इंडस्ट्री में वर्षों की मेहनत के बाद कालकारों को फिल्म नसीब होती है। अगर सफल हो जाए तो किस्मत पलटते देर नहीं लगती। मगर, कई बार ऐसा भी होता है जब फिल्म सफल तो होती है, लेकिन कलाकार के करियर में इससे खास बदलाव नहीं आता। ऐसे ही एक एक्टर हैं शारिब हाशमी। शारिब का मानना है कि उन्हें अच्छे प्रोजेक्ट्स में काम करने के बाद भी वह ओहदा नहीं मिल पाया है, जिसके वह हकदार हैं। एक मीडिया बातचीत में शारिब ने अपने संघर्ष को लेकर बात की। शारिब हाशमी का कहना है कि वह एक लंबा रास्ता तय करके इंडस्ट्री में यहां तक पहुंचे हैं। लेकिन, उन्होंने जहां तक पहुंचने की सोची थी, वहां तक का आधा रास्ता भी तय नहीं कर पाए हैं। शारिब का कहना है कि उनका पर्सनल गोल जो है, वह उनका अहंकार नहीं है, बल्कि वह खुद पर इतना यकीन रखते हैं। इसी विश्वास ने उन्हें करियर के खराब दौर में उन्हें आगे बढ़ने में मदद की। शारिब ने शाहरुख खान की फिल्म जब तक है जान में अहम रोल अदा किया। इसके बाद उन्होंने फिल्मिस्तान में रील रोल अदा किया, जिसे उन्हें बेस्ट हिंदी फीचर फिल्म के लिए नेशनल अवॉर्ड भी मिला। मगर, इसके बावजूद उनके करियर में खास उछाल नहीं आया। शारिब ने कहा कि उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि दो शानदार फिल्में करने और एक नेशनल अवॉर्ड जीतने के बाद भी उनके करियर में ऐसी रुकावट आएगी। शारिब ने एक बातचीत में कहा था कि द फैमिली मैन से उनके करियर को वो गति नहीं मिली, जिसके बारे में उन्होंने सोचा था। शारिब का कहना है, मुझे महसूस होता है कि मैं जहां था, वहां से एक लंबा रास्ता तय करके आया हूं और अभी काफी लंबी दूरी और तय करनी है। मुझे लगता है कि मैं इससे अधिक का हकदार हूं। मुझे वर्षों के संघर्ष के बाद फिल्म मिली, तब जब तक है जान में काम किया। मैंने सफलता का स्वाद चखा है। शारिब ने कहा कि जिन फिल्मो में वह काम कर रहे थे उनमें से कुछ शुरू ही नहीं हुई, वहीं कुछ आधे रास्ते पर बंद हो गईं।